माध्यमिक स्तरीय पाठ्यपुस्तक-एक

(गहन हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम)

निर्माण एवं संकलन

कीर्तिलता दत्त

शंभुनाथ पाण्डेय

संपादन

अमर बहादुर सिंह

केंद्रीय हिंदी संस्थान • आगरा

माध्यमिक स्तरीय पाठ्यपुस्तक–एक

(गहन हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम)

निर्माण एवं संकलन

कीर्तिलता दत्त

शंभुनाथ पाण्डेय

संपादन

अमर बहादुर सिंह

केंद्रीय हिंदी संस्थान • आगरा

प्रथम संस्करण : 1979

पुनर्मुद्रण : 1988

संयोजन निर्देशन

डॉ० न० वी० राजगोपालन (अप्रैल 76 तक)

डॉ० रमानाथ सहाय (मई 76-दिसम्बर 76 तक)

डॉ० अमर बहादुर सिंह (दिसम्बर 76 से)

मूल्य : रु० 21-00

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा—5 द्वारा प्रकाशित और नरेन्द्रा प्रिंटर्स, फ्रीगंज रोड, आगरा, द्वारा मुद्रित ।

आमुख

केंद्रीय हिंदी संस्थान द्‌वितीय भाषा के रूप में हिंदी के शिक्षण, शिक्षण-सामग्री निर्माण, शिक्षण-प्रणाली के विकास आदि की दृष्टि से हिंदी के संरचनात्मक तथा अन्य भाषाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में कार्य करता आ रहा है। संस्थान ने द्‌वितीय भाषा के रूप में हिंदी के पाठ्यक्रमों के लिए अनुस्तरित एवं बाल-मनोविज्ञान के अनुकूल सामग्री का निर्माण किया है, इतना ही नहीं प्रौढ़ों को भी हिंदी भाषा का ज्ञान प्राप्त कराने के लिए संस्थान ने पाठ्य-सामग्री का निर्माण कराया है, जिनमें सेवा माध्यम के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए निर्मित सामग्री मुख्य है।

इस पुस्तक की रचना मुख्यतया नागालैंड तथा मिज़ोउरम के छात्रों को दृष्टि में रखकर की गई है। इस पुस्तक के माध्यम से इन छात्रों को हिंदी के व्यावहारिक ज्ञान के साथ-साथ न केवल देश को बृहत्तर सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है, अपितु हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं से भी विद्‌यार्थियों को परिचित कराया गया है जिससे आगे चलकर वे आधुनिक हिंदी साहित्य को पढ़ने तथा समझने में किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव न कर सकें। इस पुस्तक का निर्माण संस्थान के अनुसंधान एवं सामग्री निर्माण विभाग ने किया है। पुस्तक को प्रकाशित कराने के पूर्व कई वर्षों तक कक्षाओं में प्रयोग करने के बाद जो अनुभव प्राप्त हुए उनका समावेश इस वर्तमान रूप में किया गया है।

आशा है यह पुस्तक अपने उद्‌देश्यों में सफल होगी।

(रमानाथ सहाय)
कार्यकारी निदेशक

भूमिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान ने विभिन्न स्तरों पर द्वितीय एवं विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की पाठ्य-सामग्री का निर्माण-कार्य कराया है। इन पाठ्य पुस्तकों के निर्माण में द्वितीय भाषाशिक्षण सैद्धांतिक पक्षों को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के भाषायी कौशलों और भाषा-व्यवहार-क्षमता को विकसित करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए तैयार की गई पाठ्य-पुस्तकों की श्रृंखला में अगली कड़ी है जिसका प्रयोग प्रारंभिक स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के पश्चात किया जाएगा। यह पाठ्य-पुस्तक संस्थान द्वारा संचालित गहन हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले नागालैंड एवं मिज़ोरम के प्रशिक्षणार्थियों को दृष्टि में रखकर तैयार की गई है। जिसमें नागालैंड एवं मिज़ोरम के क्षेत्रीय सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को अखिल-भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों से जोड़ने का प्रयास किया गया है। प्रारंभिक स्तर पर ये छात्र हिंदी के आधार-भूत वाक्य-सांचों, शब्दों तथा प्रयोगों से परिचित हो चुके हैं। माध्यमिक स्तर पर उन्हें विभिन्न संदर्भों में भाषा के व्यवहार एवं प्रयुक्तियों (REGISTER) से परिचित कराने की आवश्यकता है और इस आवश्यकता की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए माध्यमिक स्तरीय पुस्तक का निर्माण किया गया है।

इन पाठों की रचना और संपादन में यह उद्देश्य रहा है कि हिंदी भाषा का सहज-रूप से व्यवहार करने वाले समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं का कुछ परिचय देने के साथ-साथ विद्यार्थियों को हिंदी की मौलिक सृजनात्मक साहित्यक-शैली से भी परिचित कराया जाए ताकि आगे जाकर विद्यार्थी हिंदी-साहित्य के प्रतिष्ठित साहित्य-कारों की मौलिक रचनाओं को पढ़ने तथा विभिन्न भाषा-व्यवहार करने में सरलता अनुभव कर सकें। पुस्तक के विभिन्न पाठों के माध्यम से छात्रों को सामाजिक जीवन की विभिन्न स्थितियों से परिचित कराया गया है जिससे वे हिंदी भाषा के व्यवहार क्षेत्रों के विभिन्न आयामों से परिचित हो सकें और विभिन्न सामाजिक संदर्भों में हिंदी का प्रयोग कर सकें।

इस पुस्तक का प्रारूप 1973 में तैयार किया गया था और इसे साइक्लोस्टाइल्ड रूप में प्रयोग में लाया जाता रहा है। अध्यापन के अनुभव के आधार पर इस पुस्तक में आवश्यक परिवर्तन और परिवर्द्धन किए गए हैं। पुस्तक के प्रथम प्रारूप का निर्माण सामग्री निर्माण विभाग के तत्कालीन प्रोफेसर डॉ० न० बी० राजगोपालन की देख-रेख में किया गया था। इन पाठों के संकलन और निर्माण का कार्य, विभाग के रीडर डॉ० कीर्तिलता दत्त एवं डॉ० शंभुनाथ पाण्डेय ने किया है।

पुस्तक के अंत में सांस्कृतिक टिप्पणी, प्रश्न-अभ्यास, व्याकरणिक टिप्पणी और शब्दार्थ, शब्द-सूची अलग से दी गई है जिसका निर्माण विभाग के डॉ० कीर्तिलता दत्त, सर्वश्री सुधीर कुमार माथुर, अश्वनी कुमार, अरुण चतुर्वेदी एवं श्री शकुन्तला रेड्डी ने किया है। आशा है ये टिप्पणियाँ विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी और उन्हें हिंदी के बृहत्तर सांस्कृतिक-सामाजिक परिवेश से जोड़ने में सहायक होंगी।

अमर बहादुर सिंह
प्रोफेसर

अनुसंधान एवं सामग्री निर्माण विभाग

पाठ-सूची

पाठ 1

सोनामाटी

—कीर्ति चौधरी

एक स्वर

यह धरती की माटी, इससे
बड़ा प्यार है हमको ।
बचपन के दिन यहाँ बिताए
यहीं प्रीति के गीत सुनाए
अपनी माँ की गोदी पर
अधिकार बड़ा है हमको ।

दूसरा स्वर

यह जीवन बंधनहीन बहुत ही प्यारा ।
जैसे निर्झर के स्वर स्वतंत्र
जैसे माटी के कन स्वतंत्र
जैसे बादल के मन स्वतंत्र
जैसे पंछी के पर स्वतंत्र
यह जीवन बाधाहीन हमें अति प्यारा ।

पाठ 2

मंगली की कोठरी

—रामेश्वर दयाल दुबे

मुझे स्मरण नहीं कि मंगली ने मुझे कभी गोद में उठाकर खिलाया हो, परंतु इतना तो अच्छी तरह याद है कि मेरे बचपन का बहुत समय उसके आस-पास बीतता था। घर में जिस तरह पिताजी थे, माँ थीं, बड़े भाई थे, बहनें थीं, उसी तरह मंगली भी था।

कुछ बड़ा होने पर मैं रिश्ते समझने लगा। पिताजी पिता थे, माँ माँ, और भाई-बहन, भाई-बहन थे, पर मंगली कौन था, यह मैं न समझ सका। घर के काम वह करता ही था, घोड़ों के लिए घास भी ले आता था। बाहर की तरफ जो कोठरी थी उसी में वह रहता था। बड़ा सा लोटा, दो चार कपड़े, फटी दरी, मैला तकिया, टूटी-सी खाट—यही उसका सामान था।

दिन माह बनते रहे, माह वर्ष, और समय पंख लगाकर उड़ता रहा। मैं बी॰ ए॰ में पढ़ रहा था। दुनियाँ के व्यवहारों को समझने लगा था। मैंने जान लिया था कि मंगली एक नौकर था—पुराना नौकर, नौकर से कुछ अधिक। मालिक और नौकर के बीच में पैसा रहा करता है। मेरे घर और मंगली के बीच में भी पैसा था; किंतु उससे अधिक भी कुछ था। माँ उसे प्रेम से दोनों वक्त खिलाती थीं; मिर्च का अचार देना न भूलती थीं; क्योंकि मंगली को मिर्च का अचार बहुत अच्छा लगता था।

एक दिन घर में तूफ़ान आ गया। असावधानी में मंगली बैठक का एक दरवाजा

बंद करना भूल गया। कई बंदर घुस आए और उन्होंने पिताजी की फ़ाइलों को फाड़ा-फूड़ा। पिताजी को क्रोध आना स्वाभाविक था; लेकिन वे आवश्यकता से अधिक क्रोध में आ गए। मंगली को उन्होंने डाँटा-फटकारा ही नहीं, सीधा आर्डर दे दिया— "निकल जाओ मेरे घर से; मैं तुम्हें अब नहीं रख सकता। निकल जाओ, अभी निकल जाओ।"

मंगली बाहर चबूतरे पर बैठा था। उसने भी यह अनुभव किया था कि उससे गलती हो गयी है: पर इसमें घर से निकल जाने की क्या बात है? जब पिताजी ने उससे बार-बार कहा कि—' निकल जाओ, अभी निकल जाओ," तो मंगली को भी क्रोध आ गया। वह उठकर खड़ा हो गया और तैश में बोला—"तुम न निकल जाओ घर से, बड़े आए घर से निकालने वाले—निकल जाओ घर से।" और मंगली बड़बड़ाता रहा—"सारी जिन्दगी इस घर में बीती। मेरे सामने तुम्हारा ब्याह हुआ, मुन्ना-मुन्नीं पैदा हुए। उन्हें खिलाया वे बड़े हुए। अब कहते हो, घर से निकल जाओ; तुम न निकल जाओ घर से।"

पिताजी अवाक् रह गए। उनकी समझ में ही न आया कि क्या कहें, क्या करें? चुपके से अपनी बैठक में जा बैठे। इधर मंगली को कोई जल्दी न थी। कुछ सोचता हुआ वह अपने कमरे में गया। लोटा भर ठंडा पानी पिया और खाट पर लेट गया।

माँ को यह गृह कलह पसंद न आई। उन्होंने पिताजी से कहा– "तुमसे क्या कभी ग़लती नहीं होती? इतना क्रोध करने की क्या बात थी?" और फिर मंगली की कोठरी की तरफ गईं। आवाज़ दी—"दादू, (घर में मंगली को हम सब 'दादू' ही कहते थे) ज़रा छत पर तो जाओ, कपड़े सूख रहे हैं। बंदर आए हैं।"

"आया बहू जी" कहता मंगली घर में घुसा, जीने से ऊपर गया और बंदरों को भगाने लगा। वही पुराना ढंग; जैसे कुछ हुआ ही न हो।

मंगली आज संसार में नहीं है, पर हमारे घर की वह कोठरी जिसमें वह रहता था, आज भी 'मंगली की कोठरी' कहलाती है।

पाठ 3

काकी

—सियाराम शरण गुप्त

उस दिन बड़े सबेरे आँख खुलते ही श्यामू ने देखा कि घर में कुहराम मचा हुआ है। उसकी माँ नीचे से ऊपर तक सफेद कपड़ा ओढ़े ज़मीन पर लेटी हुई है। घर के सब लोग और पड़ोस की औरतें ज़ोर-ज़ोर से रो-चीख रही हैं।

लोग जब उसकी माँ की अर्थी श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया। वह माँ के ऊपर जा गिरा। कहने लगा—"काकी सो रही है, इसे इस तरह उठाकर कहाँ लिए जा रहे हो? मैं नहीं ले जाने दूँगा।"

लोगों ने उसे किसी प्रकार सँभाला। काकी के अग्नि संस्कार में उसे नहीं जाने दिया गया। एक पड़ोसिन ने बड़ी कठिनाई से उसे अपने पास रखा।

रोते-रोते श्यामू के आँसू तो सूख गए लेकिन दिल का घाव हरा बना रहा। वह उदास रहने लगा और एकांत-प्रिय बन गया।

एक दिन उसने आसमान में ऊँची उड़ती हुई एक पतंग देखी। न मालूम कौन-सा विचार उसके मन में आया कि वह पिता से कहने लगा, "काका, मुझे भी एक पतंग मँगा दो। अभी मँगा दो।" पत्नी की मृत्यु के बाद विश्वेश्वर बहुत अनमने रहने लगे थे। "अच्छा मँगा दूँगा" कहकर वे कहीं बाहर चले गए।

श्यामू पतंग के लिए व्याकुल था। वह अपनी इच्छा किसी तरह न रोक सका।

एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था। उसने कोट की जेब टटोली। एक चवन्नी निकालकर वह तुरंत वहाँ से भाग गया।

अपने दोस्त भोला से कह कर श्यामू ने चवन्नी की पतंग और डोर मँगाई। श्यामू ने धीरे से भोला से कहा, "भोला किसी से न कहो तो एक बात बताऊँ।" भोला ने स्वीकृति में सिर हिला कर कहा, "नहीं, मैं किसी से नहीं कहूँगा।" श्यामू ने रहस्य खोला, "मैं यह पतंग ऊपर भगवान के पास भेजूँगा। साथ में अपना नाम भी भेजना चाहता हूँ। मेरा नाम पढ़कर काकी पतंग की डोर के सहारे नीचे उतर आएगी।" भोला ने कहा, नाम जवाहर भैया से लिखा लो। नाम लिखा रहेगा तो पतंग काकी के पास ठीक से पहुँच जाएगी।"

बात पक्की हो गई। पतंग में डोरी बाँधी जाने लगी। नाम लिख गया। श्यामू प्रसन्न होकर अपनी पतंग उड़ाने के लिए छत पर जाने ही वाला था कि विश्वेश्वर अचानक आ गए। भोला और श्यामू को धमका कर वे बोले, "तुमने मेरे कोट की जेब से पैसे चुराए हैं?"

भोला एक ही डाँट में मुखबिर बन गया और बोला, श्यामू भैया ने पतंग और डोरी के लिए पैसे मुझे दिए थे।"

विश्वेश्वर ने श्यामू के गाल पर दो तमाचे जड़कर कहा, "चोरी सीखकर जेल जाएगा?" भोला कहता गया, "श्यामू भैया कहते थे, मैं पतंग भगवान के पास भेजकर काकी को वहाँ से अपने पास बुलाऊँगा।" विश्वेश्वर भोला की बात सुनकर हतबुद्धि हो गए। उन्होंने पतंग पर नजर डाली। उसके ऊपर लिखा था "काकी" और नीचे "श्यामू"।

पाठ 4

मौत का भय

—डा० श्रीधर मिश्र

एक था व्यापारी। वह बड़ा मेहनती था। रोजगार में उसे लाभ होता गया। उसने सोचा, अब विदेश जाकर व्यापार करूँ। एक दिन वह बहुत बड़े जहाज पर माल-असबाब लादकर व्यापार करने विदेश चला। वह जहाज़ पर बैठकर कभी नीले आकाश को देखता, कभी विशाल समुद्र को और मन ही मन सोचता जाता, इस यात्रा से मैं इतना धन कमाऊँगा कि मेरे नाती-पोतों को कोई रोज़गार-धंधा नहीं करना पड़ेगा।

इतने में जोरों की आँधी आई। जहाज डगमगाने लगा। व्यापारी घबड़ा गया। वह चिल्लाने लगा, "हाय जहाज़ उलट जाएगा, तो मैं मर जाऊँगा। मेरा सब माल पानी में डूब जाएगा।"

"शांत रहो।" मल्लाह ने कहा।

"इतनी आँधी है जहाज डगमगा रहा है और तुम कहते हो कि शांत रहो। तुम सब इससे डरते नहीं?" व्यापारी ने पूछा।

"हम क्यों डरें? हमारे बाप-दादे भी मल्लाह थे।" मल्लाह बोला।

"तुम्हारे बाप दादे कहाँ हैं?"

"सभी मर गए," मल्लाह ने उत्तर दिया।

"वे सब कहाँ मरे?" व्यापारी ने पूछा।

"सभी इसी समुद्र में मरे।"

"फिर भी तुम नहीं डरते। इसी समुद्र में जहाज़ चला रहे हो?" व्यापारी ने पूछा।

"सेठ जी, कृपया, यह बताएँ कि आप के बाप-दादे कहाँ मरे?" मल्लाह ने विनय के साथ पूछा।

"वे तो घर में मरे चारपाई पर।" व्यापारी ने कहा।

"तब क्या आप सब घर में नहीं रहते? चारपाई पर नहीं सोते?" मल्लाह ने पूछा।

मल्लाह की बात से व्यापारी बहुत प्रभावित हुआ। वह अब समझ गया कि मृत्यु कभी भी और कहीं भी हो सकती है। तब तक आँधी का वेग भी कम हो गया। मल्लाह जहाज़ को लेकर विदेश गए। व्यापारी वहाँ से अपार धन कमाकर देश लौट आया।

पाठ 5

मेरा धर्म और मेरा ईश्वर

—मोहनदास कर्मचन्द गांधी

विविध धर्म एक ही जगह पहुँचाने वाले अलग-अलग रास्ते हैं। एक ही जगह पहुँचने के लिए हम अलग-अलग रास्ते से चलें तो इसमें दुःख का कोई कारण नहीं है। सच पूछो तो जितने मनुष्य हैं उतने ही धर्म भी हैं।

हमें सब धर्मों के प्रति समता का भाव रखना चाहिए। इससे अपने धर्म के प्रति उदासीनता आती हो, ऐसी बात नहीं। बल्कि अपने धर्म पर जो प्रेम है उसकी अंधता मिट जाती है। इस तरह वह प्रेम ज्ञानमय और ज्यादा निर्मल बनता है।

मैं इस विश्वास से सहमत नहीं हूँ कि पृथ्वी पर एक धर्म हो सकता है या होगा इसलिए मैं विविध धर्मों में पाया जाने वाला तत्व खोजने की कोशिश कर रहा हूँ। इसके साथ मैं इस बात को पैदा करने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि विविध धर्मावलंबी एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता का भाव रखें।

मेरी सम्मति है कि संसार के धर्मग्रंथों को सहानुभूतिपूर्वक पढ़ना प्रत्येक सभ्य पुरुष और स्त्री का कर्तव्य है। अगर हमें दूसरे धर्मों का वैसा आदर करना है जैसा हम उनसे अपने धर्म का कराना चाहते हैं, तो संसार के सभी धर्मों का आदरपूर्वक अध्ययन करना हमारा एक पवित्र कर्म हो जाता है। दूसरे धर्मों के आदरपूर्ण अध्ययन से हिंदू धर्मग्रंथों के प्रति मेरी श्रद्धा कम नहीं हुई है। सच तो यह है कि उन्होंने मेरी जीवन-दृष्टि को विशाल बनाया है।

सत्य के अनेक रूप होते हैं, इस सिद्धांत को मैं बहुत पसंद करता हूँ। इसी सिद्धांत ने मुझे एक मुसलमान को उसके अपने दृष्टिकोण से और एक ईसाई को उसके स्वयं के दृष्टिकोण से समझना सिखाया है।

धर्म में भ्रातृ-भाव का उद्देश्य होना चाहिए। दूसरों के लिए ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना होनी चाहिए—"तू उन्हें वह सारा प्रकाश दे जिसकी उन्हें अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यकता है।"

पाठ 6

नया वर्ष

—सोहनलाल द्विवेदी

नया वर्ष आया, नया वर्ष आया।
नए कंठ ने फिर नया गीत गाया।

नई बन रही क्या धरा क्या गगन है,
नई बह रही आज शीतल पवन है,
नया आज तन है, नया आज मन है,

नया हास उल्लास सर्वत्र छाया।
नया वर्ष आया, नया वर्ष आया।

नई हैं उमंगें, नई भावनाएँ,
नई हैं तरंगें, नई कल्पनाएँ,
नई आज अपनी बनें साधनाएँ,

नए सूर्य ने है नया पथ दिखाया।
नया वर्ष आया, नया वर्ष आया।

नया ज्ञान-विज्ञान है हर दिशा में,
नया प्रात है हँस रहा हर निशा में,
नए रक्त की लालिमा हर उषा में,

नया रंग हर फूल ने है खिलाया ।
नया वर्ष आया, नया वर्ष आया ।

नए पंथ में तुम नए पग बढ़ाओ,
नए गीत गाओ, नई जीत लाओ,
नया आज इतिहास अपना बनाओ,

नया आज उत्साह उर में समाया ।
नया वर्ष आया, नया वर्ष आया ।

पाठ 7

ईदगाह

—मुंशी प्रेमचन्द

रमज़ान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। लड़के ज़्यादा प्रसन्न हैं और सबसे प्रसन्न है हामिद। सूरत से गरीब, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया था। फिर एक दिन माँ भी मर गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है।

हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, फिर भी वह प्रसन्न है। अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन है और उसके घर में दाना तक नहीं। इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही है।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सब के सब दौड़ कर आगे निकल जाते, फिर किसी पेड़ की छाया में खड़े होकर साथियों का इंतज़ार करते। हामिद के पैरों में जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है ?

नमाज़ ख़तम हो गई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। अब मिठाई और खिलौनों की दुकानों पर धावा होता है। बच्चे लकड़ी के हाथी, ऊँटों पर बैठकर पच्चीस चक्करों का आनन्द ले रहे हैं, किंतु हामिद के पास केवल तीन पैसे हैं। उन्हें वह ज़रा- सा चक्कर खाने में बर्बाद नहीं कर सकता। अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई

है । सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, बड़ी तोंद वाले सेठ और साधू, भिश्ती और धोबिन । महमूद सिपाही लेता है—खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला । मोहासिन को भिश्ती पसंद आया - कमर झुकी हुई और मशक रखे हुए । कितना प्रसन्न है ! हामिद के पास कुल तीस पैसे हैं, इतने मँहगे खिलौने कैसे ले ? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े तो चूर-चूर हो जाए । ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए ।

खिलौनों के बाद मिठाइयाँ आती हैं । किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब जामुन, किसी ने सोहन हलुवा । मज़े से खा रहे हैं । हामिद बिरादरी से बाहर है । बेचारे के पास तीस पैसे तो हैं । क्यों नहीं कुछ लेकर खा लेता ? ललचाई आँखो से सब की ओर देखता है ।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे और गिलट के बर्तनों की हैं । एक दूकान पर लोहे के बहुत से चिमटे रखे हैं । हामिद इस दूकान पर रुक जाता है । उसे ख्याल आया– दादी के पास चिमटा नहीं है । तवे से रोटियाँ उतारती है तो हाथ जल जाता है । अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे तो वह कितनी प्रसन्न होगी । फिर उसकी उँगलियाँ कभी नहीं जलेंगी । घर में एक काम की चीज हो जाएगी । खिलौनों से क्या फ़ायदा ?

अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसको गोद में उठाकर प्यार करने लगी । सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह बोली—

"यह चिमटा कहाँ से आया ?"

"मैंने मोल लिया है ।"

"कितने पैसे में ?"

"तीन पैसे में ।"

अमीना ने छाती पीट ली । यह कैसा नासमझ लड़का है कि दोपहर होने को आया, न कुछ खाया न पिया । लाया क्या ? चिमटा । सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह चिमटा उठा लाया हामिद ने अपराधी के स्वर में कहा, 'तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने ले लिया ।"

बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना को आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे। वह दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और उसकी आँखों से आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरती जाती थीं।

पाठ 8

नवोदित नागालैंड

नागालैंड के इतिहास में एक दिसंबर उन्नीस सौ तिरसठ का दिन एक गौरवशाली दिन है। कठिन संघर्ष के पश्चात् नागालैंड की जन-जातियों को इस दिन भारतीय संघ के अंतर्गत एक पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ है। पिछले दस वर्षों में, जो एक राज्य के जीवन में एक छोटी सी अवधि है, नागालैंड ने आशातीत उन्नति की है। राज्य में इतनी सुदृढ़ शांति और व्यवस्था पहले कभी भी स्थापित नहीं हुई थी। नागालैंड की विभिन्न जन-जातियाँ कंधे से कंधा मिलाकर शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और उद्योगों का विकास कर रही हैं।

नागालैंड का मुख्य व्यवसाय कृषि है, जिस पर अस्सी प्रतिशत जनता अपना गुज़ारा करती है। नागालैंड का जीवन आत्मनिर्वासन और परंपराओं का जीवन रहा है। किंतु जनता के चुने हुए प्रतिनिधि अब आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। नागालैंड की कुछ जनजातियों में गणतंत्रात्मक प्रणाली पहले से प्रचलित थी। इसलिए उसे नए राज्य के रूप में अपने पैरों पर खड़े होने में किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। 1969 में विधान सभा का चुनाव पूर्ण शांति और उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ। इसी वर्ष भारतवर्ष की चौथी पंचवर्षीय योजना नागालैंड में लागू हुई। नागाओं ने यह अनुभव किया कि भारतवर्ष की आर्थिक और तकनीकी सहायता के बिना वे अपना विकास न कर सकेंगे। इसलिए उन्होंने केंद्र द्वारा प्रचलित योजनाओं को उत्साहपूर्वक स्वीकार किया और अपने मंत्रि-मंडल के द्वारा उन्हें कार्यान्वित करना प्रारंभ किया।

नागालैंड में कृषि की पुरानी पद्धति प्रचलित थी जिसे 'झुम' कहते हैं । इस पद्धति में जंगल को काटकर खेती की भूमि तैयार की जाती थी और एक फसल उगाने के पश्चात् उसे छोड़ दिया जाता था । परिणाम यह होता था कि राज्य की वन-संपत्ति धीरे-धीरे नष्ट हो रही थी । परंतु अब सरकार किसानों को स्थाई खेती की ओर आकृष्ट कर रही है । राज्य के प्रमुख कृषि केन्द्रों और सरकारी फार्मों में नए तरीके की खेती के प्रदर्शन किए जा रहे हैं, साथ ही रासायनिक खाद का उपयोग और अच्छी किस्म के बीज भी किसानों को दिए जा रहे हैं । खेती के अतिरिक्त बागवानी के लिए अन्वेषण केंद्र खोले जा रहे हैं ।

नागालैंड का प्रत्येक परिवार मिथुन, सुअर, बकरी और मुर्गी पालता है । माँस उनका मुख्य भोजन है। अब दूध और घी का प्रयोग भी बढ़ने लगा हैं। अच्छी नस्ल के पशु और पालतू पक्षी पालने के लिए और उन्हें स्वस्थ रखने के लिए सरकार ने सभी प्रमुख शहरों में पशु-चिकित्सा केन्द्र खोल दिए हैं । किसानों को पशु-पालन की शिक्षा देने के लिए विशेषज्ञ गाँव में जाते हैं और किसानों की समस्याओं को सुलझाते हैं ।

नए तरीके के बूचड़खाने खोले जा रहे हैं। खाल से अच्छी किस्म का चमड़ा बनाने और हड्डियों, मुर्गी के पंख आदि का औद्योगिक उपयोग करने के लिए भी केंद्र खोले जा रहे हैं।

बहुत सी पक्की सड़कें और झूले वाले पुल बन चुके हैं तथा और बनाए जा रहे हैं । इससे यातायात सुगम हो गया है । इसी प्रकार पीने के पानी की समस्या को भी सुलझाया जा रहा है ।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्र तथा युवक क्लब भी खोले जा रहे हैं जहाँ समाचार-पत्र, मासिक पत्रिकाएँ तथा विविध विषयों की पुस्तकें पढ़ने को मिलती हैं । उद्योग के क्षेत्र में जो योजनाएँ चल रही हैं उनमें प्रमुख हैं मोकोक्चुंग जिले में कागज़ बनाने तथा गन्ना पेरने के कारखाने । इसी प्रकार कोहिमा और मोकोक्चुंग जिलों में अंडी रेशम बनाने के बहुत से केन्द्र खोले गए हैं । प्रायः सभी बड़े-बड़े कस्बों में बिजली पहुँच चुकी है । इस

प्रकार नवोदित नागालैंड राज्य जनतंत्रात्मक पद्धति से विकास और आत्म-निर्भरता के मार्ग पर अपने मजबूत कदम बढ़ा रहा है। वह दिन दूर नहीं है जब देश के विकसित राज्यों में वह अपना सम्मानपूर्ण स्थान ग्रहण करेगा। भारत की सामासिक संस्कृति के विकास में भी नागालैंड का योगदान अनुपम होगा। प्रकृति ने जिस रक्त को साहस, वीरता, स्वाभिमान तथा स्वावलंबन प्रदान किया है वह देश की धमनियों में अवश्य ही नए उत्साह का संचार करेगा।

पाठ 9

देश-विदेश की होली

—श्री कृष्ण

अपने देश की गुलाल, अबीर और रंग में भीगी होली तो हम हर वर्ष खेलते ही हैं। आओ, अब जरा बिना रंग की होली भी देखने चलें। बिना रंग की यह होली हमारे पड़ोसी देश बर्मा में खेली जाती है और इसे वहाँ की भाषा में 'तिंजान' के नाम से जाना जाता है। तिंजान बर्मा का सबसे बड़ा राष्ट्रीय त्योहार है और प्रतिवर्ष अप्रैल में तीन दिन तक बड़ी उमंग और मस्ती के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर घरों के बाहर पानी इकट्ठा करने के लिए सीमेंट के हौज बनवाए जाते हैं। इन दिनों के लिए बैलगाड़ियों, ट्रकों और मोटर ठेलों का भी विशेष प्रबंध किया जाता है। मोटर-ठेलों पर पानी से भरे विशाल ड्रम रखे जाते हैं। ड्रमों की शक्लें भी विचित्र होती हैं। कोई-कोई ड्राम देखने में बिल्कुल तोप जान पड़ता है। किसी-किसी ठेले में तो पिचकारियाँ लगी होती हैं, जो बन्दूकों की शक्ल की होती हैं। इस महान् पर्व के लिए जुटाए गए पानी में सुगंध का भी मिश्रण किया जाता है, लेकिन रंग कोई नहीं मिलाया जाता।

अमेरिका की कालेरेडो यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राओं की कीचड़-गोबर सनी होली को 'मेडफ़ो' कहते हैं। इस दिन यूनिवर्सिटी के छात्र-छात्राओं का हुड़दंग देखते ही बनता है। वे सब पास के नदी तट पर जाते हैं जहाँ पहले से ही कीचड़ गोबर से बनी गेंदें तैयार रखी हुई होती हैं। वे एक-दूसरे को इन गेंदों से इस तरह रंग देते हैं कि पहचानना तक मुश्किल हो जाता है।

रोम में होली का त्योहार 'रेडिका' के नाम से जाना जाता है और प्रतिवर्ष फरवरी माह में एक सप्ताह तक मनाया जाता है। इस उत्सव में लोग बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। एक रथ में 'कार्निवाल' की प्रतिमा का जुलूस निकाला जाता है। रथ के चारों ओर धक्कम-धक्का करती हुई भीड़ आगे बढ़ती है। निश्चित स्थान पर पहुँचकर थोड़े समय के लिए लोगों में नकली लड़ाई होती है। फिर लकड़ियों की चिता सजाकर कार्निवाल की प्रतिमा जला दी जाती है।

जर्मनी में ईस्टर के दिन घास-फूस का एक पुतला बनाकर आग में जलाया जाता है। इसके बाद लोग एक-दूसरे के कपड़ों पर ठप्पे लगाकर मनोविनोद करते हैं।

फ्रांस और बेल्जियम में होली को 'मूर्खों का त्योहार' कहते हैं। जो भी व्यक्ति इसके हुड़दंग से बचने की कोशिश करता है, उसका मुँह काला करके और सिर पर सींग लगाकर उसे गधा बनाया जाता है।

अफ्रीका में होली को 'ओमेना-बोंगा' कहते हैं। बोंगा अफ्रीका के प्राचीन ग्रंथों में वर्णित वहाँ का एक अत्याचारी राजा था जिसे लोगों ने जला डाला था। तब से सभी लोग मिलकर प्रतिवर्ष उस राजा का पुतला जलाते हैं।

पाठ 10

ये विचित्र विद्या व्यसनी

—दुर्गाप्रसाद नौटियाल

दुनियाँ में समय-समय पर बड़ी विचित्र तरह के विद्वान हुए हैं, जो लाखों मुसीबतें सहकर भी पढ़ाई-लिखाई और किताबों के पीछे लगे रहे।

अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति रूज़वेल्ट विलक्षण पुस्तक प्रेमी थे। राष्ट्रपति बनने के बाद अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण उनके लिए इस शौक को निभाना कुछ कठिन हो गया। रूज़वेल्ट दोपहर के भोजन से पहले पाँच-पाँच मिनट का समय मिलने वालों को दिया करते थे। मिलने वालों का ताँता लगा रहता था। रूज़वेल्ट इस समय अपने साथ कोई न कोई पुस्तक रखा करते थे। एक व्यक्ति से मिलने के बाद जब तक दूसरा व्यक्ति उपस्थिति होता, तब तक रूज़वेल्ट पुस्तक में से थोड़ा सा अंश पढ़ लिया करते।

अमेरिका के ही सोलहवें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन गरीब परिवार में पैदा हुए थे, लेकिन पढ़ने में उनकी बेहद रुचि थी। पड़ोसियों से माँगकर पुस्तकें पढ़ा करते थे। गरीबी इस कदर छाई हुई थी कि रात को उनके घर में दीपक नहीं जलता था। फिर रात को कैसे पढ़ते ? वे रात को लैंपपोस्ट के नीचे किताब लेकर बैठ जाते और बहुत रात तक पढ़ते रहते।

पंजाब के भूतपूर्व मुख्य मंत्री स्व० प्रतापसिंह कैरो पढ़ने के लिए अमेरिका गए

लेकिन वहाँ की पढ़ाई का खर्च उनके पिता के बूते से बाहर था। लेकिन कैरो पीछे हटने वाले नहीं थे। उन्होंने खाली समय में कोई काम करके पढ़ाई का खर्च अपने आप उठाने का फैसला किया। काफ़ी तलाश करने के बाद आखिर उन्हें काम मिल गया—पेड़ों से फल तोड़ने का। वे फल तोड़ते समय डिक्शनरी से एक कागज में नोट किए हुए शब्द रटते जाते। इस प्रकार उन्होंने कुछ ही समय में हजारों शब्द याद कर डाले।

इसी प्रकार चीन में संचिग नामक एक विद्वान हुए हैं। वे अव्वलदर्जे के किताबी कीड़े समझे जाते थे। जीवन का प्रत्येक क्षण वह अध्ययन में बिताना ही अच्छा समझते थे। किंतु नींद के आगे संचिग को भी हार माननी पड़ती थी। इसलिए जब कभी वे पढ़ने के लिए बैठते, तो अपनी चुटिया एक मजबूत रस्सी द्वारा छत के निचले भाग में गड़ी कील से कसकर बाँध दिया करते थे। जैसे ही संचिग को झपकी आने लगती, चोटी खिंच जाती थी। इसमे वे तुरंत जाग जाते।

पाठ 11

हमारी संसद

राष्ट्र के सभी महत्वपूर्ण फ़ैसले हमारी संसद करती है। यह देश का भाग्य बनाने वाली संस्था है। संसद हमारे देश का हृदय है। संसद-भवन राजधानी दिल्ली में है। यह बादामी रंग के पत्थरों से बनी हुई विशाल इमारत है। संसद-भवन के पास ही केन्द्रीय सचिवालय और राष्ट्रपति भवन है।

देश की जनतांत्रिक शासन प्रणाली में संसद की सत्ता सर्वोपरि है। जनता के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि संसद के सदस्य होते हैं। इन का निर्वाचन मतदान के द्वारा होता है। देश के सभी वयस्क नागरिकों का यह परम कर्तव्य है कि वे मतदान के अधिकार का प्रयोग करें। वे ऐसे व्यक्ति को अपना 'वोट' दें जो देश की सच्चाई और ईमानदारी से सेवा कर सके। जब तक हमारे प्रतिनिधि सच्चे, ईमानदार, कार्यकुशल और निर्भीक नहीं होंगे तब तक देश भी उन्नति नहीं कर सकेगा।

हमारा राष्ट्र एक गणतंत्रात्मक प्रजातंत्र है। देश के प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार है। संघ शासन में प्रत्येक सदस्य-राज्य का समान अधिकार है। यद्यपि आधुनिक भारत ने गणतंत्रात्मक प्रणाली बहुत कुछ इंगलैंड और अमेरिका जैसे देशों के संविधान के आधार पर अपनाई है किंतु भारत के लिए यह सर्वथा नवीन चीज नहीं है। प्राचीन भारत में ऐसे गणतंत्र थे जो अपना शासन जनतांत्रिक प्रणाली से चलाते थे। वहाँ चुने हुए लोगों की एक प्रबंध समिति होती थी जो गांव का शासन करती थी। ससद में भी एक मंत्रि-मंडल होता है जो देश का शासन करता है।

संसद में दो सदन हैं—लोक सभा तथा राज्य सभा। लोक सभा के सदस्यों का चुनाव सीधे जनता के द्वारा होता है। इनकी संख्या 530 है। राज्य सभा के अधिकांश सदस्यों का चुनाव राज्य की विधान सभाओं के द्वारा होता है। 12 सदस्यों को राष्ट्रपति मनोनीत करते हैं राज्य सभा के सदस्यों की अधिकतम संख्या 250 है। लोक सभा में जिस राजनीतिक दल का बहुमत होता है, उस दल का नेता प्रधानमंत्री बनाया जाता है तथा प्रधानमंत्री के परामर्श से शेष मंत्रिमंडल का गठन होता है। संसदीय शासन प्रणाली में मंत्रिमंडल संसद के प्रति उत्तरदायी होता है। आजकल श्री मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री हैं तथा जनता पार्टी का मंत्रिमंडल है।

जनता पार्टी के सदस्यों को छोड़कर अन्य सभी सदस्य विरोधी दल के सदस्य हैं। लोक सभा के सदस्य अपने आप में से एक सदस्य को अध्यक्ष पद पर निर्वाचित करते हैं, किंतु राज्य सभा का अध्यक्ष हमेशा उपराष्ट्रपति होता है। मंत्रि-मंडल का समर्थन करने वालें सदस्य अध्यक्ष की दाहिनी ओर बैठते हैं तथा विरोधी दल के सदस्य उनकी बाँई ओर। सदन के कार्य-संचालन का उत्तरदायित्व अध्यक्ष पर है। उसके आदेश और निर्णय सदन के सभी सदस्यों को मान्य होते हैं।

संसद का कार्य 11 बजे प्रारम्भ होता है। प्रारंभ का एक घंटा प्रायः प्रश्न पूछने के लिए निर्धारित रहता है। संसद की स्वीकृति के बिना सरकार कोई कर नहीं लगा सकती। 'ध्यानाकर्षण प्रस्ताव' तथा 'कामरोको प्रस्ताव' के द्वारा विरोधी दल मंत्रि-मंडल पर अपना अंकुश रखते हैं। वे मंत्रिमंडल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव भी ला सकते हैं। वे देश की गंभीर समस्याओं के प्रति शासन का ध्यान सदा खींचते रहते हैं।

पाठ 12

वसंती हवा (संपादित)

—केदारनाथ अग्रवाल

हवा हूँ, हवा मैं
वसंती हवा हूँ।

सुनो बात मेरी–
अनोखी हवा हूँ,
बड़ी बावली हूँ,
बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फिकर है,
बड़ी ही निडर हूँ।
मुसाफिर अजब हूँ।

न घर-बार मेरा,
न उद्‌देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की,
न आशा किसी की,
न प्रेमी, न दुश्मन,
जिधर चाहती हूँ
उधर घूमती हूँ।
हवा हूँ, हवा मैं
वसंती हवा हूँ।

जहाँ से चली मैं,
जहाँ को गई मैं।
शहर, गाँव, बस्ती,
नदी, रेत, निर्जन,
हरा खेत पोखर
झुलाती चली मैं।
झुमाती चली मैं।
हवा हूँ, हवा मैं
वसंती हवा हूँ।

हँसी जोर से मैं
हँसी सब दिशाएँ,
हँसे लहलहाते
हरे खेत सारे,
हँसी चमचमाती
भरी धूप प्यारी,
वसंती हवा मैं
हँसी सृष्टि सारी :
हवा हूँ, हवा मैं
वसंती हवा हूँ।

पाठ 13

मिज़ोउरम

जनवरी उन्नीस सौ बहत्तर में भारतीय संसद ने एक कानून बनाकर मिज़ोउरम क्षेत्र को केंद्र शासित क्षेत्र बना दिया। इक्कीस हज़ार सरसठ वर्ग कि० मी० (डायरेक्टरी एंड येअर बुक 1974-75 के अनुसार) के क्षेत्र में फैला हुआ मिज़ोउरम गहरी घाटियों और पहांड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियों से भरा पड़ा है। इसकी आबादी तीन लाख छत्तीस हज़ार तीन सौ नब्बे (डायरेक्टरी एंड येअर बुक 1974-75 के अनुसार) है।

केंद्र शासित क्षेत्र बनने से पहले इस क्षेत्र में बहुत बड़ी उलट-पुलट हुई, जिसने प्राकृतिक दृष्टि से बहुत सुंदर लगने वाले इस क्षेत्र के कोने-कोने को हिला कर रख दिया। जीभ की तरह दिखने वाला मिज़ोउरम पहले असम प्रदेश के दक्षिणी भाग का सबसे आखिरी जिला था। मिज़ोउरम को अठारह सौ चालीस से ही उतार-चढ़ाव देखने पड़ रहे हैं। मिज़ोउरम के सौभाग्य और दुर्भाग्य को समझने से पहले यह जानना जरूरी है कि इस क्षेत्र में रहने वाले मूल रूप से कौन हैं, कहाँ के रहने वाले हैं?

मिज़ो बीच के कद वाले खूबसूरत लोग हैं। इनका रंग कुछ पीला होता है और लक्षण ठीक वैसे जैसे बर्मा से मिली हुई पहाड़ियों पर रहने वाली जाति के लोगों के। आदमी बड़े हट्टे-कट्टे होते हैं तथा औरतें बहुत सुंदर। इस क्षेत्र के निवासियों का मुख्य धंधा खेती है।

कहा जाता है कि किसी समय मिज़ो लोग बर्मा के जंगलों में रहा करते थे। सन् अठारह सौ के आस-पास ये लोग ज्यादा पैदावार के लिए अच्छी उपजाऊ जमीन की खोज में असम प्रदेश में आ गए। कुछ मिज़ो लोगों का कहना है कि वे पहले चीन की दीवार के पास स्थिति किसी क्षेत्र में रहते थे, लेकिन इतिहास के विद्वानों ने अभी तक इस बात को सही नहीं माना है। मिज़ो और चीनी लोगों में कोई समानता दिखाई

नहीं देती। यदि वास्तव में मिज़ो चीन के आसपास के रहने वाले होते तो उनकी संस्कृति में चीनी संस्कृति के कुछ अंश जरूर होने चाहिए थे। इसलिए माना जा सकता है कि मिज़ो जाति बर्मा से ही आई। इस बारे में हमें बहुत से प्रमाण भी मिलते हैं। मिज़ो सभ्यता और भाषा बर्मा की कुकी चिन और चिन जातियों के लोगों की सभ्यता और भाषा से बहुत मिलती है।

सन् अठारह सौ तीस या चालीस में मिज़ो लोगों ने असम के कछार जिले के निवासियों के साथ व्यापार शुरू कर दिया। कछार जिले के व्यापारियों से चावल लेकर ये लोग बदले में उन व्यापारियों को बाँस, बेंत और जंगल में पैदा होने वाली और बहुत सी चीजें देने लगे। मिज़ो पहाड़ियों में रहने वाले लोग बड़े सीधे-सादे होते हैं। वे धोखा-धड़ी पसंद नहीं करते। मैदान में रहने वाले व्यापारियों के धोखा देने पर मिज़ो लोग लूटपाट भी करते थे।

सन् अठारह सौ नब्बे में वर्तमान मिज़ोउरम क्षेत्र दो हिस्सों में बाँट दिया गया। उत्तरी भाग, जिसका मुख्यालय ऐज़ल में है, असम राज्य में जोड़ दिया गया। दक्षिणी भाग बंगाल के साथ चला गया। इस तरह ऐज़ल और लुंगलेह जिलों में उत्तर और दक्षिण के दो महत्वपूर्ण शासकीय केंद्र बन गए। लेकिन बँटवारे की वजह से कई परेशानियाँ पैदा हो गईं। इसके बाद पूरा क्षेत्र कभी भी शांत नहीं हो पाया।

सन् अठारह सौ अट्ठानवे में मिज़ोउरम के भाग्य ने पलटा खाया। फलस्वरूप इस क्षेत्र को असम के साथ मिला दिया गया। इससे जिले का शासन चलाने में बहुत आसानी हो गई।

भारतीय संविधान में मिज़ो क्षेत्र को कुछ मामलों में स्वायत्तता दी गई। संविधान में की गई व्यवस्था के अनुसार ही जिले में जिला परिषद् का गठन हुआ और ग्राम पंचायतें बनाई गईं।

मिज़ोउरम के निर्माण के बाद मिज़ो यूनियन की माँग बहुत हद तक पूरी हो गई है। पिछले दिनों मिज़ोउरम की जनता ने मिज़ो यूनियन में अपना गहरा विश्वास व्यक्त किया है। हमें आशा है कि इस राजनीतिक पुनर्गठन के बाद मिज़ो लोग अधिक तत्परता के साथ देश के पुनर्निर्माण में हमारे साथ होंगे।

पाठ 14

अकबर बादशाह की जेब कट गई

अचानक रात के सन्नाटे में बादशाह अकबर चीख उठे—

'बीरबल"

बीरबल हाँफते हुए बादशाह के कमरे में दाखिल हुए। माथे का पसीना पोंछते हुए बादशाह बोले—"बीरबल, मैं कितनी बार कह चुका हूँ कि मेरा मन अब यहाँ स्वर्ग में नहीं लग रहा है। मुझे अक्सर बुरे और डरावने सपने आते रहते हैं। मैं अब यहाँ नहीं रहना चाहता। मुझे अपने प्यारे हिंदुस्तान ले चलो। पूरे तीन सौ सत्तर सा हो रहे हैं मुझे हिंदुस्तान छोड़े हुए ......"

बीरबल ने दिलासा देते हुए कहा—"आलमपनाह आप इतना न घबराएँ। यहाँ स्वर्ग में भी आपके लिए कितना अच्छा इंतज़ाम किया गया है। महल के चारों तरफ पहरा रहता है। आपका बाल भी बाँका नहीं हो सकता। आप ..."

बादशाह बीच में ही बोल पड़े—"बीरबल, मेरा बाल बाँका हो या न हो मुझे तुम हिंदुस्तान ले चलो। मैं अभी, इसी वक्त, हिंदुस्तान चलना चाहता हूँ। मैं जाकर अपनी प्रजा से मिलूँगा।"

बादशाह सलामत की ऐसी कड़कती आवाज सुनकर बीरबल की कुछ न चली। उन्होंने पता लगाया और जल्दी ही वापस आकर अकबर से बोले—"हुज़ूर काम बन गया। स्वर्ग से इंद्र का हाथी ऐरावत पृथ्वीलोक जा रहा है। आप तुरंत चलें। स्वर्ग की ऐसी शाही सवारी बहुत कम लोगों को नसीब हो पाती है।"

तैयारी क्या करनी थी। बादशाह ने अपनी अचकन डाटी, पगड़ी सिर पर रखी और हिंदुस्तान में खर्च के लिए अशर्फियाँ जेब में डालकर चल पड़े। जैसे-जैसे हाथी

जमीन के नज़दीक आने लगा, बीरबल ने दूरबीन लगाकर रनिंग कमेंट्री देना शुरू कर दिया—

"वह रहा हिंदुस्तान, वह है दिल्ली और वह रहा फतेहपुर सीकरी·······अरे बिल्कुल आगरे के नज़दीक आ गए।"

आगरे का नाम सुनकर बादशाह की आँख भर आईं। बोले, "कितने बरसों बाद अपने आगरा को देख पाया।"

ऐरावत ने बादशाह और बीरबल को ठीक किले के फाटक के सामने उतार दिया। अब हाल यह है कि बीरबल और बादशाह अकबर आगरे के किले के सामने खड़े हैं और चारों तरफ देख रहे हैं। मगर उन्हें देखने वाला कोई एक पुतला तक नहीं। बादशाह को यह बात बहुत बुरी लगी। कम से कम कुछ लोग तो जय जयकार करते। बादशाह को पहला धक्का लगा। उन्होंने बीरबल से कहा, "बीरबल यहाँ खड़े होने से बेहतर है कि हम लोग किले के अंदर चलें। हमने दीवाने खास बनवाया था, वह अभी तक हमारे लिए खाली होगा।"

"होगा तो हुज़ूर, लेकिन अब किले के अंदर आप ऐसे नहीं जा सकते, आपको टिकट लेना पड़ेगा और टिकट किले का फाटक खुलने पर ही मिलेगा।" बीरबल ने कहा।

बादशाह बहुत नाराज हुए। बोले—"बीरबल, मेरा ही किला, और मैं ही उसमें घुसने के लिए टिकट लूँ? तुम पहरेदारों को बताते क्यों नहीं कि मैं शाहंशाह अकबर हूँ?

"हुज़ूर अगर आपने अपने को शाहंशाह बताया तो आपको आगरे का सबसे बड़ा पागल समझा जाएगा। आलमपनाह, यहाँ इस तरह की बातें करने वालों के लिए एक बहुत मशहूर पागलखाना बनवाया गया है। आगरे को लोग अब उसके कारण ज़्यादा जानने लगे हैं।" बीरबल मुस्कराए।

तभी एक लड़का अखबार हिलाता, चिल्लाता हुआ पास से गुजरा – "आज की ताजा खबर, पढ़िए अमर उजाला की ताजा खबर।" बादशाह चौंके। बीरबल की आँखों में आँखें डालकर बोले "यह 'अमर उजाला' क्या बला है? मुनादी वाले कहाँ चले गए?"

"सरकार, अब हिंदुस्तान बड़ी तरक्की कर गया है। अब मुनादी नहीं होती, खबरों के लिए अखबार निकलता है। आइये हुजूर यमुना की सैर कर आएँ। यमुना आपको बहुत प्यारी लगती थी।"

यमुना के नाम से बादशाह की आँखें खिल गईं और वे उस तरफ चल पड़े। थोड़ा आगे चले तो उनके पैर दर्द करने लगे। पैदल चलना मुश्किल हो गया। बीरबल ने एक रिक्शा देखकर उसे आवाज़ लगाई लेकिन रिक्शेवाला रुका नहीं, चलते हुए ही बोला, "स्टेशन चलना हो तो चलो। गाड़ी का टाइम हो रहा है।"

बादशाह को बहुत ही बुरा लगा। बोले, "बीरबल, यह कैसा जमाना है कि मुसाफिर से रिक्शे वाला कहता है कि 'वहाँ चलो'। जहाँ सवारी को जाना है वहाँ नहीं जाएंगे।"

अकबर बादशाह पैदल ही चलते रहे। सामने देखा तो दूर पर एक आलीशान सफ़ेद-सफ़ेद इमारत शान से खड़ी थी। उन्होंने पूछा—"यह जमुना के किनारे क्या बना दिया गया है ?"

बीरबल ने तपाक से पास की चाय की दुकान वाले से पूछा– "भाई यह कौन सी इमारत है जो सामने दिख रही है ?"

चाय वाला ऐसे हँसा जैसे बीरबल के बराबर मूर्ख दुनियाँ में कोई नहीं। बोला— "तुम्हें पता नहीं कि यह ताजमहल है जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था ?"

तभी एक भिखारी अकबर बादशाह की अचकन को छूकर बोला, "सरकार को अल्लाह सलामत रखे। भिखमँगे को कुछ मिल जाए।"

बादशाह ने बीरबल की तरफ देखा और इशारे से पूछा कि क्या इसने हमें पहचान लिया। बीरबल ने बादशाह को इशारे में ही बताया कि यह लोग हर किसी को सरकार ओर बादशाह कहते हैं। बादशाह को उस पर बड़ी दया आ रही थी। उन्होंने अपनी जेब से निकाल कर मुट्ठी भर अशर्फियाँ उसे दे दीं। उसने बादशाह को दुआएँ दीं और वह चला गया।

बादशाह बोले—"बीरबल, शहर में जितने भी भिखमँगे मिलें, उन्हें दस-दस अशर्फियाँ दे देना।"

यह कह कर उन्होंने फौरन जेब में हाथ डाला तो हाथ अंदर ही धँसता चला गया । बादशाह की आँखें आश्चर्य से फटी रह गईं । उनकी जेब कट चुकी थी ।

बादशाह का पारा चढ़ गया । बोले—"बीरबल, यह क्या बदतमीजी है ? मेरी जेब किसने काटी ? फ़ौरन पता लगाओ ।"

बीरबल के भी होश उड़ गए । वे दौड़े-दौड़े कोतवाली गए । दो तीन घंटे बाद हाँफते हुए लौटकर बोले—"हुज़ूर, पता चल गया । पाकेटमार का पता चल गया । उसी भिखमँगे के हाथ का कमाल था सरकार । मैंने पुलिस की मदद से उसे जा पकड़ा । देखा तो वह पड़ा सो रहा था ।"

"सो रहा था" ? बादशाह का गुस्सा ताज्जुब में बदल गया । 'जेब काटकर वह सो रहा था--सरेआम ! बीरबल मैं यहाँ एक मिनट भी ठहरना नहीं चाहता । मैं इसी वक्त आगरा छोड़ देना चाहता हूँ ।" बीरबल ने बादशाह को शांत करने की कोशिश की और कहा--"सरकार अब तो रकम वापस मिल चुकी है । आए हैं तो दो-चार दिन रह कर देख लेते हैं ।" लेकिन अकबर ने एक न मानी । वे चल पड़े । बीच-बीच में ताज्जुब से बड़बड़ाते जाते थे—"कमाल है, जेब काटकर सरेआम सो रहा है ! कोई डर नहीं !"

पाठ 15

फूफा बराती

—प्रमोद शंकर भट्ट

चौधरी हरसुख के पास न खेत थे न खलिहान और न कोई जायदाद, बस पुरखों का एक घर था । कामकाज वह कुछ करता नहीं था । हाँ मूछों पर ताव हरदम देता रहता । घर भर को पत्नी की मेहनत से किसी तरह से रोटी मिल जाती थी । पत्नी का नाम था हिरिया । उनके एक ही बेटी थी धन्नो, जो अब ब्याहने योग्य हो चली थी ।

एक दिन की बात है । हिरिया घर में उदास बैठी थी । चौधरी खाना खाने आया, तो उसे उदास देखकर बोला कि "धन्नो की माँ, क्या बात है, मुँह फुलाए क्यों बैठी हो ?"

इस पर हिरिया ने सिर उठाकर चौधरी की तरफ देखा और बोली, "अपनी बेटी धन्नो की शादी ऐसी शान से करूँगा कि सारे गाँव वाले देखते रह जाएँगे ।"

"अरे, मेरे भाग्य में वह दिन कहाँ ? बरसों से तुम्हारी बातें सुनती आ रही हूँ । खाने को दो वक्त की रोटी तक का तो ठिकाना नहीं है और कह रहे हैं, शान से धन्नो की शादी करेंगे । चलो, तुम खाना खाओ और लंबी तानकर सोओ ।"

लेकिन चौधरी हरसुख लंबी तान कर नहीं सोया । दूसरे दिन वह बहुत तड़के उठा और गांव के जमींदार से उसकी सफेद घोड़ी माँग लाया ।

अब चौधरी धोबी के यहाँ पहुँचा और बोला, " ओ तिरखा के बच्चे, जरा एक जोड़ी बढ़िया कपड़े तो दे—पगड़ी, अचकन, पायजामा । कल शाम तक वापस कर दूँगा ।"

तिरखा धोबी ने एक जोड़ी कपड़े चौधरी को दे दिए ।

कपड़े पहनकर, घोड़ी पर चढ़कर, एक रुपया जेब में डालकर चौधरी अपनी लड़की के लिए लड़के की तलाश में चल पड़ा । दोपहर के बाद एक गाँव के निकट पहुँचा । एक बड़े खेत के किनारे एक ट्रैक्टर खड़ा था और बेंत की कुर्सियों पर खेत के मालिक और दूसरे लोग बैठे हुक्का पी रहे थे । चौधरी हरसुख ने पूछा, "अरे भाई, यह कौन सा गाँव है ? कौन हैं यहाँ के ज़मींदार ?"

एक किसान ने उठकर चौधरी की घोड़ी की रास पकड़ी और कहा—"जी यह भगवानपुर है । आप चौधरी रसूलसिंह हैं । यही गाँव के जमींदार हैं ।

चौधरी घोड़ी से उतरा । अपने गाँव का नाम पता बताया ।

चौधरी रसूलसिंह ने उसकी बड़ी आवभगत की । इधर-उधर की बातें होनें लगीं तभी एक किसान ने चौधरी हरसुख से इधर आने का कारण पूछा ।

"अरे भाई, यों ही, लड़की के लिए लड़के की तलाश में निकला हूँ ।"

इस पर वह किसान बोला, "चौधरी साहब, अपने जमींदार साहब का एक ही लड़का है वह देखो, सामने से आ रहा है । बी० ए० में पढ़ता है ।"

चौधरी ने तपाक से कहा, "जमींदार साहब आपका लड़का हमें पसंद है, पर पहले आप अपनी शर्तें बता दें । वैसे विवाह में मोटर, रेडियो, जेवर-रुपया, तो सब देते ही हैं, इसके अलावा कुछ और माँगना हो तो बता दीजिए ।"

जमींदार ने सोचा कि यह सभी चीजें तो दे ही रहा है, फिर मैं क्यों माँगू ? वह बोला, "चौधरी, हमारी कोई माँग नहीं है । जो कुछ भी आप देंगे, वही क्या थोड़ा है?"

"तो बात पक्की कल सुबह मैं लड़का रोकने आऊँगा, आप तैयारी कर लें" चौधरी ने उठते हुए कहा ।

अगले दिन सुबह चौधरी हरसुख ने फिर घोड़ी माँगी और वह भगवानपुर पहुँचा। घर में काफी भीड़ थी । जमींदार ने चौधरी का स्वागत किया । रस्म का वक्त आया तो चौधरी ने कहा, "जमींदार साहब, हमारी एक रीति है, बरिच्छा में हम एक रुपया ही देते हैं, उससे ज्यादा नहीं ।"

जमींदार ने सोचा, विवाह में तो इतना दे ही रहा है, बोला, "कोई बात नहीं, जो तुम्हारी रीति है वही करो ।"

चौधरी ने शान से जेब से एक रुपया निकाला और लड़का रोक लिया । शादी की तारीख भी तय हो गई ।

फिर गाँव वापस लौटकर चौधरी ने घोड़ी और कपड़े जहाँ के तहाँ वापस किए और अपनी पत्नी से आकर बताया कि मैं धन्नो के लिए लड़का रोक आया हूँ और अमुक तारीख को शादी है ।

यह सुनकर हिरिया आश्चर्यचकित रह गई । उधर शादी के दिन निकट आने लगे । चौधरी नाई के पास पहुँचा और बोला, "हरसू भाई लड़की की शादी है, बस तू कुछ पत्तलें बना दे । हाँ, पत्तलें दो-दो हाथ बड़ी हों—आम पत्तलों से तीन गुनी बड़ी । तेरी पत्तलें जैसी की तैसी वापस आ जाएँगी । बस तू बना दे ।

फिर चौधरी कुम्हार के पास पहुँचा और बोला, "नंदू, मेरी लड़की की शादी है, कुछ सकोरे चाहिए । देख, सकोरे खूब बड़े-बड़े हों, जिनमें सेर-सेर भर सामान आ जाए । तेरे सकोरे जैसे के तैसे वापस आ जाएँगे ।

कुम्हार भी मान गया ।

चौधरी ने अपने चार-पाँच मित्रों को बुलाया । एक खेत को अच्छी तरह लिपवाया पुतवाया । धोबी के यहाँ से बढ़िया सफेद चादरें ले आया ।

बारात आ गई । चौधरी के आदमी भी तैयार ही थे । बारात के आते ही एक आदमी दौड़ा-दौड़ा लड़के के बाप के पास आया कि "जमींदार साहब, लड़के को लेकर जल्दी चलिए, साइत निकली जा रही है । बारात को भोजन करने के लिए भेजिए ।" उसने जोर से आवाज लगाई, "लगाओ पत्तलें ।"

इधर पंडित जी तैयार ही बैठे थे । लड़के के आते ही शादी शुरू हो गई। उधर बारात खाने बैठ गई , पत्तलें और सकोरे भी लगा दिए गए ।

अब चौधरी हरसुख हाथ में छड़ी लेकर हाजिर हुआ और बोला, "कहिए जमींदार साहब, सब कुछ ठीक है न ? अरे हाँ, जरा एक बात बताइए, बारात में लड़के के फूफा को तो आप नहीं लाए ?"

"लड़के के फूफा तो आए हैं, वे बैठे हैं।"

"अरे साहब, आपने तो कमाल कर दिया, हमारे यहाँ तो फूफा आता ही नहीं। ये साला बारात में कैसे आया ?" इतना कहते ही चौधरी फूफा पर पिल पड़ा, "तू साले कैसे आया ?"

देखते ही देखते मार-पीट की नौबत आ गई। नवयुवक तन गए। बूढ़े समझाने लगे।

इसी बीच किसी बाराती ने कह दिया "हम ऐसे के यहाँ खाना नहीं खाते" चौधरी ने दहाड़ कर कहा, "अरे, नहीं खाते तो मत खाओ, जाओ। उठा ले वे पत्तलें और सकोरे।"

तैनात खड़े लोगों ने पत्तलें, सकोरे और चादरें उठा लीं। बाराती एक कोने में खड़े हो गए। युवक भड़क रहे थे, वृद्ध समझा रहे थे, "अरे भाई, उसके यहाँ फूफा बारात में नहीं आता होगा, इसमें नाराज होने की क्या बात है ? अब छोड़ो खाना और चलो वापस। पर एक बात है, यहाँ जो कुछ हुआ सो हुआ, गाँव लौटकर क्या मुँह दिखाओगे कि शादी करने गए और बिना बहू के लड़कर चले आए। जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ और जैसे भी हो बहू को ले चलो।"

गाँव में अपनी इज्ज़त बनाए रखने के लिए जमींदार ने बहू को विदा करने को कहा। उधर शादी हो चुकी थी, झटपट लड़की की विदा हो गई।

बारात गाँव में अगले दिन सुबह पहुँचने की बजाय शाम को ही पहुँच गई। "बारात जल्दी ही कैसे वापस आ गई ? कैसी खातिर हुई बारात की ?"—लोगों ने पूछा।

"अरे लड़की वाले ने तो कोई कसर नहीं रखी थी। कैसी बड़ी-बड़ी पत्तलें थीं ? कैसे बड़े-बड़े सकोरे थे ? न जाने क्या खिलाता, पर इस फूफा ने सारा मजा किरकिरा कर दिया।" एक ने बताया।

अब सब तरफ से फूफा पर ही बौछारें पड़ रही थीं। वेचारा फूफा थोड़ी देर में नजर बचा कर खिसक गया। और बाराती पत्तलों व सकोरों की तारीफ करते रहे।

लड़की भी बहुत होशियार थी, उसने सास के पाँव पकड़ लिए और उसकी खूब सेवा की। कुछ दिनों बाद सास ने प्यार से पूछा—"बहू, तेरे यहाँ से तो कुछ भी नहीं आया।"

"सास जी मेरे घर में क्या नहीं है ? पर ये लोग कुछ लाए ही नहीं। घर में सब ज्यों का त्यों भरा रखा है।"

पाठ 16

अपोलो-सोयुज मिलन

रूस और अमेरिका अंतरिक्ष अनुसंधान के कार्य में लगे हुए संसार के दो अग्रणी देश हैं। चंद्रतल के अध्ययन के लिए अमेरिका ने वहाँ अंतरिक्ष यात्री भेजे। रूस ने वही कार्य स्वचालित यंत्रों से पूरा किया। रूस के वैज्ञानिक पृथ्वी के समीप के अध्ययन को शुरू से ही अधिक महत्व देते रहे। अब अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में सम्मिलित प्रयास के महत्व को भी समझा जाने लगा है। अंतरिक्ष में दोनों देशों के यानों के मिलन की यह सर्वप्रथम योजना इसी उद्देश्य का परिणाम है। भविष्य की दृष्टि से अंतरिक्ष की इस सहयात्रा का सचमुच ही बड़ा महत्व है।

दोनों ही देशों ने भली-भाँति परीक्षित अंतरिक्ष यानों का विकास किया है। अमेरिकी अंतरिक्ष यान कई अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर ले गया है और फिर वापस भी लाया है। सोयुज यान में बैठकर दर्जनों सोवियत अंतरिक्ष यात्रियों ने पृथ्वी-परिक्रमाएँ की हैं और नए रिकार्ड स्थापित किए हैं। अब पहली बार दोनों देशों के यानों को जोड़कर एक अंतरिक्ष प्रयोगशाला बनाई गई और दोनों देशों के अंतरिक्ष यात्रियों ने सम्मिलित रूप से कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग किए।

सोयुज अपोलो की इस ऐतिहासिक सहयात्रा की योजना 1970 में बनीं थी। तब से इस सहयात्रा में भाग लेने वाले दोनों देशों के अंतरिक्ष यात्रियों ने कठोर अभ्यास किया है। अंतरिक्ष में दोनों यानों को जोड़ने के लिए इनमें कुछ सुधार करके कुछ नई यांत्रिक इकाइयाँ स्थापित की गईं। उदाहरण के लिए अपोलो यान का वातावरण शुद्ध ऑक्सीजन का बना है और दबाव काफी कम है। सोयुज यान में ऑक्सीजन-नाइट्रोज़न युक्त सामान्य दबाव वाला धरती जैसा वातावरण है।

ऐसी हालत में दोनों यानों को सीधे एक-दूसरे से जोड़ना संभव नहीं है। इसीलिए

दोनों यानों को जोड़ने वाले एक तीसरे स्वतंत्र कक्ष का निर्माण किया गया है। सिलिंडर के आकार का तीन मीटर लंबा और डेढ़ मीटर व्यास का यह कक्ष इस पूरी योजना का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। इसी कक्ष की सहायता से दोनों यान एक-दूसरे से जुड़े और इसी में से होकर दोनों देशों के अंतरिक्ष यात्री एक-दूसरे के यान में पहुँचे। दोनों यानों के मिलन के बाद रूस सोयुज यान का यात्री अपनी ओर का हवा बंद पलक खोलकर इस बीच के कक्ष में उतरा और फिर अपोलो यान की ओर का ऐसा ही पलक खोलकर उस यान में पहुँचा। इन सारी गतिविधियों के लिए दोनों देशों के अंतरिक्ष यात्रियों और इंजीनियरों ने सम्मिलित रूप से पूर्वाभ्यास किया है।

इस प्रकार अपोलो-सोयुज का यह सर्वप्रथम मिलन हर प्रकार से ऐतिहासिक महत्व रखता है। इससे भविष्य में विपत्ति में फँसे हुए यान तक मदद भेजना भी संभव होगा। सम्मिलित रूप से अंतरिक्ष का अनुसंधान करने की दिशा में यह पहला ठोस कदम है। इस प्रकार के संयुक्त प्रयासों से भविष्य में अंतरिक्ष स्टेशनों का भी निर्माण किया जा सकता है।

पाठ 17

तलाश

—कुदसिया ज़ैदी

पात्र :

चचा	इमामी
चची	खाँ साहब का नौकर

[दालान में एक चारपाई, एक तख़्त जिस पर मैले कपड़े रखे हैं, दो कुर्सियाँ, एक दो छोटी मेजें, सुराही आदि ।

कड़ाके का जाड़ा है । सुबह के तीन बजे हैं । चचा सर से पाँव तक लिहाफ़ ओढ़े सो रहे हैं । कमरा उनके खर्राटों से गूँज रहा है । दाएँ हाथ का दरवाज़ा कोई धड़ाधड़ पीट रहा है । जवाब न मिलने पर फिर कोई दरवाज़ा पीटता है ।]

चचा—(लिहाफ़ में से हाथ निकालकर लैंप जलाते हैं । फिर बड़ी सावधानी से लिहाफ़ में से मुँह निकालते हैं । घड़ी में वक्त देखकर) कौन हो जी ? (जोरदार दस्तक) दम भी लोगे या पीटते ही चले जाओगे किवाड़ ? (लिहाफ़ में से निकलते हैं कनटोप पहनते हैं, रजाई ओढ़ते हैं और सी-सी करते हुए बाँए हाथ के दरवाजे की तरफ जाते हैं ।) यह भी कोई वक्त है भले आदमियों को जगाने का ? (दरवाज़ा खोलकर और गौर से देखकर) अबे पाजी, तू इस वक्त क्या कर रहा है यहाँ ?

नौकर—खाँ साहब के पेट में बहुत सख्त दर्द है । उन्होंने आपकी रबड़ की थैली मँगवाई है ।

चचा—बस खा गए होंगे रात दावत में अनापशनाप। आखिर खाना किसी और का था तो पेट तो खाँ साहब का अपना था। और फिर यह कि सुबह तीन बजे पेट में दर्द कर लिया।

नौकर—खाँ साहब के पेट में तो दो बजे से दर्द है।

चचा—लीजिए, जरा गौर तो फरमाइए। शरीफ आदमी, कुछ तो वक्त का ख़्याल रखा होता।

नौकर—अजी यह भी कोई अपने बस की बात है ?

चचा—तो फिर क्या यह हमारे बस की बात है ? खैराती अस्पताल क्यों नहीं चले गए ? यह घर है, कोई दवाखाना तो है नहीं कि जिस वक्त जी चाहा सोतों को बेआराम किया और रबड़ की थैली माँग ली।

नौकर- तो फिर.......?

चचा—तो फिर क्या ? अब आया है तो लेता जा थैली। ठहर, हम अभी लाए। (दीवार पर से थैली उतार कर देते हैं और दरवाजा बंद कर लेते हैं। कनटोप उतार कर रख देते हैं और लिहाफ़ ओढ़कर मुँह ढक लेते हैं। लैंप बुझा देते हैं। फिर कोई दरवाजा खटखटाता है। (लिहाफ से मुंह निकालकर) अब यह कहलाया होगा कि गुज़र गए हैं, आकर कफ़न-दफ़न का इंतजाम करो। (लैंप जलाते हैं। जाकर दरवाजा खोलते हैं। खाँ साहब का नौकर थैली लिए खड़ा है।)

नौकर—खाँ साहब ने कहा है कि इसे अपने पास अंडे देने दीजिए। हम बोतल से काम चला लेंगे। और अब कभी हमसे पालिश की शीशी मँगाकर देखिएगा ?

चचा—(थैली हाथ में लिए स्तब्ध खड़े रहते हैं।) अरे कमबख़्त, सुबह-सुबह प्राइवेट बात खाँ साहब से कहने की क्या जरूरत थी ? वह तो हमने.......।

नौकर—और खाँ साहब ने यह भी कहा कि आप जब बीमार हों तो खैराती अस्पताल चले जाइएगा।

चचा—ज़रा खाँ साहब की शराफत तो देखिए। नौकर के हाथ तहज़ीब से ऐसी गिरी हुई बात कहलाना कहाँ की इंसानियत है ? (दरवाज़ा बंद कर लेते हैं और आकर

फिर लेट जाते हैं। फिर उठ बैठते हैं, बड़बड़ाते हैं।) "जैसे उनके बाप की मीरास में मुझे रबड़ की थैली मिली थी ·· " (लेट जाते हैं) "हूँह, और मिजाज तो देखो कि अपने ही पास अंडे देने दीजिए।" धमकी देता है कि पालिश मँगाकर देखिए।" (उठकर बैठ जाते हैं) जैसे शहर भर में यही तो एक मोची रह गया है। (लेटकर लैंप बुझा देते हैं और सोने की कोशिश करते हैं, लिहाफ़ में से मुँह निकालकर) कमबख़्त, उजाला ही नहीं होता कि इमामी चिलम ही भर लाता। (बैठ जाते हैं) सारा घर पड़ा सो रहा है जैसे कमबख़्तों को साँप सूँघ गया हो। (खड़े हो जाते हैं। टहलने लगते हैं) आखिर कोई चंदे की थैली है ? और फिर यह मिजाज कि अपने पास ही अंडे देने दीजिए। (दाएँ हाथ के दरवाजे से रसोई में जाते हैं। वहीं से) मालकिन बनने चली है। (अंदर आते हैं) इतना भी नहीं होता कि सोने से पहले चूल्हे में आग ही दबा दें। (चारपाई के पास आते हुए) और हर वक्त रोना यह है कि मैं काम के मारे मरी जाती हूँ। (गुस्से में आकर) हालत यह है कि घर में पालिश तक मँगाकर रखने का होश नहीं। जरूरत हो तो पड़ोसियों के यहाँ से पालिश मँगाई जाती है। (चारपाई पर बैठकर) और उस कमबख़्त को देखो कि पालिश क्या दे दी, बहुत बड़ा एहसान कर दिया। जो बराबर पालिश ले ली तो बदले में रबड़ की थैली उन्हें बख़्श दी। कमीना कहीं का। (उठकर खड़े हो जाते हैं।) और बीबी साहिबा को देखिए जिन्हें इतना भी ख़याल नहीं कि चिलम के लिए थोड़ी सी आग का इंतजाम कर दें। (बड़बड़ाते हुए काग़ज, छिपटियाँ वगैरह जमा करते हैं। फिर बाबर्चीखाने में जाकर अँगीठी लाते हैं। मेज पर से माचिस लेकर अँगीठी में आग जलाते हैं।) लीजिए अब तंबाकू तलाश कीजिए। (फिर रसोई में जाकर लिपटन चाय का एक गंदा डिब्बा लाकर जमीन पर पटक देते हैं।) कमबख़्त खाली पड़ा है। तंबाकू का एक ज़र्रा भी नहीं इसमें। हजारों बार कहो पर इन नौकरों के कान पर जूँ नहीं रेंगती। (खड़े हो जाते हैं) और उस बदमाश को देखो। सुबह-सुबह प्राइवेट बात ख़ाँ साहब से जाकर जड़ दी। (टहलकर) तुझे रबड़ की थैली दी है, तू चुपचाप जाकर उनको सौंप दे। तुझे दूसरों के किस्से से क्या मतलब ? यह कमबख़्त इमामी आज पड़ा सोता ही रहेगा या उठेगा भी ? (दाएँ दरवाजे से जाते हैं। बाहर से गुस्से में) हरामखोर, बदमाश हजारों बार कहा कि एक चिलम की तंबाकू बाकी रहे तभी तंबाकू ले आया कर। उठता है कि लगाऊँ एक लात। (इमामी के रोने की आवाज़)

इमामी—(दाएँ दरवाजे से अंदर आता है ।, चचा पीछे-पीछे आते हैं । हाय मर गया । (बैठ जाता है और रोता है)

चची—(दुपट्टा संभालती हुई बाएं दरवाजे से आती हैं) क्या हुआ ? क्यों सुबह-सुबह ग़रीब पर बरस पड़ ?

चचा—आपसे मतलब ?

चची आख़िर मालूम तो हो कि इसने क्या किया ?

चचा—(इमामी से) ला बता कहाँ है तंबाकू ?

इमामी—मियाँ, रखा तो हुआ है ।

चचा—तो हम अंधे हैं ?

चची—रात को ही तो इसने तंबाकू के लिए मुझसे पैसे लिए हैं।

चचा—(सुनकर इमामी का कान पकड़ते हैं और उसे उठाते हुए) तंबाकू के नाम से पैसे लेकर रेवड़ियाँ उड़ाता है ।

इमामी—(रोकर) नहीं तो ।

चचा—नहीं तो जा, लाकर दे तंबाकू ।

इमामी—(बाएँ दरवाजे से बाहर जाता है और एक भरा हुआ डिब्बा लेकर आता है) लो यह रहा तबाकू । ताक़ में रखा था। रात को ही तो मैंने भरा था डिब्बा । (रोता है)

चचा—तंबाकू रखने की जगह ताक़ है ? दूकान में ही क्यों न रख आया ?

इमामी—(कुर्ते के आस्तीन से आँसू पोंछकर) बीबी जी ने कहा था ।

चचा—(चिल्लाकर) अबे बीबी जी के बच्चे, तुझे खुद खयाल न आया कि जरूरत होगी तो ताक़ में कहाँ तलाश करते फिरेंगे ?

इमामी—नीचे बिल्लियाँ गिरा देती हैं।

चचा—बातें सुनो बदमाश की ? तंबाकू न हुआ दूध हो गया कि बिल्लियाँ गिरा देती हैं ।

चची—(बावर्चीखाने से) इमामी तू इधर आ जरा। (इमामी जाता है और तुरंत चाय का प्याला लेकर आता है।)

इमामी - बीबी जी ने चाय भिजवाई है।

चचा—इसे भी ताक़ पर उठाकर क्यों नहीं रख दिया ?

इमामी—(चुप खड़ा चचा के मुँह की ओर देखता है)

चचा—अबे मुँह क्या देख रहा है ? इधर आ (धीमे स्वर से) तू एक काम कर सकता है ?

इमामी—क्या ?

चचा—इस वक्त खाँ साहब नाई के यहाँ होंगे। तू उनकी साइकिल में पंक्चर कर आ। कर सकेगा ?

इमामी—क्यों नहीं, मियाँ ?

चचा--ले एक आना रेवड़ियाँ लेकर खा लेना। वह काम भूलेगा तो नहीं ?

पाठ 18

अंतिम मिलन

—बालकृष्ण राव

याद है मुझको, तुम्हें भी याद होगी,
मार्च की वह दोपहर, वह धूल गर्मी,
और वह सूनी सड़क जिस पर हजारों
पत्तियाँ सूखी हवा में उड़ रही थीं।
हम खड़े थे पेड़ के नीचे, किनारे
एक ने पूछा, कहा कुछ दूसरे ने,
फिर लगे चुपचाप होकर सोचने हम
कौन यह पहले कहेगा "अब विदा दो।"

क्या हुए थे प्रश्न, क्या उत्तर मिले थे,
कौन जाने आज, अब है याद केवल
दोपहर की, और उस सूनी सड़क की,
धूल, गर्मी और उड़ती पत्तियों की,
और इसकी भी कि दोनों सोचते थे
कौन यह पहले कहेगा "अब विदा दो।"

माध्यमिक स्तरीय पुस्तक - 1

सामग्री निर्माण

1.	कीर्तिलता दत्त	....	(व्याकरणिक टिप्पणी)
2.	सुधीर कुमार माथुर	....	(सांस्कृतिक टिप्पणी)
3.	अश्वनी कुमार	....	(अभ्यास प्रश्न)
4.	शकुन्तला रेड्डी	....	(शब्द-सूची)
5.	अरुण चतुर्वेदी	....	(व्याकरणिक टिप्पणी)

संयोजन एवं संपादन
डॉ० अमरबहादुर सिंह

सांस्कृतिक टिप्पणी

व्याकरणिक टिप्पणी

अभ्यास प्रश्न

शब्द सूची

पाठ 2

मंगली की कोठरी

घर के पुराने नौकर घर के सदस्य के लगभग आदर और स्नेह के अधिकारी हो जाते हैं। उनसे वैसा ही व्यवहार किया जाता है जैसा घर के किसी सदस्य से किया जाता है। संबोधन करते समय अक्सर उनका नाम नहीं लिया जाता। उन्हें आयु के अनुकूल घर के सदस्य दादा, भैया, चाचा आदि कहते हैं। इस संस्मरण में मंगली की स्थिति घर में वैसी ही है। यह ग्रामीण संस्कृति है जो अभी तक थोड़ी-बहुत शहरी जीवन में भी चल रही है।

पाठ 3

काकी

हिंदुओं में यह रिवाज़ है कि देहांत होने से पहले ही रोगी को ज़मीन पर उतार लेते हैं। पलंग पर प्राणांत होना अच्छा नहीं समझा जाता है। देहांत के बाद सफेद चादर से शव को पूरा ढक देते हैं। मुँह खुला नहीं रखते। शव की यही पहचान है। हिंदुओं के सोलह संस्कारों में से अंतिम संस्कार को ''अंत्येष्टि'' या ''अग्नि संस्कार'' कहते हैं। इसमें विधिवत् हवन करके शरीर को अग्नि में जला दिया जाता है।

पाठ 7

ईदगाह

ईद मुसलमानों का सबसे बड़ा त्योहार है । रमज़ान के महीने में मुसलमान लोग रोज़ा, (व्रत) रखते हैं । वे पूरे महीने भर सूर्योदय से सूर्यास्त तक कुछ नहीं खाते । चाँद की स्थिति के अनुसार 29 या 30 दिन के रोज़ों के बाद शाम को चाँद देखकर ही भोजन करते हैं । दूसरे दिन ईद मनाई जाती है । भोजन में सेंवइयाँ अवश्य बनाई जाती हैं । बच्चे नए कपड़े पहनते हैं और मेला देखने जाते हैं । जिस प्रकार हिंदू लोग आपस का बैर विरोध भूलकर होली पर गले मिलते हैं । उसी तरह मुसलमान लोग ईद पर गले मिलते हैं । जहाँ सामूहिक नमाज़ पढ़ी जाती है उसे ईदगाह कहते हैं ।

बिरादरी :

बिरादरी का अर्थ है जाति । यदि कोई व्यक्ति कोई बुरा काम करता है तो उसको बिरादरी से बाहर कर दिया जाता है अर्थात उससे मिलना-जुलना और संबंध रखना खतम कर दिया जाता है । इसी अर्थ में 'हुक्का पानी बंद होना' का भी प्रयोग होता है अर्थात बिरादरी वाले उस व्यक्ति के साथ बैठकर हुक्का पानी नहीं पीते—वह व्यक्ति बिरादरी से बाहर समझा जाता है ।

दामन फैलाकर दुआ माँगना :

दुआ माँगते समय पुरुष अपने दोनों हाथ ऊपर उठाते हैं और महिलाएँ साड़ी का आँचल फैलाकर दुआ माँगती हैं ।

पाठ 9

देश-विदेश की होली

होली उत्तर भारत के हिंदुओं का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है । होली से संबंधित कहानी इस प्रकार है :—

होलिका हिरण्य कश्यप की बहन थी। हिरण्य कश्यप का लड़का प्रह्लाद बहुत बड़ा ईश्वर भक्त था। हिरण्य कश्यप नास्तिक था। उसने आदेश दिया कि होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठे—यदि ईश्वर है तो वह अपने भक्त प्रह्लाद को बचाएगा। प्रहलाद अग्नि में नहीं जला और होलिका जल गई। प्रतिवर्ष फाल्गुन मास की पूर्णिमा को होली जलाई जाती है। अगले दिन लोग पानी में रंग घोलकर उस रंगीन पानी को एक-दूसरे पर डालते हैं और खुशी मनाते हैं। होली का त्योहार एक सप्ताह तक बहुत उल्लास से मनाया जाता है। लोग एक-दूसरे के घर जाकर गले मिलते हैं। तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं। होली का विशेष पकवान है 'गुझिया'।

पाठ 10

ये विचित्र विद्या व्यसनी

चोटी, चुटिया :

महिलाएँ बालों को गूँथकर चोटी करती हैं। हिंदू पुरुष भी छोटी सी चोटी रखते हैं। आजकल यह रिवाज़ कम हो गया है परंतु कट्टर हिंदू अभी भी चोटी रखते हैं, विशेष रूप से ब्राह्मण। यह हिंदुत्व की निशानी समझी जाती है।

पाठ 14

अकबर बादशाह की जेब कट गई

ऐरावत :

हिंदू धर्मशास्त्रों के अनुसार देवताओं के राजा इंद्र हैं। उनके हाथी का नाम ऐरावत है।

फ़तेहपुर सीकरी :

अकबर ने फ़तेहपुर सीकरी को अपनी राजधानी बनाया था। यह आगरे से 22 मील दूर है।

पाठ 15

फूफा बराती

उत्तर भारत के हिंदू परिवारों में लड़की के विवाह में लड़की के पिता को बहुत खर्च करना पड़ता है, विवाह का प्रस्ताव भी लड़की वालों की ओर से ही किया जाता है। अतः लड़की का विवाह एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी समझी जाती है। लड़की और लड़का शब्दों का प्रयोग क्रमशः वधू और वर के अर्थ में किया जाता है (और लड़की या लड़के की तलाश का अर्थ है वधू या वर की तलाश)। जब लड़का या लड़की पसंद आ जाते हैं तब पहली रस्म लड़की वाले 'रोक' की करते हैं। इसे बरिच्छा या शगुन भी कहते हैं। इसके बाद शादी पक्की समझी जाती है।

विवाह में वर के साथ जो लोग जाते हैं उन्हें बराती कहते हैं और इस पूरी पार्टी को बरात। कुछ जातियों में महिलाएँ भी बरात में जाती हैं। बरात जिस मकान या भवन में ठहरती है उसे जनवासा कहते हैं।

दावत आदि में मिट्टी के बने हुए बरतन—**सकोरे** और **कुल्हड़** प्रयोग में आते हैं। इन्हें कुम्हार बनाता है। पत्तों से बनी हुई **पत्तलों** में खाना खाया जाता है। सकोरे में तरकारी, खीर आदि खाई जाती है और कुल्हड़ों में पानी पिया जाता है।

साला—पत्नी के भाई को साला कहते हैं। उत्तर भारत में 'साला' गाली है। बहुत प्यार में मित्र या बच्चों को भी यह गाली दे दी जाती है। इसी तरह 'ससुर' (पत्नी का पिता) भी गाली है।

साइत—विवाह या किसी भी शुभ कार्य के लिए पंडित जो समय निर्धारित करते हैं उसे साइत कहते हैं। उसी लग्न या समय में वह शुभ कार्य होना आवश्यक होता है।

नाई—नाई एक जाति है। पुराने जमाने में हिंदुओं में विवाह आदि तै करने का कार्य नाई ही करते थे। अभी भी मरण और विवाह आदि संस्कारों में नाई की आवश्यकता होती है। नाई की स्त्री को नाउन या नाइन कहते हैं। विवाह के समय कन्या के साथ नाउन भी मंडप में रहती है।

धन्नो की माँ :

परंपरागत हिंदू-मुस्लिम परिवारों में पति-पत्नी का नाम नहीं लिया जाता। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबोधन के निम्नलिखित तरीके हैं :—

(1) बच्चों के नाम के साथ संबंध जोड़कर जैसे—मुन्नू के बाबू, बेबी के डैडी या पापा आदि तथा लल्ली की अम्माँ, बंटी की मम्मी, माँ या माई आदि। यह संबोधन बुलाने तथा उनके विषय में बताने दोनों रूपों में प्रयुक्त होता है।

(2) ये, वे, इन, उन का प्रयोग किसी से बातचीत के दौरान पत्नी या पति का जिक्र आने पर किया जाता है।

(३) प्रत्यक्ष रूप में संबोधन के लिए देखिए, सुनिए का प्रयोग है।

(4) पत्नी के विषय में बात करते समय 'घर' शब्द का प्रयोग करते हैं—आज घर में बीमार हैं।

पाठ 17

तलाश

उत्तर भारत के मुसलमान परिवारों में उर्दू बोली जाती है। मानक हिंदी से इसमें मुख्य अंतर शब्दावली का है। उर्दू में अधिक शब्द अरबी-फ़ारसी के लिए हुए मिलेंगे। इसके अतिरिक्त कुछ शब्दों की अपनी उर्दू शैली भी है जैसे चाचा और चाची को इस शैली में चचा और चची कहते हैं।

पाठ 1

सोना माटी

पदक्रम :—कविता में लय और गति के आग्रह से अथवा वैसे भी पदक्रम उलट जाता है जैसे "इससे बड़ा प्यार है हमको।"

प्रश्न

कविता की अंतिम छह पंक्तियों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ 2

मंगली की कोठरी

1. लेखक को क्या याद नहीं है ?
2. लेखक यह क्यों नहीं समझ सका कि मंगली कौन था ?
3. मंगली क्या काम करता था ?
4. वह कहाँ रहता था ?
5. मंगली का सामान क्या-क्या था ?
6. बड़े होने पर लेखक ने मंगली को क्या समझा ?
7. एक दिन क्या हुआ ?
8. जब लेखक के पिता ने मंगली से निकल जाने के लिए कहा तो मंगली ने क्या कहा ?

9. मंगली की बात सुनकर लेखक के पिताजी ने क्या किया ?

10 माँ ने पिताजी से क्या कहा ?

11 फिर माँ ने मंगली से क्या कहा ?

12. माँ ने मंगली से बंदर भगाने के लिए क्यों कहा ?

13. मंगली ने क्या किया ?

14. यह संस्मरण आपको क्यों अच्छा लगा ?

पाठ 3

काकी

1. उस दिन सबेरे आँख खुलते ही श्यामू ने क्या देखा ?

2. उसकी माँ जमीन पर कैसे लेटी थी ?

3. पड़ोस की औरतें क्या कर रहीं थीं ?

4. लोग जब उसकी माँ की अर्थी को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे तो श्यामू ने क्या किया ?

5. श्यामू ने लोगों से क्या कहा ?

6. श्यामू अग्नि संस्कार में न जाकर किसके पास रहा ?

7. इस घटना के बाद श्यामू कैसा रहने लगा ?

8. एक दिन श्यामू ने क्या देखा ?

9. श्यामू ने पिताजी से क्या कहा ?

10. उसने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए क्या किया ?

11 श्यामू ने पतंग और डोर किससे मँगाई ?

12. श्यामू ने भोला से रहस्य की कौन सी बात बताई ?

13. भोला ने श्यामू से क्या कहा ?

14. श्यामू प्रसन्न होकर पतंग उड़ाने छत पर जाने ही वाला था कि कौन आ गया ?

15. भोला और श्यामू से विश्वेश्वर ने क्या कहा ?
16. भोला ने विश्वेश्वर से क्या कहा ?
17. पतंग पर क्या लिखा था ?

पाठ 4

मौत का भय

1. मेहनती व्यापारी ने रोज़गार में लाभ होने पर क्या सोचा ?
2. एक दिन उसने क्या किया ?
3. जहाज़ पर बैठकर वह क्या कर रहा था ?
4. वह अपने मन में क्या सोच रहा था ?
5. व्यापारी घबड़ा कर क्या चिल्लाने लगा ?
6. व्यापारी ने मल्लाह से क्या पूछा ?
7. मल्लाह क्या बोला ?
8. व्यापारी ने फिर क्या पूछा ?
9. मल्लाह ने क्या उत्तर दिया ?
10. मल्लाह की किस बात से व्यापारी बड़ा प्रभाबित हुआ ?
11. व्यापारी क्या समझ गया ?

पाठ 5

मेरा धर्म मेरा ईश्वर

1. हमें सभी धर्मों के प्रति कैसा भाव रखना चाहिए ?
2. लेखक किस विश्वास से सहमत नहीं है ?

3. लेखक विविध धर्मों के मानने वालों को दूसरों के धर्म के प्रति कैसा भाव रखने के लिए प्रेरित करना चाहता है ?

4. लेखक के अनुसार सभ्य पुरुष और स्त्री का कर्तव्य क्या है ?

5. संसार के सभी धर्मों का आदर पूर्वक अध्ययन करने से किस लक्ष्य की प्राप्ति होती है ?

6. लेखक की जीवन दृष्टि में क्या परिवर्तन हुआ ?

7. किस सिद्धांत को लेखक पसंद करता है ?

8. एक मुसलमान या एक ईसाई को समझने में लेखक को किस सिद्धाँत से सहारा मिला है ?

9. धर्म में किस बात का उद्देश्य होना चाहिए ?

10. दूसरों के लिए ईश्वर से हमारी प्रार्थना क्या होनी चाहिए ?

पाठ 6

नया धर्म

पदक्रम—छंद में गति और लय के आग्रह से कविता में अक्सर पदक्रम गद्य से भिन्न होता है ; जैसे "नया ज्ञान विज्ञान है हर दिशा में।"

प्रश्न

अंतिम दो छंदों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ 7

ईदगाह

1. ईद कब आती है ?
2. हामिद कैसा लड़का था ?
3. हामिद दादी के पास क्यों रहता था ?
4. हामिद किन वस्तुओं के अभाव में भी प्रसन्न था ।
5. अमीना कोठरी में बैठी क्यों रो रही थी ?
6. नमाज़ के बाद लोग क्या कर रहे थे ।
7. बच्चों का धावा किन चीज़ों की दुकानों पर हुआ ?
8. हामिद ने खिलौने क्यों नहीं खरीदे ?
9. खिलौनों के बाद किसकी दुकान आई ?
10. हामिद ने मिठाई क्यों नहीं खाई ?
11. मिठाइयों के बाद किस चीज की दुकानें आईं ?
12. हामिद को लोहे की दुकान पर क्या ख्याल आया ?
13. अमीना ने हामिद की आवाज़ सुनकर क्या किया ?
14. हामिद के हाथ में क्या था ?
15. हामिद ने चिमटा कितने पैसे में खरीदा था ?
16. चिमटा देखकर अमीना क्या बोली ?
17. हामिद ने अपराधी के स्वर में क्या कहा ?
18. बुढ़िया अमीना का क्रोध स्नेह में क्यों बदल गया ?
19. अमीना की आँखों से आँसू क्यों बहने लगे ?
20. दामन फैलाकर अमीना क्या कर रही थी ?

पाठ 8

नवोदित नागालैंड

1. नागालैंड़ के इतिहास में कौन सा दिन गौरवशाली है ?
2. इस दिन क्या हुआ था ?
3. पिछले दस वर्षों में नागालैंड ने क्या किया ?
4. नागालैंड का मुख्य व्यवसाय क्या है ?
5. जनता के चुने हुए प्रतिनिधि अब किसकी ओर अग्रसर हो रहे हैं ?
6. नागालैंड को नए राज्य के रूप में अपने पैरों पर खड़े होने में कठिनाई क्यों नहीं हुई ?
7. 1969 में क्या हुआ ?
8. नागाओं ने क्या अनुभव किया ?
9. नागालैंड में कृषि की पुरानी पद्धति को क्या कहते हैं ?
10. इस पद्धति में क्या होता था ?
11. राज्य ने कृषि के लिए क्या-क्या किया ?
12. नागालैंड का प्रत्येक परिवार क्या करता है ?
13. उनका प्रमुख भोजन क्या है ?
14. पशु पालन के लिए राज्य सरकार ने क्या किया है ?
15. औद्योगिक उपयोग करने के लिए कौन-कौन से केन्द्र खोले जा रहे हैं ?
16. यातायात क्यों सुगम हो गया है ?
17. शिक्षा के क्षेत्र में क्या विकास हुआ है ?
18. उद्योग के क्षेत्र में कौन-सी प्रमुख योजनाएँ हैं ?
19. नवोदित नागालैंड किस मार्ग पर कदम बढ़ा रहा है ?

पाठ 9

देश-विदेश की होली

1. हमारे देश की होली कैसी होती है ?
2. 'तिजान' क्या है और कहाँ पर मनाई जाती है ?
3. बर्मा का सबसे बड़ा राष्ट्रीय त्योहार कौन सा है ?
4. यह कब और कितने दिनों तक मनाया जाता है ?
5. 'मेडेफो' किसे कहते हैं ?
6. नदी तट पर कीचड़-गोबर से बनी गेदों से छात्र क्या करते हैं ?
7. फरवरी माह में एक सप्ताह तक होली मनाने के त्योहार को रोम में क्या कहते हैं ?
8. जुलूस में रथ पर किसकी प्रतिमा निकाली जाती है ?
9. नकली लड़ाई के बाद क्या होता है ?
10. जर्मनी में घास-फूस का पुतला जलाने के बाद लोग क्या करते हैं ?
11. फ्राँस और बेल्जियम में होली के त्योहार को क्या कहते हैं ?
12. फ्राँस में जो व्यक्ति होली के हुड़दंग से बचने की कोशिश करता है, उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है ?
13. 'ओमेना-बोंगा' क्या है ?
14. प्रतिवर्ष होली पर बोंगा राजा की प्रतिमा को लोग क्यों जलाते हैं ?

पाठ 10

ये विचित्र विद्या व्यसनी

1. अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति रूज़वेल्ट को क्या शौक था ?
2. राष्ट्रपति बनने के बाद रूज़वेल्ट कैसे पुस्तकें पढ़ते थे ?

3. राष्ट्रपति लिंकन कैसे परिवार के थे ?
4. उनकी रुचि किसमें थी ?
5. अपनी रुचि को वे कैसे पूरा करते थे ?
6. रात को लिंकन लैंप पोस्ट के नीचे किताबें क्यों पढ़ते थे ?
7. पंजाब के भूतपूर्व मुख्य मंत्री स्व० प्रतापसिंह कैरो पढ़ने के लिए कहाँ गए थे ?
8. अमेरिका में पढ़ाई के खर्च को पूरा करने के लिए कैरो ने क्या फैसला किया ?
9. पेड़ से फल तोड़ते समय प्रतापसिंह कैरो क्या करते थे ?
10. चीन के संचिग नामक विद्वान को लोग क्या समझते थे ?
11. संचिग अपने जीवन का प्रत्येक क्षण किसमें बिताना चाहते थे ?
12. नींद से बचने के लिए संचिग क्या करते थे ?

पाठ 11

हमारी संसद

1. हमारी संसद क्या करती है ?
2. संसद कैसी संस्था है ?
3. संसद भवन कहाँ है ?
4. संसद भवन के पास क्या-क्या है ?
5. देश की जनतांत्रिक शासन प्रणाली में संसद की क्या स्थिति है ?
6. संसद के सदस्य कौन होते हैं तथा इनका निर्वाचन कैसे होता है ?
7. देश के सभी वयस्क नागरिकों का क्या कर्तव्य है ?
8. वोट किसे देना चाहिए ?
9. हमारे देश की उन्नति कैसे हो सकती है ?
10. गणतंत्रात्मक प्रजातंत्र में देश के प्रत्येक नागरिक को कैसे अधिकार प्राप्त हैं ?
11. भारत ने गणतंत्रात्मक प्रणाली किन देशों के संविधान के आधार पर बनाई है ?

12. क्या प्राचीन भारत में ऐसे गणतंत्र थे, जो अपना शासन जनतांत्रिक प्रणाली से चलाते थे ?
13. संसद में कितने सदन हैं ?
14. लोक सभा के सदस्यों का चुनाव कैसे होता है और इनकी संख्या कितनी है ?
15. राज्य सभा के अधिकांश सदस्यों का चुनाव कैसे होता है और इनकी संख्या कितनी है ?
16. राष्ट्रपति राज्य सभा के लिए कितने सदस्यों को चुनते हैं ?
17. प्रधान मंत्री कैसे बनाए जाते हैं ?
18. मंत्रिमंडल का गठन कैसे होता है ?
19. आजकल प्रधानमंत्री कौन है तथा किस दल का मंत्रिमंडल है ?
20. जनता दल के सदस्यों को छोड़कर बाकी सदस्य क्या कहलाते हैं ?
21. राज्य सभा का अध्यक्ष हमेशा कौन होता है ?
22. राज्य सभा में अध्यक्ष की दाहिनी और बाँयी ओर किस दल के लोग बैठते हैं ?
23. सदन के कार्य संचालन का उत्तरदायित्व किस पर होता है और उसके आदेश किसको मान्य होते हैं ?
24. सरकार कर कैसे लगाती है ?
25. संसद में विरोधी पक्ष का क्या कार्य है ?

पाठ 12

बसंती हवा

प्रश्न

कविता के पहले छंद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ 13

मिज़ोउरम

1. मिज़ोउरम क्षेत्र कब केंद्र शासित क्षेत्र बना ?
2. मिज़ोउरम क्षेत्र के बारे में आप क्या जानते हैं ?
3. मिज़ोउरम की आबादी कितनी है ?
4. केंद्र शासित क्षेत्र बनने से पहले मिज़ोउरम की क्या स्थिति थी ?
5. मिज़ोउरम पहले किसका जिला था ?
6. मिज़ोउरम के सौभाग्य और दुर्भाग्य को समझने से पहले क्या जानना जरूरी है ?
7. मिज़ो लोग कैसे होते हैं ?
8. मिज़ो आदमी और औरतें कैसे होते हैं ?
9. मिज़ो लोगों के बारे में क्या कहा जाता है ?
10. मिज़ो लोगों का मुख्य धंधा क्या है ?
11. मिज़ो लोग असम प्रदेश में क्यों आए ?
12. 'मिज़ो चीन से आए' इस बात को विद्वान क्यों नहीं मानते ?
13. मिज़ो जाति बर्मा से ही आई, इस बात के क्या प्रमाण मिलते हैं ?
14. मिज़ो लोगों ने असम के किस जिले के लोगों के साथ और कब व्यापार शुरू किया था ?
15. कछार जिले के व्यापारियों से चावल लेकर मिज़ो लोग बदले में क्या देते थे ?
16. मिज़ो पहाड़ियों में रहने वाले लोगों का स्वभाव कैसा होता है ?
17. मैदान में रहने वाले व्यापारियों के धोखा देने पर मिज़ो लोग क्या करते हैं ?
18. सन् 1890 में वर्तमान मिज़ोउरम क्षेत्र दो भागों में बाँटा गया। दोनों भाग किस-किस के साथ जोड़ दिए गए ?
19. दो महत्वपूर्ण शासकीय केंद्र किन जिलों में बन गए ?
20. मिज़ोउरम के पूरे क्षेत्र में अशाँति क्यों रही ?
21. मिज़ोउरम के भाग्य ने फिर कब पलटा खाया ?

22. किस व्यवस्था के अनुसार मिज़ो जिले में जिला परिषद् तथा ग्राम पंचायतें बनाई गईं ?

23. पिछले दिनों मिज़ोउरम की जनता ने मिज़ो यूनियन का साथ कैसे दिया ?

24. नए राजनीतिक पुनर्गठन के बाद मिज़ो लोगों से क्या आशा है ?

पाठ 14

अकबर बादशाह की जेब कट गई

1. बादशाह अकबर स्वर्ग में क्यों नहीं रहना चाहते थे ?
2. अकबर कहाँ जाना चाहते थे ?
3. अकबर को हिंदुस्तान छोड़े कितने साल हो गए थे ?
4. अकबर हिंदुस्तान जाकर क्या करना चाहते थे ?
5. बादशाह अकबर तथा बीरबल पृथ्वी लोक कैसे आए ?
6. बादशाह अकबर ने हिंदुस्तान में खर्च करने के लिए अपने साथ क्या लिया ?
7. ऐरावत ने बादशाह और बीरबल को कहाँ उतारा ?
8. बादशाह को कौन सी बात बुरी लगी ?
9. बादशाह बीरबल से क्या बोले ?
10. बीरबल ने बादशाह से किले में जाने से पहले क्या कहा ?
11. बीरबल ने अकबर को क्या बताने से मना किया और क्यों ?
12. बादशाह के मुनादी के बारे में पूछने पर बीरबल क्या बोला ?
13. बीरबल के रिक्शा रोकने पर रिक्शे वाले ने क्या जवाब दिया ?
14. रिक्शे वाले की बात सुनकर अकबर को कैसा लगा और वे बीरबल से क्या बोले ?
15. अकबर ने जमुना के किनारे आलीशान सफेद-सफेद इमारत को देखकर क्या पूछा ?

16. बीरबल के पूछने पर चाय वाले ने क्या जवाब दिया ?

17. बादशाह के यह पूछने पर कि क्या भिखारी ने पहचान लिया है, बीरबल ने क्या जवाब दिया ?

18. बादशाह ने बीरबल से भिखमंगों को क्या देने के लिए कहा ?

19. बादशाह की आँखें आश्चर्य से क्यों फट गईं ?

20. बीरबल ने जेबकतरे का पता लगाने के लिए क्या किया ?

21. जब भिखमँगा पकड़ा गया तो वह क्या कर रहा था ?

22. स्वर्ग वापस जाते समय अकबर क्या बड़बड़ा रहे थे ?

23. "बाँछें खिल जाना" मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

24. "आश्चर्य से आँखें फट जाना" मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

पाठ 15

फूफा बराती

1. चौधरी हरसुख की आर्थिक स्थिति कैसी थी ?
2. चौधरी हरसुख क्या काम करता था ?
3. चौधरी जब खाना खाने आया तो हिरिया से उसने क्या बात की ?
4. हिरिया के जवाब को सुनकर चौधरी हरसुख ने क्या किया ?
5. दोपहर बाद एक गाँव में पहुँचकर चौधरी हरसुख ने क्या पूछा ?
6. एक किसान ने उठकर क्या किया और वह क्या बोला ?
7. चौधरी रसूलसिंह ने चौधरी हरसुख से कैसा व्यवहार किया ?
8. गाँव के किसान के पूछने पर चौधरी हरसुख ने अपने आने का कारण क्या बताया ?
9. चौधरी की बात सुनकर वह किसान क्या बोला ?
10. चौधरी की जमींदार से क्या बातचीत हुई ?

11. रस्म के वक्त चौधरी हरसुख ने जमींदार से क्या कहा ?
12. जमींदार ने क्या जवाब दिया ?
13. गाँव वापस लौटकर चौधरी हरसुख ने अपनी पत्नी हिरिया से क्या बताया ?
14 शादी के दिन निकट आने पर चौधरी ने नाई और कुम्हार से क्या कहा ?
15. चौधरी ने अपने मित्रों को बुलाने के बाद क्या किया ?
16. बरात के आते ही एक आदमी लड़के के बाप के पास जाकर क्या बोला ?
17. लड़के के आते ही पंडित जी ने क्या किया ?
18. बरात के खाना शुरू करने से पहले चौधरी और जमींदार के बीच क्या बातें हुईं ?
19. बिना बहू के गाँव वापस लौटने पर लोग क्या कहते ?
20. गाँव में अपनी इज्जत बनाए रखने के लिए जमींदार ने क्या कहा ?
21. गाँव में बरात सुबह के बजाय शाम को ही पहुँच गई तो लोगों ने क्या पूछा ?
22. एक बराती ने क्या उत्तर दिया ?
23. बेचारा फूफा नज़र बचाकर क्यों खिसक गया ?
24. ससुराल में चौधरी की लड़की ने क्या किया ?
25. सास के दहेज के बारे में पूछने पर लड़की ने क्या जवाब दिया ?
26. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :—
लंबी तानकर सोना, मज़ा किरकिरा कर देना, रोटी मिलना, मुँह फुलाना, देखते रह जाना।

पाठ 16

अपोलो-सोयुज मिलन

1. अंतरिक्ष अनुसंधान के कार्य में लगे हुए संसार के दो अग्रणी देश कौन से हैं।
2. चंद्रतल के अध्ययन के लिए अमेरिका ने क्या भेजा ?

3. रूस ने चंद्रतल के अध्ययन के लिए क्या किया ?

4. रूस के वैज्ञानिक किस अध्ययन को अधिक महत्व देते रहे ?

5. अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में सम्मिलित प्रयास के महत्व को समझने से क्या परिणाम निकला ?

6. पहली बार दोनों देशों के यानों को जोड़कर क्या बनाया गया और दोनों देशों ने मिलकर क्या किया ?

7. सोयुज-अपोलो की ऐतिहासिक सहयात्रा की योजना कब बनी ?

8. इस सहयात्रा में भाग लेने वाले दोनों देशों के अंतरिक्ष यात्रियों ने क्या किया ?

9. अपोलो यान का वातावरण कैसा है ?

10. सोयुज यान का वातावरण कैसा है ?

11. दोनों यानों को सीधे एक-दूसरे से जोड़ना क्यों संभव नहीं है ?

12. दोनों यानों को जोड़ने के लिए क्या किया गया ?

13. इस योजना का सबसे महत्वपूर्ण अंग क्या है ?

14. दोनों देशों के अंतरिक्ष यात्री किस प्रकार एक-दूसरे के यान में पहुँचे ?

15. सोयुज यान का यात्री अपोलो यान में कैसे पहुँचा ?

16. इन सारी गतिविधियों के लिए दोनों देशों के अंतरिक्ष यात्रियों और इंजीनियरों ने मिल कर क्या किया ?

17. अपोलो-सोयुज के सर्वप्रथम मिलन से भविष्य में क्या लाभ हो सकते हैं ?

पाठ 17

तलाश

1. जब चचा सो रहे थे तो सुबह के तीन बजे क्या हुआ ?

2. चचा ने लैंप जलाकर क्या किया ?

3. दरवाज़ा खोलकर चचा ने क्या कहा ?
4. नौकर क्या बोला ?
5. नौकर की बात सुनकर चचा ने क्या कहा ?
6. दीवार पर से थैली उतार कर नौकर को देने के बाद चचा ने क्या किया ?
7. थोड़ी देर बाद दोबारा दरवाज़ा पीटने पर चचा क्या बड़बड़ाए ?
8. दरवाज़ा खुलने पर नौकर ने चचा से क्या कहा ?
9. नौकर ने चचा को खाँ साहिब का और कौन सा संदेश दिया ?
10. मालकिन या अपनी पत्नी पर चचा क्यों नाराज़ होते हैं ?
11. आग जलाने के बाद चचा क्या तलाश करते हैं ?
12. लिपटन चाय के गंदे डिब्बे को चचा क्यों पटक देते हैं ?
13. खाँ साहब के नौकर की याद आते ही चचा क्या बड़बड़ाए ?
14. इमामी क्यों रो रहा था ?
15. चची ने इमामी को रोता हुआ सुनकर चचा से क्या पूछा ?
16. चचा के तंबाकू के बारे में पूछने पर इमामी ने क्या कहा ?
17. चचा ने इमामी के कान पकड़ते हुए क्या कहा ?
18. इमामी ने तंबाकू ताक पर क्यों रखी थी ?
19. बावर्चीखाने से चची ने इमामी को क्यों बुलाया ?
20. इमामी के यह कहने पर कि बीबीजी ने चाय भिजवाई है, चचा ने क्या कहा ?
21. चचा ने इमामी से धीमे स्वर में क्या कहा ?
22. चचा ने इमामी को एक आना क्यों दिया ?
23. निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए :—
    साँप सूँघ जाना, कान पर जूँ रेंगना, दम लेना, गुज़र जाना, बख्श देना ।

संज्ञा

लिंग

1. हिंदी में केवल दो लिंग हैं पुल्लिग और स्त्रीलिंग ।
2. लिंग व्यवस्था आंशिक रूप से स्वाभाविक लिंग पर आधारित है और आंशिक रूप से व्याकरणिक है।
3. अप्राणिवाचक वस्तुओं तथा भाववाचक संज्ञाओं का लिंग कुछ अंश तक रूप के आधार पर निश्चित होता है (आ से अंत होने वाले पुल्लिग) परंतु अधिक अंशों में प्रयोग (Usage) पर ही निर्भर है।

वचन

1. हिंदी में केवल दो वचन हैं—एकवचन और बहुवचन।
2. बहुवचन का प्रयोग आदर में एक व्यक्ति के लिए भी होता है; जैसे 'पिताजी थे'।

पाठ-2; पृष्ठ 2

---

1. हिंदी में संज्ञाओं के दो ही रूप हैं—सरल और तिर्यक।
2. सरल रूप संज्ञा का वह रूप है ; जिसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे लड़का आया।

3. तिर्यक रूप संज्ञा का वह रूप है ; जिसमें संज्ञा में कुछ परिवर्तन होता है ; जैसे लड़के ने खाना खाया ।

हिंदी संज्ञा में दो कारणों से परिवर्तन होता है :

(1) वचन (ए० व० और ब० व०)

(2) विभक्ति (सरल और तिर्यक)

संज्ञा में वचन और विभक्ति के कारण होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिए संज्ञा के लिंग तथा रूप पर ध्यान देना आवश्यक है । लिंग और रूप संज्ञा में पहले से वर्तमान होते हैं ।

संज्ञा के वचन और विभक्ति परिस्थिति पर आधारित होते हैं । संज्ञा का वचन विशेषण अथवा क्रियापद से जाना जा सकती है । विभक्ति परसर्गों की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति से जानी जा सकती है । सरल विभक्ति में कोई परसर्ग नहीं लगता । तिर्यक विभक्ति में संज्ञाओं के बाद परसर्ग (ने, को, से, में, पर, का आदि) आते हैं । हिंदी में वचन तथा विभक्ति के प्रत्यय एक हैं । रूप रचना की दृष्टि से संज्ञा के चार वर्ग किए जाते हैं।

निम्नलिखित नियमों से ये परिवर्तन स्पष्ट होते हैं :—

वर्ग- 1. नियम (1)—सभी आकारांत पुल्लिग शब्द जैसे घोड़ा, लड़का आदि ।

	ए० व०	ब० व०
सरल विभक्ति	घोड़ा	घोड़े(ए)
तिर्यक विभक्ति	घोड़े(ए)	घोड़ों(ओं)

नोट - प्रत्यय के आने पर इस वर्ग के शब्दों के अंतिम 'आ' का लोप हो जाता है । जैसे :

लड़का+ए=लड़क+ए=लड़के

नियम (2) उपर्युक्त नियम के अपवाद

(1) संबंध वाचक शब्द जैसे काका, नाना, दादा आदि।

(2) संस्कृत के तत्सम शब्द—राजा, पिता आदि।

(3) कुछ देशी शब्द—अगुआ, मुखिया, लाला आदि।

वर्ग-2. नियम (3)—शेष पुल्लिग शब्द

	ए०व०	ब०व०
सरल विभक्ति	घर	घर
तिर्यक विभक्ति	घर	घर(ओं)

वर्ग-3. नियम (4)—इकारांत, ईकारांत तथा या से अंत होने वाले स्त्रीलिंग शब्द—

	ए०व०	ब०व०
सरल	नदी	नदियाँ(आं)
तिर्यक	नदी	नदियों(ओं)

नोट—इन प्रत्ययों को जोड़ते समय निम्नलिखित नियम पर ध्यान देना चाहिए। प्रत्यय के आने पर शब्द के अंत का ई तथा ऊ क्रमशः इ तथा उ हो जाते हैं। तथा शब्दांत के ह्रस्व 'इ' और प्रत्यय के बीच 'या' का आगम होता है। जैसे :

नदी+आँ=नदियाँ

बहु+एँ=बहुएँ

वर्ग-4. नियम (5)—स्त्रीलिंग शब्द जैसे बात, पुस्तक, बहू आदि ।

	ए०व०	ब०व०
सरल	बात	बातें (एँ)
तिर्यक	बात	बातों(ओं)

सरल रूप

संज्ञा के सरल रूपों (परसर्ग रहित) का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है :—

1. क्रिया के कर्ता में

   जैसे : बादशाह का **पारा** चढ़ गया । पाठ- 14; पृ०-31

   (अपवाद के लिए देखिए....परसर्गों का प्रयोग 'ने' पृ०-71)

2. उस विधेय संज्ञा (Predicative Noun) में जो कर्ता के संबंध में कुछ बताती है । जैसे :

   माँस उनका मुख्य **भोजन** है । पाठ-8 ; पृ०-16

3. क्रिया में अप्राणिवाचक कर्म में—जैसे :

   विश्वेश्वर ने श्यामू के गाल पर दो **तमाचे** जड़ कर कहा । पाठ-3 ; पृ०-5

4. क्रिया के प्राणिवाचक कर्म में भी यदि वह किसी विशेष वस्तु के लिए न हो जैसे : **मैं नौकर** ढूंढ़ता हूँ ।

5. द्विकर्मक क्रियाओं के प्रत्यक्ष कर्म में—जैसे :

   'हम एक **रुपया** ही देते हैं ।' पाठ-15 ; पृ०-33

   उन्हें दस-दस **अशर्फियाँ** दे देना । पाठ-14 ; पृ०-30

6. उस विधेय संज्ञा (Predicative Noun) में जो कर्म के संबंध में कुछ बताती है; जैसे :

मैंने उसे **मित्र** बनाया ।

7. कभी-कभी संबोधन में भी जैसे :

'अरे बेटा'

तिर्यक रूप

संज्ञा के विकृत रूप (परसर्ग सहित) कारक चिह्नों अथवा परसर्गों (ने, को, से, में, पर तथा का) की सहायता से व्याकरणिक संबंध बताते हैं । परसर्ग सदैव संज्ञा के बाद आते हैं ।

परसर्गों का प्रयोग

'ने' :

'ने' का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है :—

1. जब (1) कोई सकर्मक क्रिया (2) भूतकालिक कृदंत से बनी हुई होती है तब उसके कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है जैसे :

मेरी जेब **किसने** काटी ? पाठ-14 ; पृ० 31

2. अकर्मक क्रिया के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता । जैसे :
कुछ सोचता हुआ वह अपने कमरे में गया । पाठ- 2 ; पृ० 3

3. जब क्रिया भूतकालिक कृदंत से बनी हुई नहीं होती है तब भी 'ने' का प्रयोग नहीं होता । जैसे :
"नही, मैं किसी से नहीं कहूँगा" पाठ- 3 ; पृ० 5

4. भूलना, बोलना, लाना आदि क्रियाओं के साथ 'ने' नहीं लगता ।

5. 'समझना' तथा 'बकना' क्रियाओं के साथ 'ने' लगाना या न लगाना ऐच्छिक है जैसे : "मैंने समझा कि आप यह जानते हैं" अथवा "मैं समझा कि वह आ गया है ।"

6. जब कर्ता में 'ने' लगाया जाता है तब अन्विति कर्म और क्रिया में होती है न कि कर्ता और क्रिया में। जैसे :

'रात को ही तो इसने तंबाकू के लिए मुझसे **पैसे लिए हैं**"। पाठ-17 ; पृ० 42

'को' :

'को' का प्रयोग निम्नलिखित क्रियाओं में होता है :–

1. व्यक्ति जो काम स्वतः करता है उन क्रियाओं के साथ। जैसे :
   (1) **पिताजी को** क्रोध आना स्वाभाविक था। पाठ- 2 ; पृ० 3
   (2) **माँ को** यह गृह कलह पसंद न आई। पाठ- 2 ; पृ० 3
   (3) **मंगली को** मिर्च का अचार बहुत अच्छा लगता था। पाठ- 2 ; पृ० 2

2. प्राणिवाचक कर्म यदि विशिष्ट प्राणी (Particular being) हो तो **उसके साथ** जैसे :

लड़के को बुलाओ।

और उस **बदमाश को** देखो। पाठ 17 ; पृ० 41

3. निरपेक्ष संरचना (Neutral Construction) में क्रिया के कर्म **के साथ** जैसे :

राम ने **लड़के को** देखा।

4. हर अप्रत्यक्ष कर्म (Secondary Object) के साथ जो अधिकतर प्राणिवाचक होता है। जैसे :

माँ लड़के को फल देती है।

उन्हें दस-दस अशर्फियाँ दे देना। पाठ- 14 ; पृ० 30

5. उस क्रिया के कर्म के साथ जिसमें विधेय शब्द (Predicative Word) की अपेक्षा हो। जैसे :

किताबों को गंदा मत करो।

6. समय सूचक संज्ञाओं के साथ जब वे क्रियाविशेषण की तरह प्रयुक्त होती हैं* जैसे :

रात को उनके घर में दीपक नहीं जलता था। पाठ- 10 ; पृ॰ 20

कभी-कभी स्थान वाचक क्रियाविशेषणों के साथ भी 'को' मिलता है। जैसे :

"**जहाँ को** गई मैं"। पाठ 12 ; पृ॰ 25

7. प्रयोजन के अर्थ में जैसे :

"पुस्तकें **पढ़ने** को मिलती हैं।" पाठ- 8 ; पृ॰ 16

8. विवशता सूचक वाक्यों में अथवा चाहिए के साथ। जैसे :

"मेरे **नाती पोतों को** कोई रोज़गार धंधा नहीं करना पड़ेगा।" पाठ- 4 ; पृ॰ 6

हमें (**हमको**) सब धर्मों के प्रति समता का भाव रखना चाहिए। पाठ- 5 ; पृ॰ 8

'से' :

'से' का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है : -

1. कर्म-वाच्य (Passive) और भाव-वाच्य (Impersonal Voice) में क्रिया के साथ कर्ता जैसे :—
राम से पत्र नहीं लिखा जाता।

2. बताना, कहना, पूछना, माँगना आदि क्रियाओं के अप्रत्यक्ष कर्म के साथ जैसे :
उन्होंने **पिताजी से कहा**। पाठ- 2 ; पृ॰ 3

---

* सुबह और सबेरे के साथ कभी 'को' नहीं लगाया जाता। जैसे :
अगले दिन **सुबह** चौधरी हरसुख ने फिर घोड़ी माँगी। पाठ-15 ; पृ॰ 32
दूसरे दिन वह बहुत **तड़के** उठा। पाठ-15 ; पृ॰ 32

कभी-कभी 'शाम', 'रात' आदि के साथ भी 'को' छोड़ दिया जाता है। जैसे :
रात गर्मी थी।

3. साधन, उपकरण (Instrument) अथवा कर्तृत्व (Agency) के अर्थ में जैसे :

(1) ललचाई **आँखों से** सब की ओर देखता है। पाठ- 7 ; पृ० 13

(2) तुम्हारी उँगलियाँ **तवे से** जल जाती थीं। पाठ- 7 ; पृ० 13

(3) नाम जवाहर **भैया से** लिखा लो। पाठ-3 ; पृ० 5

4. रीति (Manner) * में जैसे :

माँ उसे प्रेम से दोनों वक्त खाना खिलाती थीं। पाठ-2 ; पृ० 2

एक पड़ोसिन ने **बड़ी कठिनाई से** उसे अपने पास रखा। पाठ-3 ; पृ० 4

5. कारण या उत्पत्ति में जैसे :—

(1) धूप से पत्ते सूख गए।

(2) मैं कुत्ते से डरता हूँ।

(3) यमुना के **नाम से** बादशाह की आँखें खिल गईं। पाठ-14 ; पृ० 30

6. साहचर्य और विरोध में जैसे :

मैं जाकर अपनी प्रजा से मिलूँगा। पाठ-14 ; पृ० 28

7. वियोग या अलग होने के अर्थ में जैसे :

निकल जाओ मेरे **घर से**। पाठ- 2 ; पृ० 3

8. स्थान और काल के प्रारम्भ में :

(1) जहाँ **पहले से** ही कीचड़-गोबर से बनी गेंदें तैयार रखी हुई होती हैं।
पाठ- 9 ; पृ० 18

(2) मिज़ोउरम को **अठारह सौ चालीस से** ही उतार-चढ़ाव देखने पड़ रहे हैं।
पाठ-13 ; पृ० 26

---

* कभी-कभी इस प्रकार के प्रयोग में 'के साथ' भी आता है ; जैसे :

विनय के साथ पूछा। पाठ- 4 ; पृ० 7

9. अवधि (Duration) में (जब काम लगातार होता रहा हो) जैसे :

वह **चार साल से** यहाँ है।

10. तुलना **में** जैसे :

(1) **सबसे** प्रसन्न है हामिद। पाठ- 7 ; पृ० 12

(2) **उससे** अधिक भी कुछ था। पाठ- 2 ; पृ० 2

'में' :

'में' का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है :

1. किसी वस्तु में स्थिति (Location) में जैसे :

पाँव में जूते नहीं हैं। पाठ- 7 ; पृ० 12

2. अवधि (Duration) जैसे :

तीन दिन में यह काम कर दो।

3. मूल्य में जैसे :

कितने **पैसे में** ? पाठ- 7 ; पृ० 13

4. दो से अधिक वस्तुओं के साथ तुलना में जैसे :

इन **लड़कों में** सबसे अच्छा राम है।

'पर' :

'पर' का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है :

1. किसी वस्तु पर स्थिति में जैसे :

ज़रा **छत पर** तो जाओ। पाठ- 2 ; पृ० 3

2. किसी कार्य के होने के समय में जैसे :

समय-समय पर । पाठ-10 ; पृ० 20

3. कार्य होने के क्रम (Sequence of Action) **में** जैसे :

कुछ बड़ा होने पर मैं रिश्ते समझने लगा। पाठ-2 ; पृ० 2

4. कारण में जैसे :

व्यापारियों के धोखा देने पर मिज़ोलोग लूटपाट भी करते थे। पाठ-13 ; पृ० 27

5. 'विश्वास करना, दया करना' आदि संयुक्त क्रियाओं के कर्म में जैसे :

जीवों पर दया करो।

'का' :

'का' का प्रयोग निम्नलिखित संबंधों को बताने के लिए किसी संज्ञा या सर्वनाम और दूसरी संज्ञा के बीच होता है जो बाद में आती है।

यदि बाद में आने वाली संज्ञा स्त्रीलिंग होती है तो 'का' के स्थान पर 'की' आता है। यदि वह संज्ञा पुल्लिग बहुवचन होती है या एकवचन के तिर्यक रूप में होती है तो 'का' के स्थान पर 'के' आता है।*

1. स्वामित्व और संबंध में जैसे :

पुरखों का एक घर। पाठ- 15 ; पृ० 32

धन्नो की माँ। पाठ- 15 ; पृ० 32

दोनों देशों के अंतरिक्ष यात्रियों ने। पाठ- 16 ; पृ० 37

इन नौकरों के कान पर। पाठ- 17 ; पृ० 41

2. रचना के अर्थ में जैसे :

सोने का कड़ा

3. मूल्य और नाप (काल और स्थान) में जैसे :

एक रुपए का कपड़ा

एक मील की दूरी

पाँच वर्ष का लड़का

---

* स्वामित्व का भाव व्यक्त करने में 'के' का विशिष्ट प्रयोग मिलता है जैसे :

उनके एक ही बेटी थी। पाठ- 15 ; पृ० 32

4. स्रोत- उद्गम या कारण में जैसे :

छूत के रोग

5. किसी कार्य के कर्ता में जैसे :

नौकर का काम

6. किसी कार्य के कर्म में जैसे :

बच्चों की शिक्षा

7. किसी पूरे के भाग में जैसे :

रोटी का टुकड़ा

8. प्रयोजन में जैसे :

पीने का पानी

9. विशिष्टता में जैसे :

बच्चे की सरलता

संबोधन

संबोधन के रूपों में केवल विकारी रूपों की अनुनासिकता समाप्त हो जाती है। जैसे :

ओ लड़की !

सर्वनाम

1. हिंदी में सर्वनाम वचन और कारक से प्रभावित होते हैं, परंतु लिंग से नहीं।

2 हम का प्रयोग अक्सर मैं (एकवचन) के लिए भी होता है।

'तुम' और 'आप' का प्रयोग एकवचन और बहुवचन दोनों में होता है। अतः निश्चित रूप से बहुवचन बताने के लिए 'हम', 'तुम' और 'आप' के साथ 'लोग' ज़ोड़ा जाता है।

3. 'आप' शब्द का प्रयोग आदर देने के लिए किया जाता है। अतः इसके साथ सदा बहुवचन क्रियाएँ आती हैं।

4. उपस्थित व्यक्ति या पुस्तकों में लेखक के लिए भी 'आप' का प्रयोग होता है। जैसे :

"आप चौधरी रसूल सिंह हैं।" पाठ- 15 ; पृ० 33

5. 'तू' एकवचन है और इसका प्रयोग बहुत अधिक स्नेह में मित्रों या छोटे बच्चों के लिए अथवा ईश्वर के लिए किया जाता है, जैसे :

"तू उन्हें वह सारा प्रकाश दे जिसकी उन्हें अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यकता है।" पाठ- 5 ; पृ० 9

6. बल देने के लिए 'ई' या 'ही' सर्वनामों में जोड़ा जाता है। जैसे यही, उसी। तिर्यक बहुवचन रूपों में अंतिम 'ओ' के स्थान पर 'ई' कर दिया जाता है जैसे : उन्होंने कहा।

7. 'कौन' का प्रयोग व्यक्तियों और वस्तुओं दोनों के लिए होता है जबकि 'क्या' का प्रयोग केवल वस्तुओं के लिए होता है। बहुवचन बताने के लिए कौन के स्थान पर 'कौन-कौन' का प्रयोग अक्सर होता है, जैसे : कौन-कौन आए ?

8. 'कोई' और 'कुछ' जब विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं तो व्यक्तियों या वस्तुओं दोनों के लिए आते हैं पर जब संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होते हैं तब कोई व्यक्तियों के लिए आता है और 'कुछ' वस्तुओं के लिए।

9. 'अपना' जब किसी संज्ञा या सर्वनाम का एक बार कर्ता कारक के रूप में किसी वाक्य में प्रयोग हो जाता है तो दुबारा उसी वाक्य में किसी अन्य कारक में उसका उल्लेख होने पर सदा 'अपना' आता है जैसे :

अभागिन अमीना **अपनी** कोठरी में बैठी रो रही है। पाठ- 7 ; पृ० 12

"अगर हमें दूसरे धर्मों का वैसा आदर करना है जैसा हम उनसे अपने धर्म का कराना चाहते हैं" (न कि हमारे)। पाठ- 5 ; पृ० 8

10. 'मैं', 'तुम' आदि सर्वनामों का कर्ता कारक में अक्सर उल्लेख नहीं भी किया जाता, क्योंकि इनके क्रिया रूपों में भ्रम (Ambiguity) की संभावना नहीं है। जैसे :

निकल जाओ ; अभी निकल जाओ। पाठ- 2 ; पृ० 3
अच्छा, मँगा दूँगा। पाठ- 3 ; पृ० 4

11. हमको, उसको आदि सर्वनामों के दो वैकल्पिक रूप मिलते हैं 'हमको' और हमें 'उसको' और 'उसे'। दोनों रूपों का प्रयोग प्रचलित है परंतु जब सर्वनाम और तिर्यक रूप के बीच में कोई शब्द आता है तो 'उसको' वाले रूप का ही प्रयोग होता है जैसे :
'उस आदमी को', 'मुझ अभागे को'।

विशेषण

1. संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं :
   (1) कुछ विशेषण गुण बताते हैं, जैसे : काला
   (2) कुछ विशेषण संख्या बताते हैं, जैसे : पाँच
   (3) कुछ विशेषण परिमाण बताते हैं, जैसे : बहुत
   (4) कुछ विशेषण स्थिति बताते हैं, जैसे : बीमार
   (5) कुछ विशेषण संबंध बताते हैं, जैसे : मेरा
   (6) कुछ विशेषण संकेत करते हैं, जैसे : यह
   (7) कुछ विशेषण प्रश्न बताते हैं, जैसे : कौन सा ?
2. लगभग सभी सर्वनाम विशेषण के रूप में भी काम करते हैं।

3. रूप की दृष्टि से विशेषणों को दो भागों में बाँटा जा सकता है :

वर्ग 1*—आ में अंत होने वाले जैसे : काला

वर्ग 2—शेष जैसे : लाल

4. (१) वर्ग 1** के विशेषणों का अंतिम 'आ' स्त्रीलिंग संज्ञाओं की विशेषता बताते समय ई में बदल जाता है; जैसे : काली साड़ी, काली साड़ी में, काली साड़ियाँ, काली साड़ियों में

(2) निम्नलिखित स्थितियों में यह अंतिम 'आ', 'ए' में परवर्तित होता है।

(क) पुल्लिग बहुवचन संज्ञाओं की विशेषता बताते समय जैसे :

काले लड़के जा रहे हैं।

काले लड़कों को बुलाओ।

(ख) पुल्लिग एकवचन संज्ञाओं के तिर्यक रूप के साथ जैसे :

काले लड़के को बुलाओ।

5. वर्ग 2 के विशेषणों में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे :

लाल साड़ी, लाल कपड़े आदि।

6. जब 'सा' किसी संज्ञा या सर्वनाम के तिर्यक रूप में लगाया जाता है तब इसके रूप आकारांत विशेषणों के समान बदलते हैं। जैसे :

बड़ा सा लोटा, टूटी सी खाट। पाठ- 2, ; पृ० 4

मुझ सा पागल।

---

* इनमें का, रा, या, ना में अंत होने वाले सार्वनामिक विशेषण भी सम्मिलित हैं। जैसे :

उसका, हमारा, अपना।

** कुछ विशेषण इस नियम के अपवाद भी हैं जैसे : बढ़िया, उम्दा, धर्मात्मा।

संख्याएँ

1. हिंदी में 'कोई' और 'एक' का एक विशिष्ट प्रयोग लगभग के अर्थ में भी है।
जैसे :

पचास एक लड़के थे।

कोई सौ लोग होंगे।

कभी-कभी **कोई** और **एक** दोनों साथ भी आते हैं; जैसे : कोई पचास एक आदमी थे।

2. लगभग के अर्थ में संज्ञाओं का जोड़े में प्रयोग बहुत प्रचलित है जैसे : दो-एक तीन-चार, आठ-दस आदि।

"दो-चार दिन रहकर देख लेते हैं"। पाठ-14 ; पृ० 31

क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण क्रिया की विशेषता बताते हैं।

1. ये अधिकांशतः सर्वनामों से बने हुए होते हैं :—
   (क) समय सूचक—अब, कब, जब, तब
   (ख) स्थान सूचक—यहाँ, कहाँ, जहाँ, वहाँ
   (ग) दिशा सूचक—इधर, किधर, जिधर, उधर
   (घ) रीति सूचक—यों, क्यों, ज्यों, त्यों
2. इन सभी क्रिया विशेषणों में बलात्मक निपात 'ही' दो प्रकार से जुड़ता है:—
   (क) स्वतंन्त्र रूप के साथ—उधर+ही=उधर ही
   यों+ही=यों ही
   (ख) क्रिया विशेषण में मिलकर—अब+ही=अभी
   यहाँ+ही=यहीं

3. लेकिन 'कभी' और 'कहीं' को इस वर्ग में नहीं रखा जा सकता। इनके अर्थ में काफी अंतर आ जाता है।

कभी—ever, sometime और at one time

कहीं—'somewhere'

4. कहीं का प्रयोग तुलना के लिए भी होता है—

वह मुझसे कहीं मोटा है।

5. कहीं का प्रयोग नकारात्मक प्रश्न वाले वाक्यों में किसी संभावित घटना या कार्य के संबंध में अनिच्छा बताने के लिए भी होता है—

कहीं वह बीमार न हो।

6. कहीं का एक मुहावरेदार प्रयोग मिलता है। जैसे :

'कमीना कहीं का' पाठ-17 ; पृ० 36

बलात्मक निपात

'ही' और 'भी' दोनों बलात्मक निपात हैं।

1. "अब सब तरफ़ से फूफा पर ही बौछारें पड़ रही थीं।"

अर्थात् "केवल फूफा पर ही बौछारें पड़ रहीं थीं, किसी और पर नहीं।"

पाठ-15 ; पृ० 35

2. मेरे आते ही चोर भाग गया अर्थात जैसे ही मैं आया चोर भाग गया।

3. "लड़की भी बहुत होशियार थी" अर्थात और सब भी होशियार थे और लड़की भी। पाठ-15 ; पृ० 36

4. वह यहाँ आया भी नहीं "he did not even come here."

5. "यह भी कोई वक्त है भले आदमियों को जगाने का ?" पाठ-17 ; पृ० 39

'तो' भी बलात्मक निपात है। इसका प्रयोग हिंदी में बहुत मिलता है।

6. "आपने तो कमाल कर दिया," पाठ-15 ; पृ० 35

निषेध (Negation)

1. न, नहीं और मत नकारात्मक क्रिया विशेषणों में से 'नहीं' का प्रयोग प्रश्नों के उत्तर में किया जाता है। जैसे :

प्रश्न—क्या आप जा रहे हैं ?

उत्तर—नहीं।

अधिक नम्रतापूर्ण उत्तरो में 'जी नहीं' कहा जाता है। 'नहीं जी' में ज़ोर अधिक है। 'नहीं तो' में ज़ोर के साथ-साथ आश्चर्य का भाव भी है। जैसे :

चचा—तंबाकू के नाम से पैसे लेकर रेवड़ियाँ उड़ाता है।

इमामी (रोकर)—नहीं तो। पाठ-17 ; पृ० 42

नहीं का निश्चयात्मक (Indicative) और धारणात्मक (Presumptive) वृत्तियों (Moods) में प्रयोग किया जाता है परंतु इच्छात्मक (Optative) और आज्ञात्मक (Imperative) में 'नहीं' का प्रयोग नहीं होता है।

तू नहीं जा। }
तू नहीं जाए। } ये दोनों वाक्य अशुद्ध हैं।

2. 'मत' का प्रयोग केवल अज्ञात्मक वृत्ति (Imperative Mood) में होता है, लेकिन यह प्रयोग बहुत विनम्र नहीं है। जैसे :

तुम मत जाओ।

3. इच्छात्मक वृत्ति (Optative Mood) में केवल न का प्रयोग होता है। जैसे :

वह न जाए।

मैं न जाऊँ।

4. 'न' का प्रयोग उन प्रश्न वाक्यों के अंत में भी होता है जहाँ केवल स्वीकारात्मक उत्तर की अपेक्षा होती है। जैसे :

आप चल रहे हैं न ?

'न' का प्रयोग आग्रह के लिए वाक्यों के अंत में होता है। जैसे :

आप भी चलिए न ?

न............न (neither........nor) का प्रयोग संयोजक के रूपक में सभी कालों और वृत्तियों (moods) में होता है। जैसे :

चौधरी हरसुख के पास न खेत थे न खलियान। पाठ-15 ; पृ॰ 32

5. 'हाँ और नहीं' का प्रयोग संज्ञा (अधिकतर स्त्री॰) के रूप में भी होता है। जैसे :

मैंने हाँ कर दी।

मैंने नहीं कर दी।

क्रिया

अकर्मक और सकर्मक क्रिया

क्रिया में किसी कार्य के होने का भाव रहता है।

1. कुछ क्रियाओं के साथ कर्म की आवश्यकता पड़ती है, उन्हें सकर्मक क्रियाएँ कहते हैं। जैसे :

किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं। पाठ- 7 ; पृ॰ 13

2. कुछ क्रियाओं के साथ कर्म का रहना आवश्यक नहीं होता है, वे अकर्मक क्रियाएँ हैं। जैसे :

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद आई है। पाठ- 7 ; पृ॰ 12

3. कुछ क्रियाएँ सकर्मक होती हैं किंतु उनका प्रयोग अकर्मक क्रियाओं की तरह होता है। जैसे :

लाना, बोलना, भूलना।

' मेले से हामिद चिमटा लाया। पाठ 7 ; पृ॰ 12

4. कुछ धातुएँ तटस्थ और सकर्मक दोनों रूप रखती हैं। जैसे :

तटस्थ	सकर्मक
कटना	काटना
खुलना	खोलना
फटना	फाड़ना
बिकना	बेचना

बादशाह की जेब **कट** गई। पाठ-14 ; पृ॰ 31

जेब किसने **काटी** ? पाठ-14 ; पृ॰ 31

घर में दीपक नहीं **जलता** था। पाठ-10 ; पृ॰ 20

लोग राजा का पुतला **जलाते** हैं। पाठ-9 ; पृ॰ 19

इन तटस्थ (neuter) क्रियाओं को मूल कर्मवाच्य (natural passive) भी कहते हैं।

वाच्य

क्रिया के रूपों द्वारा कर्ता का कार्य से संबंध बताना ही वाच्य है।

(1) **कर्तृ वाच्य :**

यह बताता है कि कर्ता उपस्थित है, वह कुछ कर रहा है या उसे कुछ हो रहा है। यही कर्ता व्याकरणिक और तार्किक (काम को करने वाला) दोनों होता है।

"वह माँ के ऊपर जा गिरा" पाठ- 3 ; पृ॰ 4

(2) **कर्मवाच्य :**

यह केवल सकर्मक क्रियाओं पर ही लागू होता है
यहाँ कार्य कर्ता पर घटित होता है। जैसे :

रावण मारा गया।

व्याकरणिक कर्ता ही तार्किक (काम करने वाला) कर्ता नहीं होता वरन् वह तार्किक कर्म (वह व्यक्ति या वस्तु) होता है, जिसकी ओर कार्य का संकेत होता है।

'रावण' व्याकरणिक कर्ता है, पर वस्तुतः वह काम को करने वाला तार्किक कर्ता नहीं है। लेकिन यह तार्किक कर्म भी है, क्योंकि मारे जाने का कार्य उसी की ओर संकेत करता है।

"नए तरीके के बूचड़खाने खोले जा रहे हैं।" पाठ- 8 ; पृ॰ 16

"पुतला जलाया जाता है।" पाठ- 9 ; पृ॰ 19

(3) **भाव वाच्य :**

यह कर्मवाच्य का एक प्रकार है, जो केवल अकर्मक क्रियाओं पर ही लागू होता है। इसमें या तो कर्ता होता ही नहीं (तब क्रिया द्वारा किया गया कार्य ही कर्ता के रूप में काम करता है) या फिर यदि कर्ता होता है, तो वह 'से' के साथ तिर्यक रूप में आता है।

'मुझसे चला नहीं जाता' में 'मुझसे' कर्ता है।

'अब चला जाए' में कर्ता स्पष्ट नहीं है।

प्रेरणार्थक :

1. अधिकांश अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं को थोड़े से रूप परिवर्तन के साथ प्रेरणार्थक बनाया जा सकता है—

करना—कराना ; पीटना—पिटवाना

तू कुछ पत्तलें बना दे। पाठ- 15 ; पृ॰ 34

सीमेंट के हौज बनवाए जाते हैं। पाठ- 9 ; पृ॰ 18

2. प्रेरणार्थक क्रियाएँ दो स्थितियाँ बनाती हैं—

(क) कर्ता द्वारा दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करना प्रथम प्रेरणार्थक है—

राम गाना **सुनता** है। महमूद सिपाही **लेता** है। पाठ- 7 ; पृ० 13

हम आदर **करना** चाहते हैं। पाठ- 5 ; पृ० 8

नाम जवाहर भैया से **लिखा** लो। पाठ- 3 ; पृ० 5

(ख) कर्ता द्वारा एक व्यक्ति के लिए दूसरे किसी से काम कराना द्वितीय प्रेरणार्थक (द्वि० प्रे०) है।

राम मोहन को लता से गाना **सुनवाता** है।

नोटः—सभी क्रियाओं के प्रथम और द्वितीय प्रे० रूप नहीं बनते।

(i) जिस प्र० प्रे० क्रिया का कर्ता कार्य में सक्रिय योगदान देता है, उसका द्वि० प्रे० रूप भी बनता है। **जैसे** : पढ़ा (प्र०प्रे०) ; पढ़वा (द्वि० प्रे०)।

(ii) किंतु जिस प्र० प्रे० क्रिया का कर्ता सक्रिय नहीं रहता, उसके प्र० प्रे० और द्वि० प्रे० रूप अलग-अलग अर्थ नहीं देते। जैसे :

'करा', 'करवा' (प्र० प्रे०)

काल

क्रियाओं के रूप जो कार्य का समय बतलाते हैं।

1. **वर्तमान काल :**

वह कार्य जो तत्काल होने वाला है या हो रहा है अथवा कोई सामान्य सत्य बताता है।

ललचाई आँखों से **देखता** है। पाठ- 7 ; पृ० 13

निरंतरता—बच्चे आनन्द **ले रहे हैं**। पाठ-7 ; पृ॰ 12

औरतें रो **चीख रही हैं**। पाठ- 3 ; पृ॰ 4

सामान्य सत्य—अंधता **मिट जाती है**। पाठ- 5 ; पृ॰ 8

2. **भूतकाल :**

पहले हुए कार्य को बताता है।

श्यामू ने **देखा**। पाठ- 3 ; पृ॰ 4

चिमटा कहाँ से **आया** ? पाठ- 7 ; पृ॰ 13

निरंतरता - वह पड़ा **सो रहा था**। पाठ- 14 ; पृ॰ 31

3. **भविष्यकाल :**

आगे कभी होने वाले कार्य को बताता है।

जहाज़ उलट **जाएगा**। पाठ- 4 ; पृ॰ 6

मैं मर **जाऊँगा**। पाठ- 4 ; पृ॰ 6

माल डूब **जाएगा**। पाठ- 4 ; पृ॰ 6

4. **सातत्यबोधक भूतकाल :**

वह कार्य जो पहले कभी नियमित रूप से होता था।

वे **बड़बड़ाते जाते थे**। पाठ-14 ; पृ॰ 31

वे पढ़ा **करते थे**। पाठ-10 ; पृ॰ 20

यमुना प्यारी **लगती थी**। पाठ-14 ; पृ॰ 30

5. **पूर्ण वर्तमान काल :**

वह कार्य जो पूरा हो गया हो लेकिन जिसका प्रभाव अब भी है।

उन्होंने मेरी जीवन दृष्टि को विशाल **बनाया है**। पाठ- 5 ; पृ॰ 8

मेरी श्रद्धा कम नहीं **हुई है**। पाठ- 5 ; पृ॰ 8

ईद **आई है**। पाठ- 7 ; पृ॰ 12

6. **पूर्ण भूतकाल :**

कोई किया हुआ कार्य या स्थिति जो पहले ही किसी समय पूर्ण हो चुकी हो।

गरीबी छाई हुई **थी**। पाठ-10 ; पृ॰ 20

हमने दीवाने खास **बनवाया था**। पाठ-14 ; पृ॰ 29

संयुक्त क्रिया—क्रिया + क्रिया

दो या अधिक क्रियाएँ जब एक ही साथ आती हैं, तो उस संयोजना को संयुक्त क्रिया कहते हैं। इस संयोजना की प्रथम क्रिया (Main Verb) होती है तथा अन्य क्रियाएँ गौण (Helping Verb)। ये कभी-कभी दो और कभी एक ही कार्य का संकेत करती हैं।

'वह सो गया', 'सो' = मु॰ क्रि॰ और 'गया' गौण क्रिया।

मुख्य क्रिया मुख्यतः अर्थ को द्योतित करती है तथा व्याकरणिक प्रभाव अधिकांश स्थितियों में गौण क्रिया पर होता है।

'वह सो गई', 'वे सो गए' आदि।

1. मुख्य क्रिया सकर्मक, अकर्मक या प्रेरणार्थक भी हो सकती है।
2. गौण क्रिया प्रेरणार्थक नहीं होती।
3. यदि मु॰क्रि॰ और गौण क्रिया दोनों ही सकर्मक हों तभी भूतकाल में 'कर्त्ता—ने' का प्रयोग होगा अन्यथा नहीं।

मुख्य क्रिया के आधार पर संयुक्त क्रियाओं के निम्नलिखित भेद हो सकते हैं।

1. **मुख्य क्रिया धातु के रूप में :**

कुछ संयुक्त क्रियाएँ दो कार्य व्यक्त करती हैं :—

धातु + आना (कार्य की पूर्णता) **वह घास ले आता था**। पाठ- 2 ; पृ॰ 2

बादशाह की **आँख भर आई**। पाठ- 14 ; पृ॰ 29

लौट आना। पाठ- 4 ; पृ॰ 7

घुस आना । पाठ- 2 ; पृ० 3

उतर आना आदि । पाठ- 3 ; पृ० 5

+**जाना** (कार्य की पूर्णता)

तुम घर से **निकल जाओ** । पाठ- 2 ; पृ० 3

तूफान **आ गया** । पाठ- 2 ; पृ० 2

उलट जाना । पाठ- 4 ; पृ० 6

मर जाना । पाठ- 4 ; पृ० 6

डूब जाना । पाठ- 4 ; पृ० 6

जाग जाना । पाठ-10 ; पृ० 21

सूख जाना । पाठ- 3 ; पृ० 4

लग जाना आदि । पाठ- 7 ; पृ० 12

+**सकना** (सामर्थ्य)

वह अपनी इच्छा न **रोक सका** । पाठ- 3 ; पृ० 4

मैं तुम्हें अब नहीं **रख सकता** । पाठ- 2 ; पृ० 3

समझ सकना । पाठ- 2 ; पृ० 2

हो सकना । पाठ- 4 ; पृ० 7

थक सकना । पाठ- 7 ; पृ० 12

कर सकना आदि । पाठ- 11 ; पृ० 21

+**देना** (पूर्णता) किसी और के लिए काम करना

सीधा आर्डर **दे दिया** । पाठ- 2 ; पृ० 3

मुझे एक पतंग **मंगा दो** । पाठ- 3 ; पृ० 4

खोल देना । पाठ- 8 ; पृ० 16

दे देना। पाठ-14 ; पृ० 30

जड़ देना आदि। पाठ-17 ; पृ० 41

+**लेना** (पूर्णता) अपने लिए काम करना

मैंने **जान लिया था।** पाठ- 2 ; पृ० 2

दो-चार दिन रहकर **देख लेते हैं।** पाठ-14 ; पृ० 31

क्यों नहीं कुछ लेकर **खा लेता।** पाठ- 7 ; पृ० 13

+**बैठना** (बिना सोचे अनिच्छा से या एकाएक कार्य करना)।

वे अपनी बैठक में **जा बैठे।** पाठ- 2 ; पृ० 3

+**चुकना** (पूर्णता)

पुल **बन चुके** हैं। पाठ- 8 ; पृ० 16

बिजली **पहुँच चुकी** है। पाठ- 8 ; पृ० 16

उनकी जेब **कट चुकी** थी। पाठ-14 ; पृ० 31

+**पड़ना** (एकाएक कार्य होना)

खिलौना हाथ से **छूट पड़े तो।** पाठ- 7 ; पृ० 13

ड्रम बिलकुल तोप **जान पड़ता है।** पाठ- 9 ; पृ० 18

बोल पड़ना। पाठ-14 ; पृ० 28

चल पड़ना आदि। पाठ-14 ; पृ० 31

+**चलना**

मुझे हिंदुस्तान **ले चलो।** पाठ-14 ; पृ० 28

+**पाना** (सामर्थ्य)

कितने बरसों बाद आगरा को **देख पाया।** पाठ-14 ; पृ० 29

2. **मुख्य क्रिया भावार्थ संज्ञा के रूप में :**

इसमें दो भेद हैं :—

(1) भा० सं० का अपरिवर्तित रूप—**जाना पड़ा।**

(2) **भा० सं० का परिवर्तित रूप—जाने लगा।**

(1) भावर्थक संज्ञा अपरिवर्तित रूप में :—

(क) यदि भा० सं० सकर्मक हो और विशेषण की तरह प्रयुक्त हो तो उस पर कर्म के लिंग, वचन का प्रभाव पड़ता है।

संचिग को **हार** माननी पड़ती थी।	पाठ-10 ; पृ० 21
आपको टिकट लेना पड़ेगा।	पाठ-14 ; पृ० 29

(ख) यदि भा० सं० अकर्मक हो तो वह सदा पुल्लिग एकवचन रूप में रहता है।

मैं यहाँ नहीं **रहना चाहता।**	पाठ-14 ; पृ० 28
मैं यहाँ **ठहरना नहीं चाहता।**	पाठ-14 ; पृ० 31

(2) भावार्थक संज्ञा परिवर्तित रूप में :

+लगना

लोग अर्थी **उठाने लगे।**	पाठ- 3 ; पृ० 4
वह **कहने लगा।**	पाठ- 3 ; पृ० 4
रहने लगना।	पाठ- 3 ; पृ० 4
समझने लगना।	पाठ- 2 ; पृ० 2
चिल्लाने लगना।	पाठ- 4 ; पृ० 6
बहने लगना आदि।	पाठ- 7 ; पृ० 14

+देना

उसे नहीं **जाने दिया गया।**	पाठ- 3 ; पृ० 4
मैं नहीं **ले जाने दूँगा।**	पाठ- 3 ; पृ० 4

3. **मुख्य क्रिया वर्तमानकालिक कृदंत के रूप में :**

धातु में—ता/-ती/-ते/ (कर्ता या कर्म के लिंग, वचन के अनुसार) जुड़ने से मुख्य

क्रिया वर्तमान काल में रहती है।

भोला **कहता गया**।	पाठ- 3 ; पृ० 5
वह मन ही मन **सोचता जाता**।	पाठ- 4 ; पृ० 6
देता जाना।	पाठ- 7 ; पृ० 14
गिरता जाना।	पाठ- 10 ; पृ० 21
रटता जाना।	पाठ-10 ; पृ० 21
आता जाना।	पाठ-14 ; पृ० 29

4. **मुख्य क्रिया भूतकालिक कृदंत के रूप में :**

इसमें मुख्य क्रिया भूतकाल में रहती है, किंतु सामान्य और तिर्यक दोनों रूपों में आती है। जब वह सामान्य रूप में रहती है, तब उसमें कर्ता या कर्म के लिंग के अनुसार रूप परिवर्तन होते हैं।

(1) मु० क्रि० सामान्य रूप में :—

उसमें रंग नहीं **मिलाया जाता**।	पाठ- 9 ; पृ० 18
होली बर्मा में **खेली जाती** है।	पाठ- 9 ; पृ० 18
रखा जाना।	पाठ- 9 ; पृ० 18
बनाया जाना।	पाठ-13 ; पृ० 27
पढ़ा करना।	पाठ-10 ; पृ० 20
मँगा देना।	पाठ- 3 ; पृ० 4

(2) मु० क्रि० तिर्यक रूप में :

उसकी माँ सफेद कपड़ा **ओढ़े लेटी है**।	पाठ- 3 ; पृ० 4

संयुक्त क्रिया :—क्रिया + क्रिया + क्रिया

जंगल को **छोड़ दिया जाता था**।	पाठ- 8 ; पृ० 16

प्रतिमा **जला दी जाती है** ?	पाठ- 9 ; पृ० 19
मिज़ोउरम क्षेत्र दो हिस्सों में **बाँट दिया गया**।	पाठ-13 ; पृ० 27
उत्तरी भाग असम में **जोड़ दिया गया**।	पाठ-13 ; पृ० 27
यह क्या **बना दिया गया है** ?	पाठ-14 ; पृ० 30
रूजवेल्ट **पढ़ लिया करते**।	पाठ-10 ; पृ० 20
इसलिए **माना जा सकता है**।	पाठ-13 ; पृ० 27

नामिक संयुक्त क्रिया (Nominal Compound)—संज्ञा/विशे० + क्रिया

कई स्थितियों में संज्ञा और विशेषण क्रियाओं में जुड़कर संयुक्त रूप बनाते हैं। इस स्थिति में वे अपना स्वतंत्र अर्थ छोड़कर उस क्रिया का एक अंश बन जाते हैं और उनका संबंध वाक्य के किसी अन्य शब्द से नहीं रह जाता। इन्हें Conjunct भी कहते हैं।

संज्ञा + क्रिया

नागालैंड ने आशातीत **उन्नति की है**।	पाठ- 8 ; पृ० 15
जनजातियाँ उद्योगों का **विकास कर रही हैं**।	पाठ- 8 ; पृ० 15
गुजारा करना।	पाठ- 8 ; पृ० 15
व्यापार करना।	पाठ- 4 ; पृ० 6
प्यार करना।	पाठ- 7 ; पृ० 13
दिखाई देना आदि।	पाठ-13 ; पृ० 26

विशेषण + क्रिया

बादशाह की यह बात बहुत **बुरी लगी**।	पाठ-14 ; पृ० 29

कृदंत (Participles)

ये कृदन्त क्रियाकर विशेषण हैं, जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, लेकिन उनमें क्रिया के कुछ लक्षण रह जाते हैं। ये दो प्रकार के हैं—वर्तमान

कालिक और भूतकालिक। ये दोनों ही अपने विशेष लिंग, वचन और कारक के अनुसार रूप बदलते हैं।

(1) वर्तमान कालिक—इसमें धातु में—ता/-ती/-ते जुड़ता है, उसके बाद जाने वाली सहायक क्रिया 'हुआ' भी विशेष्य के लिंग वचन से प्रभावित होती है।

माथे का पसीना **पोंछते हुए** बादशाह बोले। पाठ-14 ; पृ० 28

बीरबल **हाँफते हुए** कमरे में दाखिल हुए। पाठ-14 ; पृ० 28

धक्कम-धक्का **करती हुई** भीड़ आगे बढ़ती है। पाठ- 9 ; पृ० 19

नोट—(क) यदि मुख्य क्रिया सकर्मक हो तो भूतकाल की संरचनाओं में कर्ता + 'ने' के साथ-साथ यह वर्त० कालिक कृदंत तथा बाद में आने वाली सहायक क्रिया भी सदा तिर्यक रूप में आती है।

बीरबल ने **दिलासा देते हुए कहा**। पाठ-14 ; पृ० 28

(ख) कभी-कभी पश्चगामी सहायक क्रिया (हुआ/हुई/हुए) लुप्त रहती हैं-

दूसरों को खिलौने **लेते** देखकर इसका मन ललचाया होगा।

पाठ- 7 ; पृ० 14

बादशाह की **कड़कती** आवाज सुनकर बीरबल की कुछ न चली।

पाठ-14 ; पृ० 28

(2) भूतकालिक कृदंत—यह साधारण विशेषण की तरह भी प्रयुक्त हो सकता है तथा भूतकाल में होता है। भू० का० कृ० अपनी पश्चगामी सहायक क्रिया 'हुआ' के साथ ही अपने विशेष्य के लिंग-वचन से प्रभावित होता है—

जनता के **चुने** हुए प्रतिनिधि आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

पाठ- 8 ; पृ० 15

ये गेंदें तैयार **रखी** हुई होती हैं। पाठ- 9 ; पृ० 18

बनी हुई इमारत । पाठ-11 ; पृ० 22

भरा हुआ । पाठ-17 ; पृ० 42

कमर झुकी हुई । पाठ- 7 ; पृ० 13

छोड़े हुए । पाठ-14 ; पृ० 28

नोट—(क) नकारात्मक तत्व 'बिना' के साथ जब यह प्रयुक्त होता है तो सदा तिर्यक रूप में रहता है :—

बिना गए या गए बिना ।

(ख) कभी-कभी पश्चगामी सहायक क्रिया लुप्त रहती है ।

अमीना कोठरी में **बैठी** रो रही है । पाठ- 7 ; पृ० 10

भीगी होली । पाठ- 9 ; पृ० 18

बनी गेंद । पाठ- 9 ; पृ० 18

वर्णित । पाठ- 9 ; पृ० 19

(ख) कभी-कभी हुआ लुप्त होने पर तिर्यक रूप भी मिलता है—

उसकी माँ सफेद कपड़ा ओढ़े जमीन पर लेटी है । पाठ- 3 ; पृ० 4

विशिष्ट भूत (Absolutives)—

यह धातु में '—कर' जुड़कर बनता है ।

इसे **उठाकर** कहाँ लिए जा रहे हो । पाठ-3 ; पृ० 4

श्यामू को **धमकाकर** वे बोले । पाठ- 3 ; पृ० 5

जड़कर । पाठ- 3 ; पृ० 5

जाकर । पाठ- 4 ; पृ० 6

सहकर । पाठ-10 ; पृ० 20

हिलाकर । पाठ-13 ; पृ० 26

डालकर। पाठ-14 ; पृ० 29

लगाकर। पाठ- 9 ; पृ० 19

नोट :—(1) इसमें क्षेत्रीय प्रभाव के कारण '—कर के' का प्रयोग भी मिलता है— वह **जाकर के** बोला। उसने हाथ **छूकर के** कहा।

(2) कभी-कभी—'कर' लुप्त रहता है।

यह चिमटा उठा लाया। पाठ- 7 ; पृ० 13

मैंने उसे **जा** पकड़ा। पाठ-14 ; पृ० 31

+वाला

कृदंतों में—वाला का प्रयोग बहुत अधिक मिलता है। यह संज्ञा और क्रियार्थक संज्ञा (तिर्यक रूप) में जुड़कर विशेषण की तरह कार्य करता है तथा विशेष्य के लिंग, वचन से प्रभावित होता है। यह 'कोई' काम करने वाला या 'किसी वस्तु से संबद्ध व्यक्ति' की ओर संकेत करता है।

विविध धर्मों में **पाया जाने वाला** तत्व खोजने की कोशिश कर रहा हूँ। पाठ- 5 ; पृ० 8

लेकिन कैरो पीछे **हटने वाले** नहीं थे। पाठ-10 ; पृ० 21

बड़ी **तोंद वाले** सेठ। पाठ- 7 ; पृ० 13

सुंदर लगने वाले इस क्षेत्र। पाठ-13 ; पृ० 26

भावार्थक संज्ञा (Infinitives)

क्रिया का वह रूप है जो क्रिया का आभास ही देता है लेकिन वाक्य का विधेय भाग नहीं बनाता। धातु में—ना जोड़कर ये संज्ञा और विशेषण दोनों रूपों में प्रयोग में आता है।

उन्हें **पहचानना** मुश्किल हो जाता है। पाठ- 9 ; पृ० 18

अपने दृष्टिकोण से **समझना** सिखाया है। पाठ- 5 ; पृ० 9

उनके लिए इस शौक को **निभाना** कठिन हो गया। पाठ-10 ; पृ० 20

तिर्यक रूप : परसर्ग से पूर्व ये तिर्यक रूप में आते हैं—

कागज बनाने व गन्ना **पेरने के** कारखाने । पाठ- 8 ; पृ० 16

खर्च अपने आप उठाने का फैसला किया । पठा-10 ; पृ० 21

नोट :—(1) भावार्थक संज्ञा में कर्म के लिंग वचन के अनुसार रूप परिवर्तन करके भी प्रयोग किया जाता है ।

काफी **पीना** चाहिए—काफी **पीनी** चाहिए ।

केले **लाना** चाहिए । केले **लाने** चाहिए ।

(2) भावार्थक संज्ञा (तिर्यक रूप) '—वाला' रूप वाली संरचना में विशेषण की तरह कार्य करती है ।

बड़ी **तोंद वाले** सेठ । पाठ- 7 ; पृ० 13

सुंदर **लगने वाले** इस क्षेत्र । पाठ-13 ; पृ० 26

वृत्ति (Mood)

यह क्रिया का वह रूप है जो कार्य की रीति व्यक्त करता है । हिंदी में इसके तीन प्रकार हैं :—

(1) **निश्चयात्मक** (Indicative)

इसमें कोई कार्य एक तथ्य के रूप में आता है या उसके संबंध में पूछताछ होती है ।

व्यापारी घबड़ा गया । पाठ- 4 ; पृ० 6

तुम्हारे बाप-दादे कहाँ हैं ? पाठ- 4 ; पृ० 6

(2) **संभावनात्मक** (Subjunctive)

इसमें निम्नलिखित भाव होते हैं :—

(क) इच्छा, आकांक्षा, परामर्श आदि । (Optative)

नागरिकों का कर्तव्य है कि वे मतदान के अधिकार का प्रयोग करें ।

पाठ-11 ; पृ॰ 22

हम लोग किसके अंदर चले । पाठ-14 ; पृ॰ 29

(ख) अनुमान (Potential)

जैसे कमबख्तों को साँप सूँघ गया हो , पाठ-17 ; पृ॰ 41

(ग) अपेक्षा (Contingent)

कुछ तो वक्त का ख्याल रखा होता । पाठ-17 ; पृ॰ 40

(घ) धारणा (Presumptive)

उसके यहाँ फूफा बारात में नहीं आता होगा । पाठ-15 ; पृ॰ 35

(3) आज्ञात्मक (Imperative)

इन संरचनाओं में आज्ञा, अनुरोध, चेतावनी, वर्जना आदि भाव होते हैं । इसमें अधिकतर कर्ता, जो सदा द्वितीय पुरुष में रहता है, लुप्त रहता है तथा संदर्भ व क्रिया के रूप द्वारा पहचाना जा सकता है ।

ला, बता । पाठ-17 ; पृ॰ 42

तू उनकी साइकिल में पंचर कर आ । पाठ-17 ; पृ॰ 43

जो तुम्हारी रीत है वही करो । पाठ-15 ; पृ॰ 34

उन्हें दस-दस अशर्फियाँ दे देना । पाठ-14 ; पृ॰ 30

अब हमसे पालिश की शीशी मँगाकर देखिएगा । पाठ-17 ; पृ॰ 40

संकेत सूची

इस शब्दावली में निम्नलिखित संकेत चिह्नों का प्रयोग किया गया है :—

(पु०)	=	पुल्लिग
(स्त्री०)	=	स्त्रीलिंग
(वि०)	=	विशेषण
(क्रि०वि०)	=	क्रिया विशेषण
(स०क्रि०)	=	सकर्मक क्रिया
(अ०क्रि०)	=	अकर्मक क्रिया
(प्रे०क्रि०)	=	प्रेरणार्थक क्रिया

प्रत्येक शब्द के बाद दिए हुए अंकों में से पहला अंक पाठ तथा दूसरा अंक पृष्ठ का द्योतन करता है, जैसे 5-8=पाठ 5 ; पृष्ठ 8 ।

अंधकार (पु०)	7-12	अंधेरा
अंगीठी (स्त्री०)	17-41	आग रखने के लोहे के बर्तन से बनी हुई वस्तु
अक्सर (क्रि०वि०)	14-28	प्रायः
अग्नि-संस्कार (पु०)	3- 4	शव को जलाना
अग्रणी (वि०)	16-37	प्रमुख

अग्रसर (क्रि०वि०)	8-15	आगे जाना
अंकुश (पु०)	11-23	रोक, नियंत्रण
अचकन (पु०)	15-32	लंबा कलीदार कोट
अचानक (क्रि०वि०)	14-28	एकाएक
अजब (वि०)	12-24	अद्‌भुत
अंडी रेशम (अंडी-एरंड का पेड़)	8-16	एरंड से जो रेशम बनता है।
अतिरिक्त (क्रि०वि०)	8-16	(के) अलावा
अत्यधिक (वि०)	10-20	बहुत ज़्यादा
अत्याचारी (वि०)	9-19	अत्याचार करने वाला
अधिक (वि०)	13-27	ज़्यादा
अधिकार (पु०)	1- 1	हक़
अधिकांश (वि०)	11-23	ज़्यादातर
अनमने (वि०)	3- 4	उदास
अनुपम (वि०)	8-17	बे-जोड़
अनुभव (पु०)	8-15	प्रत्यक्ष ज्ञान
अनुसंधान (पु०)	16-37	खोज़
अनेक (वि०)	5- 9	बहुत
अनोखी (वि०)	12-24	अद्‌भुत
अंतरिक्ष (पु०)	16-37	आकाश
अंतर्गत (क्रि०वि०)	8-15	(के) भीतर
अंतिम (वि०)	18-44	आखिरी

अन्वेषण (पु०)	8-10	खोज
अपनाना (अ०क्रि०)	11-22	अपना बना लेना
अपराधी (पु०)	7-13	दोषी
अपार (वि०)	4- 7	असंख्य
अबीर (पु०)	9-18	गुलाल, लाल रंग का चूर्ण जिसे हिंदू होली में एक दूसरे को लगाते हैं।
अभागिन (स्त्री०)	7-12	अभागिनी
अमुक (वि०)	15-34	कोई खास (आदमी या चीच)
अर्थी (स्त्री०)	3- 4	शव
अवधि (स्त्री०)	8-15	नियत काल
अवसर (पु०)	9-18	मौका
अवाक् (क्रि० वि०)	2- 3	स्तब्ध
अविश्वास (पु०)	11-23	शंका
अव्वल दर्जा (पु०)	10-21	प्रथम श्रेणी
(अव्वल वि०)=प्रथम ; दर्जा (पु०)=श्रेणी)		
अशरफ़ी (स्त्री०)	14-28	सोने का सिक्का
असावधानी (स्त्री०)	2- 2	लापरवाही
आँधी (स्त्री०)	4- 6	भारी हलचल
आकृष्ट (क्रि०वि०)	8-16	खींचना (अपनी ओर)
आखिर (क्रि०वि०)	10-21	अंत में
आत्म निर्भरता (स्त्री०)	8-17	अपना ही भरोसा
आत्म निर्वासन (पु०)	8-15	खुद को अलग कर लेना

आदर पूर्वक (पु०)	5- 8	इज़्ज़त के साथ
आदेश (पु०)	11-23	आशा
आधुनिकता (स्त्री०)	8-15	नवीनता, नयापन
आबादी (स्त्री०)	13-26	जनसंख्या
आर्थिक (वि०)	8-15	धन से संबंधित
आलीशान (वि०)	14-30	शानदार
आवभगत (स्त्री०)	15-33	खातिर, सम्मान
आवश्यकता (स्त्री०)	5- 9	ज़रूरत
आशा (स्त्री०)	12-24	उम्मीद
आशातीत (वि०)	8-15	उम्मीद से अधिक
आश्चर्य चकित (क्रि०वि०)	15-34	अचरज से भरा
आसपास (क्रि०वि०)	13-26	अगल-बगल
आस्तीन (स्त्री०)	17-42	सिले कपड़े का बांह पर का भाग
इकाइयाँ (स्त्री०)	16-37	टुकड़े
इच्छा (स्त्री०)	3- 4	चाह
इज़्ज़त (स्त्री०)	15-35	सम्मान
इंतजाम (पु०)	14-28	व्यवस्था
इंतजार (पु०)	7-12	प्रतीक्षा
इंसानियत (स्त्री०)	17-40	मानवता
इशारा (पु०)	14-30	संकेत
ईद (स्त्री०)	7-12	मुसलमानों का त्योहार
ईदगाह (स्त्री०)	7-12	ईद के दिन मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज़ पढ़ने की जगह

ईमानदारी (स्त्री०)	11-22	सच्चाई
उगाना (स०क्रि०)	8-16	पैदा करना
उजाला (पु०)	17-41	प्रकाश
रेवड़ियाँ उड़ाना (स०क्रि०)	17-42	रेवड़ियाँ खाना
उतरना (अ०क्रि०)	15-33	ऊपर से या किसी सवारी से नीचे आना
उतार-चढ़ाव (पु०)	13-26	हानि-लाभ
उत्तरदायित्व (पु०)	11-23	ज़िम्मेदारी
उत्तरदायी (पु०)	11-23	ज़िम्मेदार
उत्साह (पु०)	6-11	उल्लास
उत्साहपूर्वक (वि०)	8-15	उल्लास के साथ
उन्नति (स्त्री०)	8-15	तरक्की
उदास (क्रि०वि०)	3- 4	दु:खी
उदासीनता (स्त्री०)	5- 8	तटस्थता
उद्देश्य (पु०)	5- 9	अभिप्राय
उद्योग (पु०)	8-16	कारख़ाना
उपजाऊ (वि०)	13-26	जिसमें अधिक उपज उगाई जा सके, उर्वर
उपद्रव मचाना (स०क्रि०)	3- 4	शोर मचाना
उमंग (स्त्री०)	6-10	उल्लास
उर (पु०)	6-11	दिल
उलटना (अ०क्रि०)	4- 6	पलटना
उलट-पुलट (स्त्री०)	13-26	अस्त-व्यस्त
उषा (स्त्री०)	6-10	बहुत सबेरा, भोर

एकांत-प्रिय (पु०)	3- 4	अकेले में रहने की इच्छा रखने वाला
एहसान (पु०)	17-41	उपकार
ओढ़ना (स०क्रि०)	3- 4	किसी कपड़े आदि से बदन को ढकना
औद्योगिक (वि०)	8-16	उद्योग से संबंधित
कक्ष (पु०)	16-38	कमरा
कठिनाई (स्त्री०)	3- 4	दिक्क़त, झंझट
कठोर (वि०)	16-37	कड़ा
कड़कती (वि०)	14-28	बहुत कड़ी और डरावनी
कड़ाके (वि०)	17-39	ज़ोर का
कंठ (पु०)	6-10	गला
कतार (स्त्री०)	7-12	पंक्ति
कद (पु०)	13-26	शरीर की ऊँचाई, लंबाई
कदम (ठोस) (पु०)	16-38	कार्य विशेष के लिए किया गया निश्चित यत्न
कदर (क्रि०वि०)	10-29	तरह
कन (पु०)	1- 1	मिट्टी का बहुत महीन टुकड़ा
कनटोप (पु०)	17-39	वह टोपी जिससे कान ढके रहें
कफ़न-दफ़न (पु०)	17-40	शव पर लपेटा जाने वाला कपड़ा या अंत्यक्रिया का प्रबंध करना
कमबख्त (पु०)	17-40	अभागा
कमाना (स०क्रि०)	4- 7	पैसा पैदा करना
कमीना (पु०)	17-41	नीच
कर्तव्य (पु०)	5- 8	फ़र्ज़

कल्पनाएँ (स्त्री०)	6-10	कोई नई बातें सोचना
कस्बा (पु०)	8-16	छोटा शहर
कहलाना (स०क्रि०)	2- 3	दूसरे के द्वारा किसी से कुछ कहना
कानून (पु०)	13-26	राजनियम
कामकाज (पु०)	15-32	काम धंधा
कार्य कुशल (वि०)	11-22	काम में होशियार
कार्य-संचालन (पु०)	11-23	कार्य को चलाना
कार्यान्वित करना (क्रि०वि०)	8-15	किसी चीज को अमल में लाना
किवाड़ (पु०)	17-39	लकड़ी आदि का पल्ला जिससे दरवाजा बंद किया जाता है ।
किस्म (स्त्री०)	8-16	तरह
किस्सा (पु०)	17-41	कहानी
कीचड़-गोबर (पु०)	9-18	गंदगी
की बजाय (क्रि०वि०)	15-35	के स्थान पर
कील (स्त्री०)	10-21	काँटा
कुम्हार (पु०)	15-34	मिट्टी का बर्तन बनाने वाला
कुहराम (पु०)	3- 4	रोना-पीटना
कृषि (स्त्री०)	8-15	खेती
केंद्र शासित (वि०)	13-26	केंद्र सरकार द्वारा जिसका प्रशासन चलता है ।
केवल (क्रि०वि०)	7-12	सिर्फ, मात्र
कोठरी (स्त्री०)	2- 2	छोटा कमरा
कोतवाली (स्त्री०)	14-31	नगर का केंद्रीय थाना

कोशिश (स्त्री०)	5- 8	प्रयत्न करना
क्रोध (पु०)	2- 3	गुस्सा
क्षेत्र (पु०)	12-26	स्थान
खटखटाना (स०क्रि०)	17-40	किसी चीज को पीट कर खट-खट की आवाज़ निकालना।
ख़बर (स्त्री०)	14-29	समाचार
खर्राटा (पु०)	17-39	सोते में नाक से निकलने वाली आवाज़
खलिहान (पु०)	15-32	वह स्थान जहाँ फ़सल काट कर रखी जाए
ख़ातिर (स्त्री०)	15-35	सत्कार
खिंच जाना (अ०क्रि०)	10-21	खींचा जाना
खिसकना (अ०क्रि०)	15-35	हटना
खींचना (स०क्रि)	11-23	आकृष्ट करना
खूँटी (स्त्री०)	3- 5	छोटी मेख, दीवाल में गड़ा हुआ लोहे या लकड़ी का टुकड़ा जिस पर कपड़ा टाँगा जाए।
खैराती (वि०) (अस्पताल)	17-40	वह दवाखाना जहाँ दवा मुफ़्त में दी जाए
ख्याल (पु०)	7-13	याद
गगन (पु०)	6-10	आकाश
गठन (पु०)	11-23	बनावट
गड़ना (अ०क्रि०)	10-21	घुसना, गाड़ा जाना
गणतंत्रात्मक (वि०)	8-15	शासन का एक प्रकार
गतवर्ष (पु०)	7-12	पछले साल

गत (क्रि०)=गया हुआ ; वर्ष (पु०)=साल

गतिविधि (स्त्री०)	16-38	चाल, क्रिया-कलाप
गंभीर (वि०)	11-23	गहरा,पेचीदा
ग़लती (स्त्री०)	2- 3	त्रुटि
गहरी (वि०)	13-26	जिसकी सतह आस-पास के स्थान से नीची हो।
गन्ना (पु०)	९-16	ईख
गिरी हुई बात (स्त्री०)	17-40	घटिया बात
गिलट (स्त्री०)	7-13	एक सस्ती धातु
गुज़र जाना (पु०)	17-40	मर जाना
गुज़रिया (स्त्री०)	7-13	गूजरी, गूज़र जाति की स्त्री
गुलाब जामुन (पु०)	7-13	एक प्रसिद्ध मिठाई
गुलाल (पु०)	9-18	अबीर
गूँज (स्त्री०)	17-39	प्रतिध्वनि
गृह-कलह (पु०)	2- 3	घर में होने वाली लड़ाई
(गृह=घर ; कलह=लड़ाई)		
गोदी (स्त्री०)	1- 1	गोद
गौर (से) (पु०)	17-39	ध्यान से
गौरवशाली (वि०)	8-15	महत्वपूर्ण
ग्रंथ (पु०)	9-19	किताब
ग्रहण करना (पु०)	8-17	धारण करना
ग्राम पंचायत (स्त्री०)	13-27	गाँव के झगड़े सुनने और सफ़ाई आदि का प्रबंध करने वाला मंडल।
घबड़ाना (अ०क्रि०)	4- 6	डर जाना

घर भर (पु०)	15-32	पूरे घर में
घाव (पु०)	3- 4	चोट
घाटी (स्त्री०)	13-26	दो पहाड़ों के बीच की नीची ज़मीन
घास-फूस (पु०)	9-19	घास आदि
घुसना (अ०क्रि०)	14-29	भीतर जाना
चक्कर (पु०)	7-12	गोल-गोल घूमना
चबूतरा (पु०)	2- 3	मिट्टी आदि से बना हुआ ऊँचा स्थान (बैठने के लिए)।
चमचमाना (अ०क्रि०)	12-25	चमकना
चवन्नी (स्त्री०)	3-5	चार आने का सिक्का, पच्चीस पैसा
चादर (स्त्री०)	15-34	बिस्तर के ऊपर बिछाने वाला कपड़ा
चारपाई (स्त्री०)	4- 7	खाट
चिता (स्त्री०)	9-19	शव को जलाने के लिए रखी हुई लकड़ियाँ
चिमटा (पु०)	7-13	जलता कोयला आदि पकड़ने की लोहे की वस्तु
चिलम (स्त्री०)	17-41	मिट्टी या धातु का कटोरी नुमा पात्र जिस पर तंबाकू आदि रखकर पीते हैं।
चीखना (अ०क्रि०)	14-28	चिल्लाना
चुटिया (स्त्री०)	10-21	शिखा, चोटी
चुनाव (पु०)	11-23	चुनने की क्रिया
चुपचाप (क्रि०वि०)	18-44	शांतिपूर्वक
चूर-चूर होना (पु०)	7-13	बारीक टुकड़े होना
चूल्हा (पु०)	17-41	मिट्टी आदि से बनी अँगीठी

चोटी (स्त्री०)	13-26	पहाड़ का सबसे ऊँचा भाग
छड़ी (स्त्री०)	15-34	बाँस, बेंत आदि का बना हुआ छोटा डंडा
छाया (अ०क्रि०)	6-10	फैला हुआ
छूना (स०क्रि०)	14-30	स्पर्श करना
जड़ना (स०क्रि०)	17-41	लगाना
जनतंत्र (पु०)	8-17	प्रजातंत्र
जनतंत्रात्मक (वि०)	8-17	जनतंत्र से संबंधित
जनतांत्रिक (वि०)	11-22	,, ,,
जमाना (पु०)	14-30	समय
ज़र्रा (वि०)	17-41	कण
जला डालना (स०क्रि०)	9-19	आग लगाना
जाड़ा (पु०)	17-39	सर्दी
जायदाद (स्त्री०)	15-32	संपत्ति
जीवन दृष्टि (स्त्री०)	5- 8	जीवन के प्रति भावना
जुटाना (स०क्रि०)	9-18	इकट्ठा करना
जुलूस (पु०)	9-19	बहुत से लोगों का इकट्ठा होकर समा-रोह के साथ जाना ।
जोरदार (वि०)	17-39	जोर के साथ
ज्यों का त्यों (क्रि०वि०)	15-36	जैसे था वैसे
झटपट (क्रि०वि०)	15-35	तुरंत
झपकी (स्त्री०)	10-21	थोड़ी देर की नींद
झुलाना (स०क्रि०)	12-25	हिलाना

टंगना (अ०क्रि०)	3- 5	लटकना
टटोलना (स०क्रि०)	3- 5	उँगलियों से छूकर पता लगाना
टहलना (अ०क्रि०)	17-41	घूमना
ठप्पे (पु०)	9-19	किसी चीज़ की छाप
ठहरना (अ०क्रि०)	14-31	रुकना
ठेला (पु०)	9-18	हाथ गाड़ी
ठोस (वि०)	16-38	मजबूत
डगमगाना (अ०क्रि०)	4- 6	इधर-उधर हिलना
डरावना (वि०)	14-28	जिसे देखकर डर लगे
डाँटना (स०क्रि०)	2- 3	भय दिखाने के लिए जोर से बोलना
डोर (स्त्री०)	3- 5	धागा
ढंग (पु०)	2- 3	रीति
तकिया (पु०)	2- 2	रुई से भरी थैली जैसी चीज़ जो लेटते समय सिर के नीचे रखी जाती है ।
तख्त (पु०)	17-39	लकड़ी की बड़ी चौकी
तट (पु०)	9-18	किनारा
तड़के (पु०)	15-32	बहुत सबेरे
तत्परता (स्त्री०)	13-27	पूरी तैयारी
तत्व (पु०)	5-8	सार
तन (पु०)	6-10	शरीर
तनना (अ०क्रि०)	15-35	खिंचना, रुष्ट होना
तपाक से (पु०)	15-33	उत्साह से

तमाचा (पु०)	3- 5	थप्पड़
तंबाकू (पु०)	17-41	एक नशीली चीज
तरंग (स्त्री०)	6-10	मौज, उत्साह
तलाश (स्त्री०)	10-21	खोज
तवा (पु०)	7-13	रोटी बनाने की एक गोल लोहे की वस्तु
तहजीब (स्त्री०)	17-40	ढंग, सभ्यता
ताक़ (पु०)	17-42	कोई सामान रखने के लिए दीवार में बना हुआ स्थान
ताजा (वि०)	14-29	नया, जो बासी न हो
ताज्जुब (पु०)	14-31	आश्चर्य
तारीफ़ (स्त्री०)	15-35	प्रशंसा
ताव (पु०)	15-32	अहंकार युक्त रोष या आवेश
तूफान मचाना (अ०क्रि०)	2- 2	हल्ला मच जाना
तैनात (पु०)	15-35	नियुक्त किया हुआ
तैश (पु०)	2- 3	आवेश पूर्ण क्रोध
तोंद (स्त्री०)	7-13	पेट का आगे की ओर बढ़ा हुआ भाग
तोप (स्त्री०)	9-18	युद्ध में प्रयोग करने वाला एक अस्त्र
त्याग (पु०)	7-14	किसी वस्तु या व्यक्ति को छोड़ देना
दरी (स्त्री०)	2- 2	मोटे सूतों का बुना हुआ एक बिछावन
दवाखाना (पु०)	17-40	अस्पताल
दस्तक (स्त्री०)	17-39	हाथ से खटकाना
दहाड़ (पु०)	15-35	शेर का घोर गर्जन

दाखिल होना (क्रि०वि०)	14-28	प्रवेश करना
दाना (पु०)	7-12	अनाज का एक कण
दालान (पु०)	17-39	बरामदा
दिलासा (पु०)	14-28	धीरज
(की) दिशा (में) (स्त्री०)	16-38	(की) ओर
दुआएँ (स्त्री०)	14-30	प्रार्थना, आशीष, आशीर्वाद
दुनियाँ (स्त्री०)	10-20	संसार
दुर्भाग्य (पु०)	13-26	बदकिस्मती
दूरबीन (स्त्री०)	14-29	एक यंत्र जिसके द्वारा दूर की वस्तुएँ देखी जाती हैं।
दृष्टिकोण (पु०)	5- 9	सोचने की पद्धति
धंधा (पु०)	4- 9	पेशा
धंसना (अ०क्रि०)	14-31	भीतर घुस जाना
धक्कम धक्का (पु०)	9-19	भारी भीड़ में मनुष्यों का परस्पर बहुत अधिक धक्का देना।
धड़ा-धड़ (क्रि०वि०)	17-39	लगातार
धमकाना (स०क्रि०)	3- 5	डराना
धमकी (स्त्री०)	17-41	धमकाने की क्रिया
धरा (स्त्री०)	6-10	धरती
धर्मावलंबी (पु०)	5- 8	धर्म को मानने वाला
धावा (पु०)	7-12	हमला
धूल (स्त्री०)	18-44	मिट्टी

धोबिन (स्त्री०)	7-13	कपड़े धोने वाली, धोबी का स्त्रीलिंग
नकली (वि०)	9-19	जो असली न हो, बनावटी
नज़दीक (क्रि०वि०)	14-29	पास
नज़र (स्त्री०)	3- 5	दृष्टि
नमाज़ (स्त्री०)	7-12	मुसलमानों की उपासना पद्धति
नसीब (पु०)	14-28	किस्मत
नस्ल (स्त्री०)	8-16	जाति
नाई (पु०)	15-34	हजामत बनाने वाला
नाती (पु०)	4- 6	लड़की या लड़के का लड़का
निकट (क्रि०वि०)	15-33	पास
निचले भाग (पु०)	10-21	नीचे का हिस्सा
निडर (वि०)	12-24	साहसी, न डरने वाला
निभाना (स०क्रि०)	10-20	निर्वाह करना
निराशा (स्त्री०)	7-12	आशा का अभाव
निर्जन (वि०)	12-25	सुनसान
निर्झर (पु०)	1- 1	झरना
निर्णय (पु०)	11-23	किसी विषय पर अच्छी तरह विचार करके एक को उचित ठहराना।
निर्धारित (वि०)	11-23	जिसका निर्धारण किया गया हो
निर्भीक (वि०)	11-22	निडर
निर्मल (वि०)	5- 8	स्वच्छ
निर्माण (पु०)	13-27	बनाने या रखने की क्रिया

निर्वाचन (पु०)	11-22	चुनाव
निर्वाचित (वि०)	11-23	जिसका निर्वाचन किया गया हो
निशा (स्त्री०)	5-10	रात
नौबत (स्त्री०)	15-35	स्थिति
पक्की (वि०)	3- 5	कच्चा का उलटा, निश्चित
पग (पु०)	6-11	पैर
पगड़ी (स्त्री०)	14-28	सिर पर लपेटी जाने वाली कपड़े की पट्टी
पंछी (पु०)	1- 1	पक्षी
पटकना (स०क्रि०)	17-41	किसी व्यक्ति या वस्तु को उठाकर गिराना
पत्तल (स्त्री०)	15-34	थाली की जगह उपयोग में लाने वाला पत्तों का पात्र।
पत्तियाँ (स्त्री०)	18-44	पत्ते
पद्धति (स्त्री०)	8-16	प्रणाली
पथ (पु०)	6-10	रास्ता
पंथ (पु०)	6-11	रास्ता
पर (पु०)	7-12	पंख
परामर्श (पु०)	11-23	सलाह
परिक्रमा (स्त्री०)	16-37	किसी वस्तु के चारों ओर घूमना
परिणाम (पु०)	16-37	नतीजा, फल
परेशानियाँ (स्त्री०)	13-27	चिंताएँ
पर्व (पु०)	9-18	त्योहार
पलटा खाना (अ०क्रि०)	13-27	एक दम बदलना

पवन (पु०)	6-10	हवा
पवित्र (वि०)	5- 8	स्वच्छ, निर्मल
पश्चात् (क्रि०वि०)	8-15	बाद
पसीना (पु०)	14-28	वह पानी जो श्रम करने से शरीर से निकलता है।
पहरेदार (पु०)	14-29	पहरा देने वाला
पाँव (पु०)	7-12	पैर
पाजी (पु०)	17-39	बदमाश, दुष्ट
पिचकारियाँ (स्त्री०)	9-18	एक प्रसिद्ध पीला यंत्र जिससे पानी खींचकर बाहर फेंकते हैं।
पिलना (स०क्रि०)	15-35	झपटना
पीटना (स०क्रि०)	17-39	हाथ या डंडे से मारना
पुरखों (पु०)	15-32	दादा, परदादा आदि पूर्वज
पुतला (पु०)	9-19	लकड़ी, घास-फूस आदि से बनाया हुआ किसी का प्रतिरूप
पृथ्वी लोक (पु०)	14-28	भू लोक
पेरना (स०क्रि०)	8-16	किसी घूमने वाले यंत्र से रस निकालना
पैदल (क्रि०वि०)	14-30	पैरों से चलना
पैदावार (स्त्री०)	13-26	खेती की उपज
पोखर (पु०)	12-25	तालाब
पोता (पु०)	4- 6	बेटे का बेटा
प्रचलित (वि०)	8-15	जो प्रयोग में हो

प्रजातंत्र (पु०)	11-22	प्रजा के प्रतिनिधियों द्‌वारा परिचालित शासन व्यवस्था
प्रणाली (स्त्री०)	11-22	पद्‌धति
प्रतिनिधि पु०)	11-22	वह व्यक्ति जो किसी के स्थान पर उसका कार्य करे।
प्रतिमा (स्त्री०)	9-19	मिट्‌टी आदि की बनी हुई मूर्ति
प्रदान (पु०)	8-17	देना
प्रभात (पु०)	7-12	प्रातःकाल
प्रभावित (वि०) (क्रि०वि०)	4- 7	जिस पर असर पड़ा हो
प्रमाण (पु०)	13-27	सबूत
प्रमुख (वि०)	8-16	मुख्य
प्रयत्न (पु०)	5- 8	प्रयास
प्रयास (पु०)	16-37	कोशिश
प्रसन्न (वि०)	7-12	खुश
प्राकृतिक (वि०)	13-26	प्रकृति संबंधी
प्रातः (पु०)	6-10	सबेरा
प्रीति (स्त्री०)	1- 1	प्रेम
प्रौढ़ (वि०)	8-16	वयस्क
फटकारना (स०क्रि०)	2- 3	किसी के तिरस्कार करने के लिए
फटी (वि०)	2- 2	जो फट गया हो
गौर फरमाना (स०क्रि०)	17-40	ध्यान देना
फाटक (पु०)	14-29	बड़ा दरवाजा (गेट)

फाड़ा-फूड़ा (स०क्रि०)	2- 3	टुकड़े करना आदि
फायदा (पु०)	7-13	लाभ
फिकर (स्त्री०)	12-24	चिंता
फूफा (पु०)	15-34	पिता की बहिन का पति
फैसला (पु०)	11-22	निर्णय
फौरन (क्रि०वि०)	14-31	तुरंत
बंटवारा (पु०)	13-27	बांटने का काम
बख्श देना (स्त्री०)	17-41	दे देना
बड़बड़ाना (अ०क्रि०)	14-31	बकबक करना
आगे बढ़ना (अ०क्रि०)	9-19	आगे जाना
बढ़िया (वि०)	15-34	अच्छा
बदतमीजी (स्त्री०)	14-31	अशिष्टता
बदमाश (पु०)	17-42	दुष्ट
बनवाना (प्रे०क्रि०)	14-29	बनाने का काम करना
बंधनहीन (वि०)	1- 1	आजाद
बरस (पु०)	14-29	साल
बरसना (अ०क्रि०)	17-42	वर्षा होना
बराती (पु०)	15-35	बारात में जाने वाले
बरिच्छा (स्त्री०)	15-34	फलदान
बल्कि (क्रि०वि०)	5- 8	किंतु
वसंती हवा (स्त्री०)	12-24	वसंत में चलने वाली हवा
बहुमत (पु०)	11-23	बहुसंख्यक लोगों का मत

बाधा (स्त्री०)	1- 1	अड़चन, रुकावट
बाधाहीन (वि०)	1- 1	बिना किसी रुकावट के
बाप-दादा (पु०)	4- 6	पूर्वज
बारात (स्त्री०)	15-34	दूल्हे की सवारी का जुलूस
बावर्ची (पु०)	17-41	खाना पकाने वाला
बावली (स्त्री०)	12-24	चौड़ा कुआँ जिसमें नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हों।
बिताना (स०क्रि०)	10-20	गुज़ारना
बिरादरी (स्त्री०)	7-13	जाति
बिल्कुल (क्रि०वि०)	9-18	एकदम
बुझाना (स०क्रि०)	17-41	आग या जलती हुई चीज़ को ठंडा करना
बूचड़खाना (पु०)	8-16	कसाईखाना
बेहतर (वि०)	14-29	अच्छा
बेहद (वि०)	10-20	बहुत अधिक
बौछार (स्त्री०)	15-35	पानी की तेज बूंदें
ब्याह (पु०)	15-32	शादी
भड़कना (अ०क्रि०)	15-35	नाराज होना, चमकना, बिदकना
भली-भाँति (क्रि०वि०)	16-37	अच्छी तरह
भले (वि०)	17-39	अच्छे
भवन (पु०)	11-22	बड़ा घर
भाव (पु०)	5- 8	मन का विकार
भावनाएँ (स्त्री०)	6-10	विचार

भिखमँगे (पु०)	14-30	भीख माँगने वाले
भिजवाना (प्रे० क्रि०)	17-43	भेजने का काम करना
भिखारी (पु०)	14-30	भीख माँगने वाला
भिश्ती (पु०)	7-13	मशक से पानी ढोने वाला
भीड़ (स्त्री०)	9-19	समूह
भूतपूर्व (वि०)	10-20	जो पहले थे
भ्रातृ-भाव (पु०)	5- 9	भाईचारे का भाव
मँगवाना (प्रे०क्रि०)	17-39	दूसरे से कोई चीज माँगना
(उपद्रव) मचाना (स०क्रि०)	3- 4	करना
मजबूत (वि०)	10-21	मोटा, ताकतवर
मतदान (पु०)	11-22	चुनाव आदि में विधिवत मत देना
मदद (स्त्री०)	14-31	सहायता
मनोहर (वि०)	7-12	मन को हरने वाला, सुन्दर
मल्लाह (पु०)	4- 6	नाव चलाने वाला माँझी
मशक (स्त्री०)	7-13	भेड़ या बकरी की खाल को सीकर पानी ढोने का बनाया हुआ थैला
मशहूर (वि०)	14-29	प्रसिद्ध
मस्त-मौला (पु०)	12-24	प्रसन्न रहने वाला
मस्ती (स्त्री०)	9-18	मस्त होने का भाव
महत्व (पु०)	16-37	अधिक आवश्यक होने का भाव
महत्वपूर्ण (वि०)	13-27	आवश्यकता बताने वाले
मांगना (स०क्रि०)	15-32	कुछ प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करना या कहना

माटी (स्त्री०)	1- 1	मिट्टी
मान्य (वि०)	11-23	मानने योग्य
मामला (पु०)	13-27	बात, काम
मारपीट (स्त्री०)	15-35	लड़ाई-झगड़ा
मिट जाना (अ०क्रि०)	5- 8	नष्ट होना
मिश्रण (पु०)	9-18	दो से अधिक चीजों को मिलाना
मिजाज (पु०)	17-41	स्वभाव
मिलन (पु०)	18-44	मिलना
मीरास (स्त्री०)	17-41	बपौती, बाप-दादा से मिली हुई संपत्ति
मुखबिर (पु०)	3- 5	खबर देने वाला
मुट्ठी (स्त्री०)	14-30	बंधी हुई हथेली
मुनादी वाला (पु०)	14-29	ढोल पीटकर किसी बात की घोषणा करने वाला।
मुसाफिर (पु०)	12-24	यात्री
मुसीबत (स्त्री०)	10-20	संकट
मुस्कराना (अ०क्रि०)	14-29	मंद-मंद हँसना
मृत्यु (स्त्री०)	4- 7	मरण
मैला (वि०)	2- 2	गंदा
मोची (वि०)	17-41	जूता बनाने वाला
मोल (पु०)	7-13	मूल्य
यातायात (पु०)	8-16	आवागमन
यात्री (पु०)	16-37	यात्रा करने वाला, मुसाफिर

योगदान (पु०)	8-17	सहयोग
योग्य (वि०)	15-32	लायक
योजना (स्त्री०)	8-15	भावी कार्य पद्धति की पूर्व कल्पना
रकम (स्त्री०)	14-31	धन
रजाई (स्त्री०)	17-39	रगीन कपड़े की रुई भरी हुई ओढ़ने की वस्तु
रमज़ान (पु०)	7-12	मुसलमानों का त्यौहार
रस्म (स्त्री०)	15-33	रिवाज
रहस्य (पु०)	3- 5	भेद
रास (स्त्री०)	15-33	लगाम
रिश्ता (पु०)	2- 2	संबंध
रीति (स्त्री०)	15-33	रिवाज
रुचि (स्त्री०)	10-20	पसंद
रेत (स्त्री०)	12-25	बालू
रेवड़ियाँ (स्त्री०)	7-13	चीनी या गुड़ की चाशनी से बना हुआ टुकड़ा जिस पर तिल जमाया हुआ होता है
रोज़गार (पु०)	4- 6	कारोबार
लक्षण (पु०)	13-26	गुण, चिह्न
ललचाना (स०क्रि०)	7-14	किसी को कोई चीज दिखाकर पाने के लिए आकुल करना।
लात (स्त्री०)	17-41	पैर
लालिमा (स्त्री०)	6-10	लाली (लाल रंग)
लिपवाना (प्रे०क्रि०)	15-34	फ़र्श पोतने का काम करना

लिहाफ़ (पु०)	17-39	मोटी रजाई
लूटपाट (स्त्री०)	13-27	ज़बर्दस्ती धन छीनना
लौटना (अ०क्रि०)	4- 7	वापस आना
वक्त (पु०)	2- 2	समय
वर्णित (वि०)	9-19	जिसका वर्णन किया हो
वर्दी (स्त्री०)	7-13	किसी विभाग के कर्मचारियों का विशेष प्रकार का वस्त्र
विकसित (वि०)	8-17	उन्नत
विकास (पु०)	8-15	फैलाव
विचित्र (वि०)	9-18	विस्मित करने वाला, अद्भुत
विदा (स्त्री०)	15-35	विदा होने की क्रिया
विपत्ति (स्त्री०)	16-38	संकट
विभिन्न (वि०)	8-15	तरह-तरह के
विलक्षण (वि०)	10-20	अलौकिक
विविध (वि०)	5- 8	अनेक
विशाल (वि०)	4- 6	बड़ा, व्यापक
विशेषज्ञ (पु०)	8-16	किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला
विश्वास (पु०)	13-27	भरोसा
व्यवस्था (स्त्री०)	8-15	प्रबंध
व्यवहार (पु०)	2- 2	आचरण
व्यसनी (पु०)	10-20	जिसे किसी वस्तु या विषय का बहुत शौक हो
व्याकुल (वि०)	3- 4	चिंतित

व्यास (पु०)	16-38	चौड़ाई, किसी वृत्त की परिधि से एक ओर से दूसरी ओर की दूरी जो केंद्र से होकर नापी जाए ।
शक्ल (स्त्री०)	9-18	रूप
शराफ़त (स्त्री०)	17-40	भलमनसाहत
शरीफ़ (वि०)	17-40	भला
शर्त (स्त्री०)	15-33	टेक
शान (स्त्री०)	15-34	गौरव
शासन (पु०)	11-22	देश का संचालन
शाही (वि०)	14-28	राजा से संबंधित
शीतल (वि०)	6-10	ठंडा
शेष (वि०)	11-23	बचा हुआ, बाकी
शौक (पु०)	10-20	चाह
श्मशान (पु०)	3- 4	वह स्थान जहाँ शव को जलाते हैं
संभालना (स०क्रि०)	3- 4	काबू में रखना
सकोरा (पु०)	15-34	कटोरी जैसा मिट्टी का बर्तन
सख्त (वि०)	17-39	कठोर
सचमुच (क्रि०वि०)	16-37	वस्तुत , वास्तव में
सच्चाई (स्त्री०)	11-22	ईमानदारी
सजाना (स०क्रि०)	9-19	व्यवस्थित करना
सत्ता (स्त्री०)	11-22	अस्तित्व
सदन (पु०)	11-23	घर

सदा (क्रि०वि०)	11-23	हमेशा
सद्‌भाव (पु०)	7-14	भले विचार
सन्नाटा (पु०)	14-28	चुप्पी
सपना (पु०)	14-28	स्वप्न
सभ्यता (स्त्री०)	13-27	शिष्टता
समता (स्त्री०)	5- 8	समानता, बराबरी
समर्थन (पु०)	11-23	पुष्टि
समस्या (स्त्री०)	8-16	जटिल प्रश्न
समाना (अ०क्रि०)	6-11	भीतर आना, अटना
समीप (क्रि०वि०)	16-37	पास
सम्मति (स्त्री०)	5- 8	राय
सम्मिलित (वि०)	16-37	साथ मिला हुआ
सरे आम (क्रि०वि०)	14-31	सबके सामने
सर्वत्र (क्रि०वि०)	6-10	सब जगह
सर्वथा (क्रि०वि०)	11-22	बिल्कुल
सर्वोपरि (क्रि०वि०)	11-22	सबसे ऊपर
सलामत (स्त्री०)	14-30	कुशल, खैर
सवारी (स्त्री०)	14-28	वाहन से यात्रा करने वाला व्यक्ति, वाहन
सहना (स०क्रि०)	10-20	बर्दाश्त करना
सहमत (वि०)	5- 8	राजी
सहयात्रा (स्त्री०)	16-37	साथ-साथ यात्रा करना
सहानुभूति (स्त्री०)	5- 8	किसी के दुःख आदि से दुःखी होना, हमदर्दी

सहानुभूतिपूर्वक	5- 8	सहानुभूति से युक्त
(के) सहारे (पु॰)	3- 5	की मदद से
सहिष्णुता (स्त्री॰)	5- 8	सहने की क्षमता
साइत (स्त्री॰)	15-34	मुहूर्त
साधना (स्त्री॰)	6-10	मनोयोग पूर्वक कार्य
सामना (पु॰)	8-15	मुकाबला
सामने (क्रि॰वि॰)	14-29	आगे, समक्ष
सामाजिक (वि॰)	8-17	समाज से संबंधित
साला (पु॰)	15-35	पत्नी का भाई
सिद्धांत (पु॰)	5- 9	नियम, उसूल
सींग (पु॰)	9-19	गाय, भैंस आदि के सिर के दोनों ओर निकली हुई नुकीली शाखाएँ
सीधे-सादे (वि॰)	13-27	सरल स्वभाव वाले
सुगंध (स्त्री॰)	9-18	खुशबू
सुगम (वि॰)	8-16	आसान
सुदृढ़ (वि॰)	8-15	मज़बूत
सुलझाना (स॰क्रि॰)	8-16	उलझन को दूर करना
सुहावना (स॰क्रि॰)	7-12	सुंदर
सूखी (वि॰)	18-44	सूखा हुआ
सूनी (वि॰)	18-44	खाली, रिक्त
सूरत (स्त्री)	7-12	रूप
सृष्टि (स्त्री॰)	12-25	निर्माण

सोतों को (पु०)	17-40	सोने वालों के
सोहन हलुवा (पु०)	7-13	मेवे, घी, चीनी आदि के मेल से बनी एक मिठाई।
सौभाग्य (पु०)	13-26	अच्छा भाग
स्तब्ध (वि०)	17-40	चुप, खामोश
स्थान (पु०)	9-19	जगह
स्थापित (वि०)	8-15	जिसकी स्थापना की गई हो
स्नेह (पु०)	7-14	प्रेम
स्मरण (पु०)	2- 2	याद
स्वतंत्र (वि०)	1- 1	आजाद
स्वयं (सर्व०)	5- 9	खुद
स्वर (पु०)	1- 1	आवाज
स्वाभिमान (पु०)	8-17	अपनी प्रतिष्ठा का अभिमान
स्वायत्तता (स्त्री०)	13-27	जो अपने ही अधीन हो
स्वावलंबन (पु०)	8-17	अपना ही भरोसा करना
स्वीकृति (स्त्री०)	11-23	सम्मति
हट्टे-कट्टे (वि०)	13-26	मोटा-तगड़ा
हतबुद्धि (वि०)	3- 5	हक़्का-बक्का
हरा (वि०)	3- 4	ताजा रहना
हाँफना (अ०क्रि०)	14-28	शारीरिक श्रम से सांस की गति का तीव्र होना
हाज़िर (वि०)	15-34	उपस्थिति
हाल (पु०)	14-29	स्थिति

हालत (स्त्री०)	16-35	दशा
हास (पु०)	6-10	हँसी
हिलाना (स०क्रि०)	14-29	अस्थिर करना
हिस्सा (पु०)	13-27	भाग
हुड़दंग (पु०)	9-18	उपद्रव
हृदय (पु०)	11-21	दिल
होशियार (वि०)	15-36	बुद्धिमान
हौज़ (पु०)	9-18	कुंड

मुहावरे

अंडे देना	17-40	वृद्धि करना, घर में पड़ा रहना
आँखें खिलना	14-30	खुश होना
आँखें फटी रहना	14-31	आश्चर्य में आना
आँखें भर आना	14-29	आँखों में आँसू आना
आँखों में आँखें डालना	14-29	बहुत पास आकर, आँख मिलाकर
एक न मानना	14-31	कोई बात न मानना
कड़ाके का जाड़ा	17-39	ज़ोरदार या बहुत तेज ठंड
कमाल कर देना	15-35	अद्भुत कुशलता या योग्यता का परिचय देना
कसर नहीं रखना	15-35	(किसी बात के करने में) कमी नहीं रखना
काम बनना	14-28	प्रयोजन निकलना
किताबी कीड़ा	10-21	वह आदमी जो हमेशा पुस्तक पढ़ता रहता है

मजा किरकिरा करना	15 35	आंनद में विघ्न पड़ना
(का) कुछ न चलना	14·28	कुछ न कर पाना
खर्च उठाना	15-21	खर्च का भार सहन करना
गुज़र जाना	17-40	मर जाना
(कान पर) जूँ नहीं रेंगती	17-41	स्थिति पर ध्यान न देना
तांता लगा रहना	10-20	एक के बाद एक का इस तरह आना कि पंक्ति भंग न हो।
दम लेना	17-39	ठहरना
दामन फैलाना	7-14	प्रार्थना करना, माँगना
देखते रह जाना	15-32	चकित हो जाना
धक्का लगना	14-29	अपमान महसूस करना
नज़र बचाकर	15-35	लोगों से बचकर
नसीब हो पाना	14-28	प्राप्त होना
(पैरों में) पर लगना	7-12	तेज दौड़ना
पलटा खाना	13-27	बदल जाना
पारा चढ़ना	14-31	क्रोध आना
पिल पड़ना	15-35	किसी ओर तेजी से झपटना, टूट पड़ना
पीछे लगे रहना (किताबों के)	10-20	पढ़ते रहना
पीछे हटना	10-21	किसी काम से अलग होना
पुतला तक नहीं	14-29	एक भी नहीं
बस की बात	17-40	कर सकने का काम

बात पक्की करना	15-33	मामला पूरी तरह तै करना
बाल बाँका न होना	14-28	कुछ नहीं बिगड़ना
बूते से बाहर	10-21	शक्ति के बाहर
मुंह दिखाना	15-35	सामने जाना
मुंह फुलाये बैठना	15-32	चेहरे से नाराजी दिखाना
मूँछों पर ताव देना	15-32	वीरता दिखाना
मोल लेना	7-13	खरीद लेना
लंबी तानकर सोना	15-32	निश्चिंत होकर सोना
साँप सूंघ जाना	17-41	निर्जीव सा हो जाना, बेसुध होना
हरा बना रहना	3- 4	ताजा रहना
हार मानना	10-21	पराजय स्वीकार करना
हिला कर रखना	13-26	झकझोर देना
होश उड़ना	14-31	सुध-बुध भूल जाना